



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० १—नई दिल्ली, बुधवार, जनवरी २७, १९६५/माघ ७, १८८६

MINISTRY OF LAW
(Legislative Department)

New Delhi, 27th January, 1965/Magh, 7, 1886 (Saka)

The following translation in Hindi of the Indian Evidence Act, 1872 is hereby published under the authority of the President and shall be deemed to be the authoritative text thereof in Hindi under clause (a) of sub-section (1) of Section 5 of the Official Languages Act, 1963 (19 of 1963.)

भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 Art.

(1872 का अधिनियम १) [१५ मार्च, १८७२]

यह साक्ष्य की विधि का समेकन, परिभाषा और संशोधन करना समीचीन है, अतः एतद्वारा यह निम्नलिखित रूप में अधिनियमित किया जाता है—

भाग १

शब्दों की सुसंगति

अध्याय १

प्रारंभिक

४४ तथा १. यह अधिनियम भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 कहा जा सकेगा। संक्षिप्त नाम,
४५ विकटो., इसका विस्तार जम्मू-कश्मीर राज्य के सिवाय सम्पूर्ण भारत पर है और विस्तार और प्रारम्भ।

४५ विकटो., यह किसी न्यायालय में या के समक्ष की जिसके अन्तर्गत आर्मी एक्ट, नेवल अ. ५८. डिमिलिन एक्ट, या इण्डियन नेवी (डिमिलिन) एक्ट, या एआर फोर्स २९ तथा एक्ट के अधीन संयोजित सेना न्यायालयों से भिन्न सेना न्यायालय आते हैं, ३० विकटो., समस्त न्यायिक कार्यवाहियों को लागू है, किन्तु न तो किसी न्यायालय या अ. १०९. आफिसर के समक्ष पेश किए शपथ-पत्रों को लागू है और न किसी मध्यस्थ १९३४ का के समक्ष की कार्यवाहियों को,

३४. ७. जा. ५, और यह 1872 के सेप्टेम्बर के प्रथम दिन को प्रवृत्त होगा।

अ. ५१. २. * * * * * निर्वचन-खण्ड ।
३. इस अधिनियम में निम्नलिखित शब्दों और पदों का निम्नलिखित भावों में प्रयोग किया गया है, जब तक कि संदर्भ से तत्प्रतिकूल आशय प्रसीत न हो —

“न्यायालय” शब्द के अन्तर्गत गभी न्यायाधीश और मजिस्ट्रेट तथा मध्यस्थों के सिवाय साक्ष्य लेने के लिए वैध रूप से प्राधिकृत सभी व्यक्ति आते हैं।

“न्यायालय”

“तथा” से अभिप्रेत हैं और उसके अन्तर्गत आती हैं —

“तथा”

(१) ऐसी कोई वस्तु, वस्तुओं की अवस्था, या वस्तुओं का सम्बन्ध जो इन्द्रियों द्वारा बोधगम्य हो,

(2) ^२कोई मानसिक दशा, जिसका भान किसी व्यवित्र को हो।

बृष्टांत

(क) ^२यह कि अमुक स्थान में अमुक ऋम से अमुक पदार्थ व्यवस्थित हैं, एक तथ्य है।

(ख) यह कि किसी मनुष्य ने कुछ सुना या देखा, एक तथ्य है।

(ग) यह कि किसी मनुष्य ने अमुक शब्द कहे, एक तथ्य है।

(घ) यह कि कोई मनुष्य अमुक राय रखता है, अमुक आशय रखता है, सद्भावपूर्वक या कपटपूर्वक कार्य करता है, या किसी विशिष्ट शब्द को विशिष्ट भाव में प्रयोग करता है, या उसे किसी विशिष्ट संवेदन का भान है या किसी विनिर्दिष्ट समय में था, एक तथ्य है।

(ङ) यह कि किसी मनुष्य की अमुक रुचाति है, एक तथ्य है।

“सुसंगत”

एक तथ्य दूसरे तथ्य से सुसंगत कहा जाता है जब कि तथ्यों की सुसंगति से सम्बन्धित इस अधिनियम के उपबन्धों में निर्दिष्ट प्रकारों में से किसी भी प्रकार से वह तथ्य उस दूसरे तथ्य से संसकृत हो।

“विवाद्यक तथ्य”

“विवाद्यक तथ्य” से ^२अभिप्रेत है और उसके अन्तर्गत आता है—

ऐसा कोई भी तथ्य जिस अकेले ही से, या अन्य तथ्यों के संसंग में किसी ऐसे अधिकार, वायित्व या नियोग्यता के, जिसका किसी वाद या कार्यवाही म प्राप्त्यान या प्रत्याख्यान किया गया है, अस्तित्व, अनस्तित्व, प्रकृति या विस्तार की उपपत्ति अवश्यमेव होती है।

स्पष्टीकरण—जब कभी कोई न्यायालय विवाद्यक तथ्य को सिविल प्रक्रिया से सम्बन्धित किसी तत्त्वमय-प्रवर्त्त-विधि के उपबन्धों के अधीन अभिलिखित करता है, तब ऐसे विवाद्यक के उत्तर में जिस तथ्य का प्राप्त्यान या प्रत्याख्यान किया जाना है, वह विवाद्यक तथ्य है।

बृष्टांत

ख की हस्या का क अभियुक्त है।

उसके विचारण में निम्नलिखित तथ्य विवाद हो सकते हैं—

यह कि क ने ख की मृत्यु कारित की,

यह कि क का आशय ख की मृत्यु कारित करने का था,

यह कि क को ख से गम्भीर और अचानक प्रकोपन मिला था,

यह कि ख की मृत्यु कारित करने का कार्य करते समय क वित्तविकृति के कारण उस कार्य की प्रकृति जानने में असमर्थ था।

“दस्तावेज़”

“दस्तावेज़” से ऐसा कोई विषय अभिप्रेत है जिसको किसी पदार्थ पर अक्षरों, अकों या चिह्नों के साधन द्वारा या उनमें से एक से अधिक साधनों द्वारा अभिव्यक्त या वर्णित किया गया है जो उस विषय के अभिलेखन के प्रयोजन से उपयोग किए जाने को आशयित हो या उपयोग किया जा सके।

बृष्टांत

लेख दस्तावेज़ है;

मुद्रित, शिला मुद्रित या फोटो चित्रित शब्द दस्तावेज़ है;

मानचित्र या रेखांक दस्तावेज़ है ;

धातुपट्ट या शिला पर उत्कीर्ण लेख दस्तावेज़ है ;

उपहासांकन दस्तावेज़ है ;

“साक्ष्य” यब्द से अभिप्रेत है और उसके अन्तर्गत आते हैं — “साक्ष्य”.

(1) वे सभी कथन जिनके, जांचाधीन तथ्य के विषयों के सम्बन्ध में
न्यायालय अपने सामने साक्षियों द्वारा किए जाने की अनुज्ञा देता है
या अपेक्षा करता है ;

ऐसे कथन मौखिक साक्ष्य कहलाते हैं ;

(2) न्यायालय के निरीक्षण के लिए पेश की गई सब दस्तावेज़ें ;

ऐसी दस्तावेज़ें दस्तावेजी साक्ष्य कहलाती हैं ।

कोई तथ्य साबित हुआ कहा जाता है, जब न्यायालय अपने समक्ष के
विषयों पर विचार करने के पश्चात् या तो यह विश्वास करे कि उस
तथ्य का अस्तित्व है या उसके अस्तित्व को इतना अधिसम्भाव्य समझे कि
उस विशिष्ट मामले की परिस्थितियों में किसी प्रकाशावान व्यक्ति को इस
अनुमान पर कार्य करना चाहिए कि उस तथ्य का अस्तित्व है ।

“साबित”

कोई तथ्य नामांकित हुआ कहा जाता है, जब न्यायालय अपने समक्ष
विषयों पर विचार करने के पश्चात् या तो यह विश्वास करे कि उसका
अस्तित्व नहीं है, या उसके अनस्तित्व को इतना अधिसम्भाव्य समझे कि
उस विशिष्ट मामले की परिस्थितियों में किसी प्रकाशावान व्यक्ति को इस
अनुमान पर कार्य करना चाहिए कि उस तथ्य का अस्तित्व नहीं है ।

“नासाबित”

कोई तथ्य साबित नहीं हुआ कहा जाता है, जब वह न तो साबित किया
गया हो और न नामांकित ।

“साबित नहीं हुआ”

“भारत” से जम्मू-कश्मीर राज्य के भिवाय भारत का राज्यक्षेत्र अभि-
प्रेत है ।

“भारत”

4. जहाँ कहीं इस अधिनियम द्वारा यह उपबन्धित है कि न्यायालय
किसी तथ्य की उपधारणा कर सकेगा, वहाँ न्यायालय या तो ऐसे तथ्य को
मांकित हुआ मान सकेगा, यदि और जब तक वह नामांकित नहीं किया जाता है,
या उसके सबूत की मांग कर सकेगा ।

“उपधारणा कर
सकेगा ”

जहाँ कहीं इस अधिनियम द्वारा यह निर्दिष्ट है कि न्यायालय किसी तथ्य की
उपधारणा करेगा, वहाँ न्यायालय ऐसे तथ्य को मांकित मानेगा यदि और
जब तक वह नामांकित नहीं किया जाता है ।

“उपधारणा करेगा”

जहाँ कि इस अधिनियम द्वारा एक तथ्य किसी अन्य तथ्य का निश्चायक
सबूत घोषित किया गया है, वहाँ न्यायालय उस एक तथ्य के साबित हो जाने
पर उस अन्य को मांकित मानेगा और उसे नामांकित करने के प्रयोजन के
लिए साक्ष्य दिए जाने की अनुज्ञा नहीं देगा ।

“निश्चायक सबूत”

अध्याय 2

तथ्यों की सुसंगति के विषय में

विवादिक तथ्यों और संसंगत तथ्यों का साक्ष्य दिया जा सकेगा।

5. किसी वाद या कार्यवाही में हर विवादिक तथ्य के और ऐसे अन्य तथ्यों के, जिन्हें एतस्मिन्पञ्चात् सुसंगत घोषित किया गया है, अस्तित्व या अनस्तित्व का साक्ष्य दिया जा सकेगा और किन्हीं अन्यों का नहीं।

स्पष्टीकरण—यह धारा किसी व्यक्ति को ऐसे तथ्य का साक्ष्य देने के लिए योग्य नहीं बनाएगी, जिसे सिविल प्रक्रिया से सम्बन्धित किसी तत्समय प्रबृत्त विधि के किसी उपचार द्वारा वह साबित करने से निर्विकित कर दिया गया है।

दृष्टांत

(क) ख की मृत्यु कारित करने के आशय से उसे लाठी भार कर उसकी हत्या कारित करने के लिए क का विचारण किया जाता है।

क के विचारण में निम्नलिखित तथ्य विवाद हैं—

क का ख को लाठी से मारना;

क का ऐसी मार द्वारा ख की मृत्यु कारित करना;

ख की मृत्यु कारित करने का क का आशय।

(ख) एक वाकर्त्ता अपने साथ वह बन्धपत्र, जिस पर उसे आशय है, मामले की पहली सुनवाई पर अपने साथ नहीं लाता और पेश करने के लिए तैयार नहीं रखता। यह धारा उसे इस योग्य नहीं बनाती कि सिविल प्रक्रिया मंडित द्वारा विहित शर्तों के अननकूल वह उस कार्यवाही के उत्तरवर्ती प्रक्रम में उस बन्धपत्र को पेश कर सके या उसकी अन्तर्वस्तु को साबित कर सके।

एक ही संव्यवहार के भाग होने वाले तथ्यों की सुसंगति।

6. जो तथ्य विवाद न होते हुए भी किसी विवादिक तथ्य से इस प्रकार संस्कृत हैं कि वे एक ही संव्यवहार के भाग हैं, वे तथ्य सुसंगत हैं, चाहे वे उसी समय और स्थान पर या विभिन्न समयों और स्थानों पर घटित हुए हों।

दृष्टांत

(क) ख को पीट कर उसकी हत्या करने का क अभियुक्त है। क या ख या पाँच खड़े लोगों द्वारा जो कुछ भी पिटाई के समय या उससे इतने अल्प काल पूर्व या पश्चात् कहा या किया गया था कि वह उसी संव्यवहार का भाग बन गया है, वह सुसंगत तथ्य है।

(ख) क एक सशस्त्र विप्लव में भाग लेकर, जिसमें सम्पत्ति नष्ट की जाती है, फौजों पर आक्रमण किया जाता है और जेलों तोड़कर खोली जाती है, भारत सरकार के विरुद्ध युद्ध करने का अभियुक्त है। इन तथ्यों का घटित होना साधारण संव्यवहार का भाग होने के नाते सुसंगत है, चाहे क उन सभी में उपस्थित न रहा हो।

(ग) के एक पत्र में, जो एक पत्र व्यवहार का भाग है, अन्तर्विष्ट अपमान-लेख के लिए ख पर वाद लाता है। जिस विषय से अपमान-लेख उद्भूत हुआ है, उससे सम्बन्ध रखने वाली पक्षकारों के बीच जितनी चिट्ठियां उस पत्रव्यवहार का भाग हैं जिसमें वह अन्तर्विष्ट है, वे सुसंगत तथ्य हैं, चाहे उनमें वह अपमान-लेख स्वयं अन्तर्विष्ट न हो।

(घ) प्रश्न यह है कि क्या ख से आदिष्ट अमुक माल के परिदृष्टि किया गया था। वह माल, अनुक्रमशः कई मध्यवर्ती व्यक्तियों को परिदृष्टि किया गया था। हर एक परिदान सुसंगत तथ्य है।

7. वे तथ्य सुसंगत हैं, जो सुसंगत तथ्यों के या विवाद्यक तथ्यों के अव्यवहित या अन्यथा प्रसंग, हेतुक या परिणाम हैं, या जो उम वस्तुस्थिति को गठित करते हैं जिसके अन्तर्गत वे घटित हुए या जिसने उनके घटन या संव्यवहार का अवसर दिया।

वे तथ्य जो विवाद्यक तथ्यों के प्रसंग, हेतुक या परिणाम हैं।

वृष्टांत

(क) प्रश्न यह है कि क्या क ने ख को लूटा।

ये तथ्य सुसंगत हैं कि लूट के शोड़ी देर पहले ख अपने कब्जे में धन लेकर किसी भैले में गया, और उसने दूसरे व्यक्तियों को उसे दिखाया या उनसे इस तथ्य का कि उसके पास धन है, उल्लेख किया।

(ख) प्रश्न यह है कि क्या क ने ख की हत्या की।

उस स्थान पर जहां हत्या की गई थी या उसके समीप भूमि पर गुत्थम-गुत्था से बने हुए चिह्न सुसंगत तथ्य हैं।

(ग) प्रश्न यह है कि क्या क ने ख को विष दिया।

विष से उत्पन्न कहे जाने वाले नक्षणों के पूर्व ख के स्वास्थ्य की दशा और क को जात ख की वे आदतें, जिनसे विष देने का अवमर मिला, सुसंगत तथ्य हैं।

8. कोई भी तथ्य, जो किसी विवाद्यक तथ्य या सुसंगत तथ्य का हेतु या तैयारी दिशित या गठित करता है, सुसंगत है।

हेतु, तैयारी और पूर्व का या पश्चात् का आचरण।

किसी वाद या कार्यवाही के किसी पक्षकार या किसी पक्षकार के अभिकर्ता का ऐसे वाद या कार्यवाही के बारे में या उसमें विवाद्यक तथ्य या उससे सुसंगत किसी तथ्य के बारे में आचरण और किसी गंस व्यक्ति का आचरण, जिसके विरुद्ध कोई अपराध किसी कार्यवाही का विषय है, सुसंगत है, यदि ऐसा आचरण किसी विवाद्यक तथ्य या सुसंगत तथ्य को प्रभावित करता है या उसमें प्रभावित होता है, चाहे वह उसमें पूर्व का हो या पश्चात् का।

स्पष्टीकरण 1. — इस धारा में “आचरण” शब्द के अन्तर्गत कथन नहीं आते, जब तक कि वे कथन उन कथनों से भिन्न कार्यों के साथ-साथ और उन्हें स्पष्ट करने वाले न हों, किन्तु इस अधिनियम की किसी अन्य धारा के अधीन उन कथनों की सुमंगति पर इस स्पष्टीकरण का प्रभाव नहीं पड़ेगा।

स्पष्टीकरण 2. — जब किसी व्यक्ति का आचरण सुसंगत है, तब उससे, या उसकी उपस्थिति और श्रवणगोचरता में किया गया कोई भी कथन, जो उस आचरण पर प्रभाव डालता है, सुसंगत है।

बृद्धांत

(क) ख की हत्या के लिए क का विचारण किया जाता है।

ये तथ्य कि क ने ग की हत्या की, कि ख जानता था कि क ने ग की हत्या की है और कि ख ने आपनी इस जानकारी को लोक विदित करने की धमकी देकर क से धन उदाहित करने का प्रयत्न किया था, सुसंगत है।

(ख) क बन्धपत्र के आधार पर रुपये के संदाय के लिए ख पर वाद लाता है। ख इस बात का प्रत्याल्लान करता है कि उसने बन्धपत्र लिखा।

यह तथ्य सुसंगत है कि उस समय, जब बन्धपत्र का लिखा जाना अभिकथित है, ख को किसी विशिष्ट प्रयोजन के लिए धन चाहिए था।

(ग) विष द्वारा ख की हत्या करने के लिए क का विचारण किया जाता है।

यह तथ्य सुसंगत है कि ख की मृत्यु के पूर्व क ने ख को दिए गए विष के जैसा विष उपाप्त किया था।

(घ) प्रश्न यह है कि क्या अमुक दस्तावेज़ की विल है।

ये तथ्य सुसंगत है कि अभिकथित विल की तारीख से थोड़े दिन पहले क ने उन विषदों की जांच की जिनसे अभिकथित विल के उपबन्धों का सम्बन्ध है, कि उसने वह विल करने के बारे में वकीलों से परामर्श किया और कि उसने अन्य विलों के प्रारूप बनवाए जिन्हें उसने पसन्द नहीं किया,

(ङ) क किसी अपराध का अभियुक्त है।

ये तथ्य कि अभिकथित अपराध से पूर्व या अपराध करने के समय या पश्चात् क ने ऐसे साक्ष्य का प्रबन्ध किया जिसकी प्रवत्ति ऐसी थी कि मामले के तथ्य उसके अनुकूल प्रतीत हों या कि उसने साक्ष्य को नष्ट किया या छिपाया या कि उन व्यक्तियों की, जो साक्षी हो सकते थे, उपस्थिति निवारित की या अनुपस्थिति उपाप्त की या लोगों को उसके सम्बन्ध में मिथ्या साक्ष्य देने के लिए तैयार किया, सुसंगत हैं।

(च) प्रश्न यह है कि क्या क ने ख को लूटा।

ये तथ्य कि ख के लूटे जाने के पश्चात् ग ने क की उपस्थिति में कहा कि “ख को लूटने वाले आदमी को झोजने के लिए पुलिस आ रही है,” और यह कि उसके तुरन्त पश्चात् क भाग गया, सुसंगत हैं।

(छ) प्रश्न यह है कि क्या ख के प्रति क 10,000 रुपये का देनदार है।

ये तथ्य कि क ने ग से धन उधार मांगा और कि घ ने ग से क की उपस्थिति और श्रवणगोचरता में कहा कि “मैं तुम्हें मलाह देता हूँ कि तुम क पर भरोसा न करो क्योंकि वह ख के प्रति 10,000 रुपये का देनदार है,” और कि क कोई उत्तर विए बिना चला गया, सुसंगत हैं।

(ज) प्रश्न यह है कि क्या क के अपराध किया है।

यह तथ्य कि क एक पत्र पाने के उपरान्त, जिसमें उसे खेतावनी दी गई थी कि अपराधी के लिए जांच की जा रही है, फरार हो गया और उस पत्र की अन्तर्वस्तु, सुसंगत है।

(क्ष) क किसी अपराध का अभियुक्त है।

ये तथ्य कि अभिकथित अपराध के किए जाने के पश्चात् वह फरार हो गया या कि उस अपराध से अर्जित सम्पत्ति या सम्पत्ति के आगम उसके कान्जे में थे या कि उसने उन वस्तुओं को, जिनसे वह अपराध किया गया था, या किया जा सकता था, छिपाने का प्रयत्न किया, सुसंगत हैं।

(अ) प्रश्न यह है कि क्या क के माथ बलात्संग किया गया।

यह तथ्य कि अभिकथित बलात्संग के अल्पकाल पश्चात् उसने अपराध के बारे में परिवाद किया, वे परिस्थितियाँ जिनके अधीन तथा वे शब्द जिनमें वह परिवाद किया गया, सुसंगत हैं।

यह तथ्य कि उसने परिवाद किए बिना कहा कि मेरे साथ बलात्संग किया गया है, इस धारा के अधीन आचरण के रूप में सुसंगत नहीं है,

यद्यपि वह धारा 32 खण्ड (1) के अधीन मृत्युकालिक कथन या धारा 157 के अधीन सम्पोषक साक्ष्य के रूप में सुसंगत हो सकता है।

(ट) प्रश्न यह है कि क्या क को लूटा गया।

यह तथ्य कि अभिकथित लूट के तुरन्त पश्चात् उसने अपराध के संबंध में परिवाद किया, वे परिस्थितियाँ जिनके अधीन तथा वे शब्द, जिनमें वह परिवाद किया गया, सुसंगत हैं।

यह तथ्य कि उसने कोई परिवाद किए बिना कहा कि मुझे लूटा गया है इस धारा के अधीन आचरण के रूप में सुसंगत नहीं है।

यद्यपि वह धारा 32 खण्ड (1) के अधीन मृत्युकालिक कथन, या

धारा 157 के अधीन सम्पोषक साक्ष्य के रूप में सुसंगत हो सकता है।

9. वे तथ्य, जो विवाद्यक तथ्य या सुसंगत तथ्य के स्पष्टीकरण या पुरःस्थापन के लिए आवश्यक हैं अथवा जो किसी विवाद्यक तथ्य या सुसंगत तथ्य द्वारा इंगित अनमान का भर्त्यन या खण्डन करते हैं, अथवा जो किसी व्यक्ति या वस्तु का, जिसकी अनन्यता सुसंगत हो, अनन्यता स्थापित करते हैं, अथवा वह समय या स्थान स्थिर करते हैं जब या जहां कोई विवाद्यक तथ्य या सुसंगत तथ्य घटित हुआ अथवा जो उन पक्षकारों का सम्बन्ध वर्णित करते हैं जिनके द्वारा ऐसे किसी तथ्य का संब्यवहार किया गया था, वहां तक सुसंगत हैं जहां तक कि वे उस प्रयोजन के लिए आवश्यक हों।

सुसंगत तथ्यों के स्पष्टीकरण या पुरः स्थापन के लिए आवश्यक तथ्य।

वृष्टांत

(क) प्रश्न यह है कि क्या कोई विशिष्ट दस्तावेज़ क की विल है।

अभिकथित विल की तारीख पर क की सम्पत्ति की, या उसके कुटुम्ब की, अवस्था सुसंगत तथ्य हो सकती है।

(ख) क पर निकृष्ट आचरण का लांछन लगाने वाले अपमान-लेख के लिए ख पर क बाद लाता है। ख प्रतिज्ञान करता है कि वह बात, जिसका अपमान-लेख होना अभिकथित है, सघ है।

पक्षकारों की उस समय की स्थिति और सम्बन्ध, जब अपमान-लेख प्रकाशित हुआ था, विवादिक तथ्यों की पुरस्थापना के रूप में सुसंगत तथ्य हो सकते हैं।

क और ख के बीच किसी ऐसी बात के विषय में विवाद की विशिष्टियाँ, जो अभिकथित अपमान-लेख से असंस्कृत हैं, विसंगत हैं, यद्यपि यह तथ्य कि कोई विवाद हुआ था, यदि उससे क और ख के पारस्परिक सम्बन्धों पर प्रभाव पड़ा हो, सुसंगत हो सकता है।

(ग) क एक अपराध का अभियुक्त है।

यह तथ्य कि, उस अपराध के लिए जाने के तुरन्त पश्चात् क अपने घर से फरार हो गया, धारा 8 के अधीन विवादिक तथ्यों के पश्चात्वर्ती और उनसे प्रभावित आचरण के रूप में सुसंगत है।

यह तथ्य कि उस समय, जब वह घर से चला था, उसका उस स्थान में जहां वह गया था, अचानक और अर्जेंट कार्य था, उसके अचानक घर से चले जाने के तथ्य के स्पष्टीकरण की प्रवृत्ति रखने के कारण सुसंगत है।

जिस काम के लिए वह चला उसका ब्यौरा सुसंगत नहीं है सिवाय इसके कि जहां तक वह दर्शित करने के लिए आवश्यक हो कि वह काम अचानक और अर्जेंट था।

(घ) क के साथ की गई सेवा की संविदा को भांग करने के लिए ग को उत्प्रेरित करने के कारण ख पर क बाद लाता है। क की नौकरी छोड़ते भयमय क से ग कहता है कि “मैं तुम्हें छोड़ रहा हूँ क्योंकि ख ने मुझे तुमसे अधिक अच्छी प्रस्थापना की है।” यह कथन ग के आचरण को, जो विवादिक तथ्य होने के रूप में सुसंगत है, स्पष्ट करने वाला होने के कारण सुसंगत है।

(इ) चोरी का अभियुक्त क चुराई हुई सम्पत्ति ख को देते हुए देखा जाता है, जो उसे क की पत्नी को देते हुए देखा जाता है। ख उसे परिदान करते हुए कहता है “क ने कहा है कि तुम इसे छिपा दो।” ख का कथन उस संव्यवहार का भाग होने वाले तथ्य को स्पष्ट करने वाला होने के कारण सुसंगत है।

(ज) क बल्बे के लिए विचारित किया जा रहा है और उसका भीड़ के आगे-आगे चलना साबित हो चुका है। इस संव्यवहार की प्रकृति को स्पष्ट करने वाली होने के कारण भीड़ की आवाजें सुसंगत हैं।

सामान्य परिकल्पना के बारे में बड़यन्त्र-कारी द्वारा कही या की गई बातें।

10. जहां कि यह विश्वास करने का युक्तियुक्त आधार है कि दो या अधिक व्यक्तियों ने अपराध या अनुयोज्य दोष करने के लिए मिलकर बड़यन्त्र किया है, वहां उनके सामान्य आशय के बारे में उनमें से किसी एक व्यक्ति द्वारा उस समय के पश्चात्, जब ऐसा आशय उनमें से किसी एक ने प्रथम बार मन में धारण किया, कही, की, या लिखी गई कोई बात उन व्यक्तियों में से हर एक व्यक्ति के विरुद्ध, जिनके बारे में विश्वास किया जाता है कि उन्होंने

इस प्रकार पड़यंत्र किया है, षड्यंत्र का अस्तित्व सावित करने के प्रयोजनार्थ उसी प्रकार सुसंगत तथ्य है जिस प्रकार वह दर्शित करने के प्रयोजनार्थ कि ऐसा कोई व्यक्ति उसका पक्षकार था।

वृष्टांत

यह विश्वास करने का यक्षितयुक्त आधार है कि क भारत सरकार के विचार युद्ध करने के पड़यंत्र में सम्मिलित हुआ है।

क ने उस पड़यंत्र के प्रयोजनार्थ यूरोप में आयुध उपाप्त किए, ग ने वैसे ही उद्देश्य से कलकत्ते में धन संग्रह किया, घ ने मुम्बई में लोगों को उस पड़यंत्र में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया, छ ने आगरे में उस उद्देश्य के पक्षपात्रण में लेख प्रकाशित किए और ग द्वारा कलकत्ते में संग्रहीत धन को ओ ने दिल्ली से छ के पास काबूल भेजा। इन तथ्यों और उस पड़यंत्र का वस्ताव देने वाले ग द्वारा लिखित पत्र की अन्तर्वस्तु में से वह एक पड़यंत्र का अस्तित्व सावित करने के लिए तथा उसमें क की सहअपराधिता सावित करने के लिए भी सुसंगत है, चाहे वह उन सभी के बारे में अनभिज्ञ रहा हो और चाहे उन्हें करने वाले व्यक्ति उसके लिए अपर्याचित रहे हों और चाहे वे उसके पड़यंत्र में भम्मिलित होने से पूर्व या उसके पड़यंत्र से अलग हो जाने के पश्चात् घटन हुए हों।

11. वे तथ्य, जो अन्यथा सुसंगत नहीं हैं, सुसंगत हैं —

(1) यदि वे किमी विवाद्यक तथ्य या सुसंगत तथ्य से असंगत हैं,

वे तथ्य जो अन्यथा सुसंगत नहीं हैं कब सुसंगत हैं।

(2) यदि वे स्वयमेव या अन्य तथ्यों के मासंग में किसी विवाद्यक तथ्य या सुसंगत तथ्य का अस्तित्व या अनस्तित्व अत्यन्त अधिसम्भाव्य या अनधिसम्भाव्य बनाते हैं।

वृष्टांत

(क) प्रश्न यह है कि क्या क ने किसी अमुक दिन कलकत्ते में अपराध किया।

यह तथ्य कि वह उस दिन नाहीर में या सुसंगत है।

यह तथ्य कि जब अपराध किया गया था उस समय के लगभग क उस स्थान से, जहां कि वह अपराध किया गया था, दूसरी दूरी पर था कि क द्वारा उस अपराध का किया जाना यदि असम्भव नहीं तो अत्यन्त अनधिसम्भाव्य था, सुसंगत है।

(ख) प्रश्न यह है कि क्या क ने अपराध किया है।

परिस्थितियां ऐसी हैं कि वह अपराध क, ख, ग या घ में के किसी एक के द्वारा अवश्य किया गया होगा। वह हर तथ्य, जिससे यह दर्शित होना है कि वह अपराध किमी अन्य के द्वारा नहीं किया जा सकता था और वह ख, ग या घ में से किसी के द्वारा नहीं किया गया था, सुसंगत है।

नुकसानी के लिए वादों में रकम अवधारित करने के लिए न्यायालय को समर्थन करने की प्रवृत्ति रखने वाले तथ्य सुसंगत हैं।

जब कि अधिकार या रुद्धि प्रश्नगत है, तब सुसंगत तथ्य।

12. उन वादों में, जिनमें नुकसानी का दावा किया गया है, कोई भी तथ्य सुसंगत है जिससे न्यायालय नुकसानी की वह रकम अवधारित करने के लिए समर्थ हो जाए, जो अधिनिर्णीत की जानी चाहिए।

13. जहां कि किसी अधिकार या रुद्धि के अस्तित्व के बारे में प्रश्न है, वहां निम्नलिखित तथ्य सुसंगत हैं—

- (क) कोई संघवहार, जिसके द्वारा प्रश्नगत अधिकार या रुद्धि सूष्टि, दावाकृत, उपांतरित, मान्यकृत, प्राख्यात या प्रत्याख्यात की गई थी या जो उसके अस्तित्व से असंगत था,
- (ख) वे विशिष्ट उदाहरण, जिनमें वह अधिकार या रुद्धि दावाकृत, मान्यकृत या प्रयुक्त को गई थी या जिनमें उसका प्रयोग विवादप्रस्तर या प्राख्यात किया गया था या उसका अनुसरण नहीं किया गया था।

बृष्टांत

प्रश्न यह है कि क्या क का एक मीनक्षेत्र पर अधिकार है।

क के पूर्वजों को मीनक्षेत्र प्रदान करने वाला विलेख, क के पिता द्वारा उस मीनक्षेत्र का बन्धक, क के पिता द्वारा उस बन्धक से अनमेल पाश्चिम अनुदान, विशिष्ट उदाहरण, जिनमें क के पिता ने अधिकार का प्रयोग किया या जिनमें अधिकार का प्रयोग क के पड़ोसियों द्वारा रोका गया था, सुसंगत तथ्य है।

14. मन की कोई भी दशा जैसे आशय, ज्ञान, सद्भाव, उपेक्षा, उतावला पन, किसी विशिष्ट व्यक्ति के प्रति वैभनस्य या सदिच्छा दर्शित करने वाले अथवा शारीर की या शारीरिक संवेदना की किसी दशा का अस्तित्व दर्शित करने वाले तथ्य तब सुसंगत हैं, जब कि ऐसी मन की या शारीर की या शारीरिक संवेदन की किसी ऐसी दशा का अस्तित्व विवाद्य या सुसंगत है।

स्पष्टीकरण 1. — जो तथ्य इस नाते सुसंगत है कि वह मन की सुसंगत दशा के अस्तित्व को दर्शित करता है उससे यह दर्शित होना ही चाहिए कि मन की वह दशा साधारणतः नहीं, अपितु प्रश्नगत विशिष्ट विषय के बारे में, अस्तित्व में है।

स्पष्टीकरण 2. — किन्तु जब कि किसी अपराध के अभियुक्त व्यक्ति के विचारण में इस धारा के अर्थ के अन्तर्गत उस अभियुक्त द्वारा किसी अपराध का कभी पहले किया जाना सुसंगत हो, तब ऐसे व्यक्ति की पूर्व दोषसिद्धि भी सुसंगत तथ्य होगी।

बृष्टांत

(क) क चुराया हुआ भाल यह जानते हुए कि वह चुराया हुआ है, प्राप्त करने का अभियुक्त है। यह साबित कर दिया जाता है कि उसके कँजे में कोई विशिष्ट चुराई ढुई चीज़ थी।

यह तथ्य कि उमी समय उसके कब्जे में कई अन्य चुराई हुई चीजें थीं यह दर्शित करने की प्रवृत्ति रखने वाला होने के नाते सुसंगत है कि जो चीजें उमके कब्जे में थीं उनमें से हर एक और सबके बारे में वह जानता था कि वह चुराई हुई है।

(ख) क पर किसी अन्य व्यक्ति को कूटकृत सिक्का कपटपूर्वक परिदान करने का अभियोग है, जिसे वह परिवान करते समय जानता था कि वह कूटकृत है।

यह तथ्य कि उसके परिदान के समय क के कब्जे में वैसे ही दूसरे कूटकृत सिक्के थे सुसंगत है।

यह तथ्य कि क एक कूटकृत सिक्के को, यह जानते हुए कि वह सिक्का कूटकृत है, उसे असली के रूप में किसी अन्य व्यक्ति का परिदान करने के लिए पहले भी दोषितद्वारा हुआ था सुसंगत है।

(ग) ख के कुत्ते द्वारा, जिसका हिन्द्र होना ख जानता था, किए गए नुकसान के लिए ख पर क वाद लाता है।

ये तथ्य कि कुत्ते ने पहले भ, म और य को काटा था और यह कि उन्होंने ख से शिकायतें की थीं सुसंगत हैं।

(घ) प्रश्न यह है कि क्या विनिमयपत्र का प्रतिगृहीता क यह जानता था कि उसके पाने वाला का नाम काल्पनिक है।

यह तथ्य कि क ने उमी प्रकार से लिखित अन्य विनिमयपत्रों को इसके पहले कि वे पाने वाले द्वारा, यदि पाने वाला वास्तविक व्यक्ति होता तो, उमको पारेंपित किए जा सकते, प्रतिगृहीत किया था, यह दर्शित करने के नाते सुसंगत है कि क यह जानता था कि पाने वाला व्यक्ति काल्पनिक है।

(ङ) क पर ख की ऊपरिती की अपहानि करने के आशय से एक लांछन प्रकाशित कर के ख की मानहानि करने का अभियोग है।

यह तथ्य कि ख के बारे में क ने पूर्व प्रकाशन किए, जिससे ख के प्रति क का वैमनस्य दर्शित होता है, इस कारण सुसंगत है कि उससे प्रश्नगत विशिष्ट प्रकाशन द्वारा ख की ऊपरिती की अपहानि करने का क का आशय साबित होता है।

ये तथ्य कि क और ख के बीच पहले कोई झगड़ा नहीं हुआ और कि क ने परिवादगत बात को जैसा सुना था वैसा ही दुहरा दिया था यह दर्शित करने के नाते कि क का आशय ख की ऊपरिती की अपहानि करना नहीं था सुसंगत है।

(च) ख द्वारा क पर यह वाद लाया जाता है कि ग के बारे में क ने ख से यह कपटपूर्व व्यपदेशन किया कि ग शोधक्रम है जिससे उत्प्रेरित होकर ख ने ग का, जो दिवालिया था, भरोसा किया और हानि उठाई।

यह तथ्य कि जब क ने ग को शोधक्रम व्यपदिष्ट किया था, तब ग को उसके पड़ोसी और उससे व्योहार करने वाले व्यक्ति शोधक्रम समझते थे, यह दर्शित करने के नाते कि क ने व्यपदेशन सद्भावपूर्वक किया था सुसंगत है।

(छ) क पर ख उस काम की कीमत के लिए वाद लाता है जो ठेकेदार न के आदेश से किसी गृह पर, जिसका क स्वामी है, ख ने किया था।

क का प्रतिवाद है कि ख का ठेका ग के साथ था।

यह तथ्य कि क ने प्रश्नगत काम के लिए ग को कीमत दे दी इसलिए सुसंगत है कि उस स यह साबित होता है कि क ने सद्भावपूर्वक ग को प्रश्नगत काम का प्रबन्ध दे दिया था, जिससे कि ख के साथ ग अपने ही निमित्त, न कि क के अभिकर्ता के रूप में, संविदा करने की स्थिति में था।

(ज) क ऐसी सम्पत्ति का, जो उसने पड़ी पाई थी, बेर्झमानी से दुर्विनियोग करने का अभियुक्त है और प्रश्न यह है कि क्या जब उसने उसका विनियोग किया उसे सद्भावपूर्वक विश्वास था कि वास्तविक स्वामी मिल नहीं सकता।

यह तथ्य कि सम्पत्ति के खो जाने की लोक सूचना उम स्थान में, जहां क आ, दी जा चुकी थी, यह दर्शित करने के नाते सुसंगत है कि क को सद्भावपूर्वक यह विश्वास नहीं था कि उस समानि का वास्तविक स्वामी मिल नहीं सकता।

यह तथ्य कि क यह जानता था या उसके पास यह विश्वास करने का कारण था कि सूचना कपटपूर्वक ग द्वारा दी गई थी जिसने सम्पत्ति की हानि के बारे में सुन रखा था और जो उस पर मिथ्या दावा करने का इच्छुक था यह दर्शित करने के नाते सुसंगत है कि क का सूचना के बारे में ज्ञान क के सद्भाव को नासाबित नहीं करता।

(झ) क पर ख को मार डालने के आशय से उस पर असन करने का अभियोग है। क का आशय दर्शित करने के लिए यह तथ्य साबित किया जा सकेगा कि क ने पहले भी ख पर असन किया था।

(ञ) क पर ख को धमकी भरे पत्र भेजने का आरोप है। इन पत्रों का आशय दर्शित करने के नाते क द्वारा ख को पहले भेजे गए धमकी भरे पत्र भावित किए जा सकेंगे।

(ट) प्रश्न यह है कि क्या क अपनी पत्नी ख के प्रति कूरता का दोषी रहा है।

अभिकथित कूरता के थोड़ी देर पहले या पीछे उनकी एक दूसरे के प्रति भावना की अभिव्यक्तियां सुसंगत तथ्य हैं।

(ठ) प्रश्न यह है कि क्या क की मृत्यु विष से कारित की गई थी।

अपनी रुणावस्था में क द्वारा अपने लक्षणों के बारे में किए हुए कथन सुसंगत तथ्य हैं।

(ड) प्रश्न यह है कि क के स्वास्थ्य की दशा उस समय कैसी थी जिस समय उसके जीवन का बीमा कराया गया था।

प्रश्नगत समय पर या उसके लगभग अपने स्वास्थ्य की दशा के बारे में क द्वारा किए गए कथन सुसंगत तथ्य हैं।

(ढ) क ऐसी उपेक्षा के लिए ख पर वाद लाता है जो ख ने उसे युक्तियुक्त रूप से अनुपयोग्य गाढ़ी भाड़े पर देने द्वारा की जिससे क को क्षति हुई थी।

यह तथ्य कि उम विशिष्ट गाड़ी की त्रुटि की ओर अन्य अवसरों पर भी ख का ध्यान आकृष्ट किया गया था मुसंगत है।

यह तथ्य कि ख उन गाड़ियों के बारे में, जिन्हें वह भाड़े पर देता था, अस्यासतः उपेक्षावान था विसंगत है।

(ग) क साशय असन द्वारा ख की मृत्यु करने के लिए विचारित है।

यह तथ्य कि क ने अन्य अवसरों पर ख पर असन किया था, क का ख पर असन करने का आशय दर्शित करने के भावे मुसंगत है।

यह तथ्य कि क लोगों पर उनकी हत्या करने के आशय से असन करने का अस्यासी था विसंगत है।

(त) क का किसी अपराध के लिए विचारण किया जाता है।

यह तथ्य कि उसने कोई बात कही जिससे उस विशिष्ट अपराध के करने का आशय उपदर्शित होता है मुसंगत है।

यह तथ्य कि उसने कोई बात कही जिससे उस प्रकार के अपराध करने की उसकी साधारण प्रवृत्ति उपदर्शित होती है, विसंगत है।

15. जब कि प्रश्न यह है कि कार्य आकस्मिक या साशय था या किसी विशिष्ट ज्ञान या आशय से किया गया था, तब यह तथ्य कि ऐसा कार्य समरूप घटनाओं की आवली का भाग था जिनमें से हरएक घटना के साथ वह कार्य करने वाला व्यक्ति गम्भीर था मुसंगत है।

कार्य आकस्मिक या साशय इस प्रश्न पर प्रकाश डालने वाले तथ्य।

बृष्टांत

(क) क पर यह अभियोग है कि अपने गृह के बीमे का धन अभिप्राप्त करने के लिए उसने उसे जला दिया।

ये तथ्य कि क कई गृहों में एक के पश्चात् दूसरे में रहा जिनमें से हरएक का उसने बीमा कराया, जिनमें से हरएक में आग लगी और जिन अभिन्नकांडों में से हरएक के उपरान्त क को किसी भिन्न बीमा कार्यालय से बीमा धन मिला, इस नाते सुमंगत है कि उससे यह दर्शित होता है कि वे अभिन्नकांड आकस्मिक नहीं थे।

(ख) ख के ऋणियों में धन प्राप्त करने के लिए क नियोजित है। क का यह कर्तव्य है कि बही में अपने द्वारा प्राप्त राशियां दर्शित करने वाली प्रविष्टियां करे। वह एक प्रविष्टि करता है जिसमें यह दर्शित होता है कि किसी विशिष्ट अवसर पर उसे वास्तव में प्राप्त राशि से कम राशि प्राप्त हुई।

प्रश्न यह है कि क्या यह मिथ्या प्रविष्टि आकस्मिक थी या साशय।

ये तथ्य कि उसी बही में क द्वारा की हुई अन्य प्रविष्टियां मिथ्या हैं और कि हरएक अवस्था में मिथ्या प्रविष्टि के पक्ष में है मुसंगत है।

(ग) ख को कपटपूर्वक कूटझूत माया परिदान करने का क अभियुक्त है।

प्रश्न यह है कि क्या रूपये का परिदान आकस्मिक था।

ये तथ्य कि ख को परिदान के तुरन्त पहले या पीछे क ने था, वह और ड को कृत्रिम रूपये परिदान किए थे इस नात सुसंगत है कि उन से यह दाशत होता है कि ख को किया गया परिदान आकस्मिक नहीं था।

कारबार के अनुक्रम का अस्तित्व कब सुसंगत है।

16. जब कि प्रश्न यह है कि क्या कोई विशिष्ट कार्य किया गया था, तब कारबार के ऐसे किसी भी अनुक्रम का अस्तित्व, जिसके अनुसार वह काय स्वभावतः किया जाता, सुसंगत तथ्य है।

वृष्टांत

(क) प्रश्न यह है कि क्या एक विशिष्ट पत्र प्रेवित किया गया था।

ये तथ्य कि कारबार की यह साधारण अनुक्रम था कि वे सभी पत्र, जो किसी छास स्थान में रख दिए जाते थे, डाक में डाले जाने के लिए ले जाए जाते थे और कि वह पत्र उस स्थान में रख दिया गया था, सुसंगत है।

(ख) प्रश्न यह है कि क्या एक विशिष्ट पत्र को मिला। ये तथ्य कि वह सम्यक् अनुक्रम में डाक में डाला गया था, और कि वह पुनःप्रेपण केन्द्र द्वारा लौटाया नहीं गया था, सुसंगत है।

स्वीकृतियाँ

स्वीकृति की परिभाषा।

17. स्वीकृति वह मौखिक या दस्तावेजी कथन है, जो किसी विवादक तथ्य या सुसंगत तथ्य के बारे में कोई अनुमान शङ्गित करता है और जो ऐसे व्यक्तियों में से किसी के द्वारा और एसी परिस्थितियों में किया गया है जो एतस्मिन्पश्चात् वर्णित है।

18. वे कथन स्वीकृतियाँ हैं, जिन्हें कार्यवाही के किसी पक्षकार ने किया हो, या ऐसे किसी पक्षकार के ऐसे किसी अभिर्ता ने किया हो जिसे मामले की परिस्थितियों में न्यायालय उन कथनों को करने के लिए उस पक्षकार द्वारा अभिव्यक्त या विवक्षित रूप से प्राधिकृत किया हुआ मानता है।

वाद के ऐसे पक्षकारों द्वारा, जो प्रतिनिधिक हैमियत में वाद ला रहे हों या जिन पर प्रतिनिधिक हैमियत में वाद लाया जा रहा हो, किए गए कथन, जब तक कि वे उस भमय न किए गए हों जब कि उन को करने वाला पक्षकार वैसी हैमियत धारण करता था, स्वीकृतियाँ नहीं हैं।

वे कथन स्वीकृतियाँ हैं, जो—

(1) ऐसे व्यक्तियों द्वारा किए गए हैं, जिनका कार्यवाही की विषयवस्तु में कोई साम्पत्तिक या धनमम्बन्धी हित है और जो इस प्रकार हितबद्ध व्यक्तियों की हैमियत में वह कथन करते हैं, अथवा

(2) ऐसे व्यक्तियों द्वारा किए गए हैं, जिन से वाद के पक्षकारों का वाद की विषयवस्तु में अपना हित व्युत्पन्न हुआ है,

यदि वे कथन उन्हें करने वाले व्यक्तियों के हित के चालू रहने के दौरान में किए गए हैं।

विषयवस्तु में हितबद्ध पक्षकार द्वारा;

उस व्यक्ति द्वारा जिससे हित व्युत्पन्न हुआ हो।

19. वे कथन, जो उन व्यक्तियों द्वारा किए गए हैं जिनकी बाद के किसी पक्षकार के विरुद्ध स्थिति या वायित्व सामित करना आवश्यक है, स्वीकृतियां हैं, यदि ऐसे कथन ऐसे व्यक्तियों द्वारा, या उन पर लाए गए बाद में ऐसी स्थिति या वायित्व के सम्बन्ध में ऐसे व्यक्तियों के विरुद्ध सुसंगत होते और यदि वे उस समय किए गए हों जब कि उन्हें करने वाला व्यक्ति ऐसी स्थिति ग्रहण किए हुए हैं या ऐसे वायित्व के अधीन हैं।

उन व्यक्तियों द्वारा स्वीकृतियां जिनकी स्थिति बाद के पक्षकारों के विरुद्ध सामित की जानी चाहिए।

बृष्टांत

ख के लिए भाटक संग्रह का वायित्व क लेता है।

ग द्वारा ख को शोध्य भाटक संग्रह न करने के लिए क पर ख बाद लाता है।

क इस बात का प्रत्याख्यान करता है कि ग से ख को भाटक देय था।

ग द्वारा यह कथन कि उस पर ख का भाटक देय है स्वीकृति है, और यदि क इस बात से इन्कार करता है कि ग द्वारा ख को भाटक देय था तो वह क के विरुद्ध सुसंगत तथ्य है।

20. वे कथन, जो उन व्यक्तियों द्वारा किए गए हैं जिनको बाद के किसी पक्षकार ने किसी विवादप्रस्त विषय के बारे में जानकारी के लिए अभिव्यक्त रूप से निर्दिष्ट किया है, स्वीकृतियां हैं।

बाद के पक्षकार द्वारा अभिव्यक्त रूप से निर्दिष्ट व्यक्तियों द्वारा स्वीकृतियां।

बृष्टांत

प्रश्न यह है कि क्या क द्वारा ख को बेचा हुआ घोड़ा अच्छा है।

ख से कहता है कि “जा कर ग से पूछ लो, ग इस बारे में मब कुछ जानता है”। ग का कथन स्वीकृति है।

21. स्वीकृतियां उन्हें करने वाले व्यक्ति के या उसके हित प्रतिनिधि के विरुद्ध सुसंगत हैं और सामित की जा सकेगी, किन्तु उन्हें करने वाले व्यक्ति द्वारा या उसकी ओर से या उसके हित प्रतिनिधि द्वारा निम्नलिखित अवस्थाओं में सिवाय उन्हें सामित नहीं किया जा सकेगा—

स्वीकृतियों का उन्हें करन वाले व्यक्तियों के विरुद्ध और उनके द्वारा या उनकी ओर से सामित किया जाना।

(1) कोई स्वीकृति उसे करने वाले व्यक्ति द्वारा या उसकी ओर से तब सामित की जा सकेगी, जब कि वह इस प्रकृति की है कि यदि उसे करने वाला व्यक्ति मर गया होता, तो वह अन्य व्यक्तियों के बीच धारा 32 के अधीन सुसंगत होता।

(2) कोई स्वीकृति उसे करने वाले व्यक्ति द्वारा या उसकी ओर से तब सामित की जा सकेगी, जब कि वह मन की या शरीर की सुसंगत या विवाद्य किसी दशा के अस्तित्व का ऐसा कथन है जो उस समय या उसके लगभग किया गया था जब मन की या शरीर की ऐसी दशा विद्यमान थी और ऐसे आचरण के साथ है जो उसकी अस्त्यता को अनधिमम्भाव्य कर देता है।

(3) कोई स्वीकृति उसे करने वाले व्यक्ति द्वारा या उसकी ओर से सामित की जा सकेगी, यदि वह स्वीकृति के रूप में नहीं किन्तु अन्यथा सुसंगत है।

दृष्टान्त

(क) क और ख के बीच प्रश्न यह है कि अमुक विलेख कूटरचित है या नहीं। क प्रतिशात करता है कि वह असली है, ख प्रतिशात करता है कि वह कूटरचित है।

ख का कोई कथन कि विलेख असली है, क साबित कर सकेगा तथा क का कोई कथन कि विलेख कूटरचित है, ख साबित कर सकेगा। किन्तु क अपना यह कथन कि विलेख असली है साबित नहीं कर सकेगा और न ख ही अपना यह कथन कि विलेख कूटरचित है साबित कर सकेगा।

(ख) किसी पोत के कप्तान, क, का विचारण उस पोत को संत्यक्त करने के लिए किया जाता है।

यह दर्शित करने के लिए गाक्ष्य दिया जाता है कि पोत अपने उचित मार्ग से बाहर ले जाया गया था।

क अपने कारबार के मामली अनुश्रम में अपने द्वारा रखी जाने वाली वह पुस्तक पेश करता है जिसमें वे मम्प्रेक्षण दर्शित हैं, जिनके बारे में यह अभिकथित है कि वे दिन प्रति दिन किए गए थे और जिनसे उपदर्शित है कि पोत अपने उचित मार्ग से बाहर नहीं ले जाया गया था। क इन कथनों को साबित कर सकेगा क्योंकि, यदि उसकी मूल्य हो गई होती तो वे कथन अन्य व्यक्तियों के बीच धारा 32 खण्ड (2) के अधीन ग्राह्य होते।

(ग) क अपने द्वारा कलकसे में किए गए अपराध का अभियुक्त है।

वह अपने द्वारा लिखित और उसी दिन लाहौर में दिनांकित और उसी दिन का नाहौर डाक-चिन्ह धारण करने वाला पत्र पेश करता है।

पत्र वी तारीख में का कथन ग्राह्य है क्योंकि, यदि क की मूल्य हो गई होती, तो वह धारा 32 खण्ड (2) के अधीन ग्राह्य होता।

(घ) क चुराए हुए माल को यह जानते हुए कि वह चुगाया हुआ है प्राप्त करने का अभियुक्त है।

वह यह साबित करने की प्रस्थापना करता है कि उसने उसे उसके मूल्य से कम में बेचने से इन्कार किया था।

यद्यपि ये स्वीकृतियाँ हैं तथापि क इन कथनों को साबित कर सकेगा, क्योंकि ये विवाद्यक तथ्यों से प्रभावित उसके आचरण के स्पष्टीकारक हैं।

(ङ) क अपने कब्जे में कूटकृत सिक्का, जिसका कूटकृत होना वह जानता था, कपटपूर्वक रखने का अभियुक्त है।

वह यह साबित करने की प्रस्थापना करता है कि उसने एक कुशल व्यक्ति से उस सिक्के की परीक्षा करने को कहा था, क्योंकि उसे शंका थी कि वह कूटकृत है या नहीं और उस व्यक्ति ने उसकी परीक्षा की थी और उससे कहा था कि वह असली है।

अन्तिम पूर्ववर्ती दृष्टान्त में कथित कारणों से क इन तथ्यों को साबित कर सकेगा।

22. किसी दस्तावेज की अन्तर्वस्तु के बारे में मौखिक स्वीकृतियां तब तक सुसंगत नहीं होतीं, यदि और जब तक उन्हें साबित करने की प्रस्थापना करने वाला पक्षकार यह दर्शात न कर सके कि ऐसी दस्तावेज की अन्तर्वस्तुओं का द्वितीयिक साक्ष्य देने का वह एतस्मिन्पश्चात् दिए हुए नियमों के अधीन हक्कदार है, अथवा जब तक पेश की गई दस्तावेज का असरी होना प्रश्नगत न हो।

23. सिविल मामलों में कोई भी स्वीकृति सुसंगत नहीं है, यदि वह या तो इस अभियुक्त शर्त पर की गई हो कि उसका साक्ष्य नहीं दिया आएगा, या ऐसी परिस्थितियों के अधीन वी गई हो जिनसे न्यायालय यह अनुमान कर सके कि पक्षकार इस बात पर परस्पर सहमत हो गए थे कि उसका साक्ष्य नहीं दिया जाना आहिए।

स्पष्टीकरण—इस धारा की कोई भी बात किसी बेरिस्टर, प्लीडर, अटर्नी या वकील को किसी ऐसी बात का साक्ष्य देने से छूट देने वाली नहीं मानी जाएगी जिसका साक्ष्य देने के लिए धारा 126 के अधीन उसे विवर किया जा सकता है।

24. अभियुक्त व्यक्ति द्वारा की गई संस्वीकृति दाइडक कार्यवाही में विसंगत होती है, यदि उसके किए जाने के बारे में न्यायालय को प्रतीत होता हो कि अभियुक्त व्यक्ति के विरुद्ध आरोप के बारे में वह ऐसी उत्प्रेरणा, धमकी या वचन द्वारा कराई गई है जो प्राधिकारवाला व्यक्ति की ओर से दिया गया है और जो न्यायालय की राय में इसके लिए पर्याप्त हो कि वह अभियुक्त व्यक्ति को यह अनुमान करने के लिए उसे युक्तियुक्त प्रतीत होने वाले आधार देती है कि उसके करने से वह अपने विरुद्ध कार्यवाहियों के बारे में ऐहिक रूप का कोई फ़ायदा उठाएगा या ऐहिक रूप की किसी बुराई का परिवर्जन कर लेगा।

25. किसी पुलिस आफिसर से की गई कोई भी संस्वीकृति किसी अपराध के अभियुक्त व्यक्ति के विरुद्ध साबित न की जाएगी।

दस्तावेजों की अन्तर्वस्तु के बारे में मौखिक स्वीकृतियां कब सुसंगत होती हैं।

सिविल मामलों में स्वीकृतियां कब सुसंगत होती हैं।

उत्प्रेरणा, धमकी या वचन द्वारा कराई गई संस्वीकृति दाइडक कार्यवाही में कब विसंगत होती है।

पुलिस आफिसर से की गई संस्वीकृति का साबित न किया जाना।

पुलिस की दर्भिरक्षा में होते हुए अभियुक्त द्वारा की गई संस्वीकृति का उसके विरुद्ध साबित न किया जाना।

अभियुक्त से प्राप्त जानकारी में से कितनी साबित की जा सकेगी।

26. कोई भी संस्वीकृति, जो किसी व्यक्ति ने उस समय की हो जब वह पुलिस आफिसर की अभिरक्षा में हो, ऐसा व्यक्ति के विरुद्ध साबित न की जाएगी जब तक कि वह मजिस्ट्रेट की साक्षात् उपस्थिति में न की गई हो।

स्पष्टीकरण—इस धारा में “मजिस्ट्रेट” के अन्तर्गत फ़ोर्ट सेन्ट जार्ज की प्रेसिडेन्सी में या अन्यत्र मजिस्ट्रेट के कुत्य निर्वहन करने वाला ग्रामणी नहीं आता है, जब तक कि वह ग्रामणी कोड आफ़ क्रिमिनल प्रोसीजर के अधीन मजिस्ट्रेट की शक्तियों का प्रयोग करने वाला मजिस्ट्रेट न हो।

27. परन्तु जब किसी तथ्य के बारे में यह अभिसाक्ष्य दिया जाता है कि किसी अपराध के अभियुक्त व्यक्ति से, जो पुलिस आफिसर की अभिरक्षा में हो, प्राप्त जानकारी के परिणामस्वरूप उसका पक्ष बला है, तब ऐसी

जानकारी में से, उतनी चाहे वह संस्वीकृति की कोटि में आती हो या नहीं, जितनी तद्वारा पता चले हुए तथ्य से स्पष्टतया सम्बन्धित है, सामित्र की जा सकेगी।

उत्प्रेरणा, धमकी या वचन संवेदा हुए मन पर प्रभाव के दूर हो जाने के पश्चात् की गई संस्वीकृति सुसंगत है।

अन्यथा सुसंगत संस्वीकृति का गुप्त-रखने के वचन आदि के कारण विसंगत न हो जाना।

28. यदि ऐसी कोई संस्वीकृति, जैसी धारा 24 में निर्दिष्ट है, न्यायालय की राय में उस के मन पर प्रभाव के, जो ऐसो किसी उत्प्रेरणा, धमकी या वचन से कारित हुआ है, पूर्णतः दूर हो जाने के पश्चात् की गई है, तो वह सुसंगत है।

29. यदि ऐसी संस्वीकृति अन्यथा सुसंगत है, तो वह केवल इसलिए कि वह गुप्त रखने के वचन के अधीन या उसे अभिप्राप्त करने के प्रयोजनार्थ अधिकृत व्यक्ति से की गई प्रवर्चना के परिणामस्वरूप, या उस समय जब कि वह मत था, की गई थी अथवा इसलिए कि वह ऐसे प्रश्नों के, जाहे उनका रूप कैसा ही थ्यों न रहा हो, उत्तर में की गई थी जिनका उत्तर देना उसके लिए आवश्यक नहीं था, अथवा केवल इसलिए कि उसे यह चेतावनी नहीं दी गई थी कि वह ऐसी संस्वीकृति करने के लिए आवश्यक नहीं था और कि उसके विरुद्ध उसका साक्ष्य दिया जा सकेगा, विसंगत नहीं हो जाती।

सामित्र संस्वीकृति को, जो उसे करने वाले व्यक्ति तथा एक ही अपराध के लिए संयुक्त रूप से विचारित हैं तथा ऐसे व्यक्तियों में से किसी एक के द्वारा, अपने को और ऐसे व्यक्तियों में से किसी अन्य को प्रभावित करने वाली की गई संस्वीकृति को सामित्र किया जाता है, तब न्यायालय ऐसी संस्वीकृति को ऐसे अन्य व्यक्ति के विरुद्ध तथा ऐसी संस्वीकृति करने वाले व्यक्ति के विरुद्ध विचार में ले सकेगा।

30. जब कि एक से अधिक व्यक्ति एक ही अपराध के लिए संयुक्त रूप से विचारित हैं तथा ऐसे व्यक्तियों में से किसी एक के द्वारा, अपने को और ऐसे व्यक्तियों में से किसी अन्य को प्रभावित करने वाली की गई संस्वीकृति को सामित्र किया जाता है, तब न्यायालय ऐसी संस्वीकृति को ऐसे अन्य व्यक्ति के विरुद्ध तथा ऐसी संस्वीकृति करने वाले व्यक्ति के विरुद्ध विचार में ले सकेगा।

स्पष्टीकरण—इस धारा में प्रयुक्त “अपराध” शब्द के अन्तर्गत उस अपराध का दुष्प्रेरण या उसे करने का प्रयत्न आता है।

बुष्टांत

(क) क और ख को ग की हत्या के लिए संयुक्ततः विचारित किया जाता है। यह सामित्र किया जाता है कि क ने कहा, “ख और मैंने ग की हत्या की है।” ख के विरुद्ध इस संस्वीकृति के प्रभाव पर न्यायालय विचार कर सकेगा।

(ख) ग की हत्या करने के लिए क का विचारण हो रहा है। यह दर्शित करने के लिए साक्ष्य है कि ग की हत्या क और ख द्वारा की गई थी और यह कि ख ने कहा था कि “क और मैंने ग की हत्या की है।”

न्यायालय इस कथन को क के विरुद्ध विचारार्थ नहीं ले सकेगा, क्योंकि ख संयुक्ततः विचारित नहीं हो रहा है।

स्वीकृतियां निश्चय-यक सबूत नहीं हैं किन्तु विवंध कर सकती हैं।

31. स्वीकृतियां, स्वीकृत विषयों का निश्चायक सबूत नहीं हैं, किन्तु ऐसे स्मिन्पश्चात् अन्तविष्ट उपबन्धों के अधीन विवंध के रूप में प्रवर्तित हो सकेंगी।

उन व्यक्तियों के कथन, जिनमें साक्ष्य में बुलाया नहीं जा सकता

32. सुसंगत तथ्यों के लिखित या मौखिक कथन, जो ऐसे व्यक्ति द्वारा किए गए थे, जो मर गया है या भिल नहीं सकता है या जो साक्ष्य देने के लिए असमर्थ हो गया है या जिसकी हाजिरी इतने विलम्ब या व्यय के बिना उपाप्त नहीं की जा सकती, जितना मानले की परिस्थितियों में व्यापालय को अव्यक्तियुक्त प्रतीत होता है, निम्नलिखित दशाओं में स्वयमेव सुसंगत हैं—

(1) जब कि वह कथन किसी व्यक्ति द्वारा अपनी मृत्यु के कारण के बारे में या उस संघर्षहार की किसी परिस्थिति के बारे में किया गया है जिसके फलस्वरूप उसकी मृत्यु हुई, तब उन मामलों में, जिनमें उन व्यक्ति की मृत्यु का कारण प्रश्नगत होता,

ऐसे कथन सुसंगत हैं, जाहे उस व्यक्ति को, जिसने उन्हें किया है, उस समय जब वे किए गए थे मृत्यु की प्रत्याशांका थी या नहीं और जाहे उस कार्यवाही की, जिसमें उस व्यक्ति की मृत्यु का कारण प्रश्नगत होता है, प्रकृति केसी ही क्यों न हो।

(2) जब कि वह कथन ऐसे व्यक्ति द्वारा कारबार के मामूली अनुक्रम में किया गया था तथा विशेषतः जब कि वह, उसके द्वारा कारबार के मामूली अनुक्रम में या वृत्तिक कर्तव्य के निर्वहन में रखी जाने वाली पुस्तकों में उसके द्वारा की गई किसी प्रविष्टि या किए गए ज्ञापन के रूप में है, अथवा उसके द्वारा धन, माल, प्रतिभूतियों या किसी भी किसम की सम्पत्ति की प्राप्ति की लिखित या हस्ताक्षरित अभिस्वीकृति है, अथवा आणिज्य में उपयोग में आने वाली उसके द्वारा लिखित या हस्ताक्षरित किसी दस्तावेज के रूप में है अथवा किसी पत्र या अन्य इस्तावेज की तारीख के रूप में है, जो कि उसके द्वारा प्राप्तः दिनांकित, लिखित या हस्ताक्षरित की जाती थी।

(3) जब कि वह कथन उसे करने वाले व्यक्ति के धनसम्बन्धी या साम्पत्तिक हित के विशद हैं या जब कि, यदि वह सत्य हो, तो उसके कारण उस पर दाण्डिक अभियोजन या नुकसानी का बाद आया या सकता है या आया जा सकता था।

(4) जब कि उस कथन में उपर्युक्त व्यक्ति की राय किसी ऐसे लोक अधिकार या रुढ़ि अथवा लोक या साधारण हित के विषय के अस्तित्व के बारे में है, जिसके अस्तित्व से, यदि वह अस्तित्व में होता तो उससे उस व्यक्ति का अधिगत होना सम्भाव्य होता और जब कि ऐसा कथन ऐसे किसी अधिकार, रुढ़ि या बात के बारे में किसी संविवाद के उत्पन्न होने से पहले किया गया था।

(5) जब कि वह कथन किन्हीं ऐसे व्यक्तियों के थीच रक्त, विवाह या वस्तकप्रहण पर आधारित किसी नातेदारी के अस्तित्व के सम्बन्ध में है, जिन व्यक्तियों की रक्त, विवाह, या वस्तकप्रहण पर आधारित नातेदारी के बारे में उस व्यक्ति के पास, जिस ने वह कथन किया है, ज्ञान के विशेष साधन थे और जब कि वह कथन विवादग्रस्त प्रश्न के उठाए जाने से पूर्व किया गया था।

वे दशाएं जिनमें उस व्यक्ति द्वारा सुसंगत तथ्य का किया गया कथन सुसंगत है, जो मर गया है या भिल नहीं सकता इत्यादि;

जब कि वह मृत्यु के कारण से सम्बन्धित है;

अथवा कारबार के अनुक्रम में किया गया है;

अथवा करने वाले के हित के विशद हैं;

अथवा लोक अधिकार या रुढ़ि के बारे में या साधारण हित के विषयों के बारे में कोई राय देता है;

अथवा नातेदारी के अस्तित्व से सम्बन्धित है;

अथवा कूटुम्बिक भातों से सम्बन्धित विल या विलेख में किया गया है;

अथवा धारा 13, छण्ड (क) में वर्णित संव्यवहार से सम्बन्धित दस्तावेज में किया गया है;

अथवा कई व्यक्तियों द्वारा किया गया है और प्रश्नगत बात से सुसंगत भावनाएं अभिव्यक्त करता है।

(6) जब कि वह कथन मूल व्यक्तियों के बीच रखा, विवाह या इत्तम-ग्रहण पर आधारित किसी नातेदारी के अस्तित्व के सम्बन्ध में है और उस कूटुम्ब की बातों से, जिसका ऐसा मूल व्यक्ति अंग था, सम्बन्धित किसी विल या विलेख में या किसी कुटुम्ब-विशेषताएँ थीं या किसी समाधिप्रस्तर, कुटुम्ब-विवाह या अन्य चीज पर जिस पर ऐसे कथन प्रायः किए जाते हैं, किया गया है, और जब कि ऐसा कथन विवादप्रस्त विवादप्रस्त के उठाए जाने से पूर्व किया गया था।

(7) जब कि वह कथन किसी ऐसे विलेख, विल या अन्य दस्तावेज में अन्तविष्ट है, जो किसी ऐसे संव्यवहार से सम्बन्धित है जैसा धारा 13, छण्ड (क) में वर्णित है।

(8) जब कि वह कथन कई व्यक्तियों द्वारा किया गया था और प्रश्नगत बात में सुसंगत उनकी भावनाओं या धारणाओं को अभिव्यक्त करता है।

दृष्टांत

(क) प्रश्न यह है कि क्या क की हत्या वा द्वारा की गई थी, अथवा क की मृत्यु किसी संव्यवहार में हुई थतियों से हुई है, जिसके अनुक्रम में उससे बलात्संग किया गया था। प्रश्न यह है कि क्या उससे वा द्वारा बलात्संग किया गया था, अथवा

प्रश्न यह है कि क्या क, वा द्वारा ऐसी परिस्थितियों में मारा गया था कि क की विधवा द्वारा वा पर वाद लाया जा सकता है।

अपनी मृत्यु के कारण के बारे में क द्वारा किए गए वे कथन, जो उसने क्रमशः विचाराधीन हत्या, बलात्संग और अनुयोज्य दोष को निर्देशित करते हुए किए हैं, सुसंगत तथ्य हैं।

(ख) प्रश्न क के जन्म की तारीख के बारे में है।

एक मूल शास्त्रिकिस्तक की अपने कारबार के मामूली अनुक्रम में नियमित रूप से रखी जाने वाली डायरी में इस कथन की प्रविष्टि कि अमुक दिन उसने क की माता की परिचर्या की और उसे पुत्र का प्रसव कराया सुसंगत तथ्य है।

(ग) प्रश्न यह है कि क्या क अमुक दिन कलकत्ते में था।

कारबार के मामूली अनुक्रम में नियमित रूप से रखी गई एक मूल सालिसिटर की डायरी में यह कथन कि अमुक दिन वह सालिसिटर कलकत्ते में एक वर्णित स्थान पर विनिविष्ट कारबार के बारे में विचार-विमर्श करने के प्रयोजनार्थ के पास रहा सुसंगत तथ्य है।

(घ) प्रश्न यह है कि क्या कोई पोत मुम्बई बन्दरगाह से अमुक दिन रवाना हुआ।

किसी बाणिज्यिक फर्म के, जिसके द्वारा वह पोत भाड़े पर लिया गया था, मूल भागीदार द्वारा लन्दन स्थित अपने समर्पकियों को, जिन्हें वह

स्थोरा परेशित किया गया था, यह कथन करने वाला पत्र कि पोत मुम्बई बन्दरगाह से अमुक दिन चल दिया सुसंगत तथ्य है।

(अ) प्रश्न यह है कि क्या क को अमुक भूमि का भाटक दिया गया था।

क के मृत अभिकर्ता का क के नाम पत्र, जिसमें यह कथन है कि उसने क के निमित्त भाटक प्राप्त किया है और वह उसे क के आदेशाधीन रखे हुए है सुसंगत तथ्य है।

(ब) प्रश्न यह है कि क्या क और ख का विवाह वैधरूप से हुआ था।

एक मृत पादरी का यह कथन कि उसने उसका विवाह ऐसी परिस्थितियों में कराया था, जिनमें उसका कराना अपराध होता, सुसंगत है।

(छ) प्रश्न यह है कि क्या एक व्यक्ति क ने, जो मिल नहीं सकता, अमुक दिन एक पत्र लिखा था। यह तथ्य कि उसके द्वारा लिखित एक पत्र पर उस दिन की तारीख दिनांकित है सुसंगत है।

(ज) प्रश्न यह है कि किसी पोत के घवास का कारण क्या है।

कप्तान द्वारा, जिसकी हाजिरी उपाप्त नहीं की जा सकती, दिया गया प्रसाक्षय सुसंगत तथ्य है।

(झ) प्रश्न यह है कि क्या अमुक सड़क सोक मार्ग है।

ग्राम के मृत ग्रामणी क के द्वारा किया गया कथन कि वह सड़क सोक मार्ग है सुसंगत तथ्य है।

(अ) प्रश्न यह है कि विशिष्ट बाजार में अमुक दिन अनाज की क्या कीमत थी। एक मृत बनिये द्वारा अपने कारबारे के मामूली अनुक्रम में किया गया कीमत का कथन सुसंगत तथ्य है।

(ट) प्रश्न यह है कि क्या क, जो मर चुका है, ख का पिता था। क द्वारा किया गया यह कथन कि ख उसका पुत्र है सुसंगत तथ्य है।

(ठ) प्रश्न यह है कि क के जन्म की तारीख क्या है।

क के मृत पिता द्वारा किसी मिश्र को लिखा हुआ पत्र, जिसमें यह बताया गया है कि क का जन्म अमुक दिन हुआ, सुसंगत तथ्य है।

(ड) प्रश्न यह है कि क्या और कब क और ख का विवाह हुआ था।

ख के मृत पिता द्वारा किसी याददाश्त पुस्तक में अपनी पुत्री का क के साथ अमुक तारीख को विवाह होने की प्रविष्टि सुसंगत तथ्य है।

(इ) दुकान की बिड़की में अभिदर्शित रंगित उपहासांकन में अभिव्यक्त अपमानलेख के लिए ख पर क वाद लाता है। प्रश्न उपहासांकन की समरूपता तथा उसके अपमानलेखीय प्रकृति के बारे में है। इन बातों पर दर्शकों की भीड़ की टिप्पणियां साबित की जा सकेंगी।

किसी साक्ष्य में कथित तथ्यों की सत्यता को पश्चात्-वर्ती कार्यवाही में साखित करने के लिए उस साक्ष्य की सु-संगति।

33. वह साक्ष्य, जो किसी साक्षी ने किसी न्यायिक कार्यवाही में, या विधि द्वारा उसे लेने के लिए प्राधिकृत किसी व्यक्ति के समक्ष दिया है, उन तथ्यों की सत्यता को, जो उस साक्ष्य में कथित है, किसी पश्चात्-वर्ती न्यायिक कार्यवाही में या उसी न्यायिक कार्यवाही के आगामी प्रत्रम में साखित करने के प्रयोजन के लिए तब सुरंगत है, जब फिर वह साक्षी भर गया है या मिल नहीं सकता है या वह साक्ष्य देने के लिए असमर्थ है या प्रतिपक्षी द्वारा उसे पहुँच के बाहर कर दिया गया है अथवा यदि उसकी उपस्थिति इतने विलम्ब या व्यय के बिना, जितना कि मालौटी की परिस्थितियों में न्यायालय अधिकृत-युक्त समझता है, अभिप्राप्त नहीं की जा सकती;

परन्तु यह तब अब कि—

वह कार्यवाही उन्हीं पक्षकारों या उनके हित प्रतिनिधियों के बीच में थी,

प्रथम कार्यवाही में प्रतिपक्षी को प्रतिपरीक्षा का अधिकार और अव-सर था,

विवाद प्रश्न प्रथम कार्यवाही में सारतः वही थे जो द्वितीय कार्यवाही में हैं।

स्पष्टीकरण—दाइडक विवारण या जांच इस धारा के अर्थ के अन्तर्गत अभियोजक और अभियुक्त के बीच कार्यवाही समझी जाएगी।

विशेष परिस्थितियों में किए गए कथन

लेखा पुस्तकों की प्रविष्टियाँ कभी सुरंगत हैं।

34. कारबार के अन्त्रम में नियमित रूप से रखी गई लेखा पुस्तकों की प्रविष्टियाँ, जब कभी वे ऐसे विषय का निर्देश करती हैं जिसमें न्यायालय को जांच करनी है, सुरंगत हैं, किन्तु अकेले ऐसे कथन ही किसी व्यक्ति को दायित्व से भारित करने के लिए पर्याप्त साक्ष्य नहीं होंगे।

दृष्टांत

वे पर क 1000 रुपयों के लिए वाद लाता है और अपनी लेखा वहियों की वे प्रविष्टियाँ दर्शित करता है, जिनमें वे इस रकम के लिए उसका छहनी दर्शित किया गया है। ये प्रविष्टियाँ सुरंगत हैं किन्तु क्रृण साखित करने के लिए अन्य साक्ष्य के बिना पर्याप्त नहीं हैं।

कर्तव्य पालन में की गई लोक अभिलेख की प्रविष्टियों की सुरंगत।

35. किसी लोक या अन्य राजकीय पुस्तक, रजिस्टर या अभिलेख में की गई प्रविष्टि, जो किसी विवाद्यक या सुरंगत तथ्य का कथन करती है और किसी लोक सेवक द्वारा अपने पदीय कर्तव्य के निर्वहन में या उस देश की, जिसमें ऐसी पुस्तक, रजिस्टर या अभिलेख रखा जाता है, विधि द्वारा विशेष रूप से व्यादिष्ट कर्तव्य के पालन में किसी अन्य व्यक्ति द्वारा की गई है, स्वयं सुरंगत तथ्य है।

मानवित्रों, चाटों, और रेखाओं के कथनों की सुरंगत।

36. विवाद्यक तथ्यों या सुरंगत तथ्यों के वे कथन, जो प्रकाशित मान-वित्रों या चाटों में, जो लोक विक्रय के लिए साधारणतः प्रस्थापित किए जाते हैं, अथवा केन्द्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार के प्राधिकार के अधीन बनाए गए मानवित्रों या रेखाओं में, किए गए हैं, उन विषयों के

बारे में, जो ऐसे मानचित्रों, चार्टों या रेखांकों में प्रायः रूपित या कथित होते हैं, स्वयं सुसंगत तथ्य हैं।

37. जब कि न्यायालय को किसी लोक प्रकृति के तथ्य के अस्तित्व के बारे में राय बनानी है, तब यूनाइटेड किंगडम की पार्लमेन्ट के एकट में या किसी केन्द्रीय अधिनियम, प्रान्तीय अधिनियम या राज्य अधिनियम में या शासकीय राजपत्र में प्रकाशित किसी सरकारी अधिसूचना या काउन रिप्रेजेन्टेटिव द्वारा की गई अधिसूचना में या लन्दन गजट या हिज़ मजेस्टी के किसी डोमेनियन, उपनिवेश या कङ्गारीन क्षेत्र का सरकारी राजपत्र तात्पर्यित होने वाले किसी मुद्रित पत्र में अन्तर्विण्ट परिवर्णन में किया गया उसका कोई कथन सुसंगत नह्य है।

38. जब कि न्यायालय को किसी देश की विधि के बारे में राय बनानी है, तब ऐसी विधि का कोई भी कथन, जो ऐसी किसी पुस्तक में अन्तर्विण्ट है जो ऐसे देश की सरकार के प्राधिकार के अधीन मुद्रित या प्रकाशित और ऐसी किसी विधि को अन्तर्विण्ट करने वाली तात्पर्यित है और ऐसे देश के न्यायालयों के किसी विनियंत्र की कोई गिरोह, जो ऐसी व्यवस्थाओं की रिपोर्ट तात्पर्यित होने वाली किसी पुस्तक में अन्तर्विण्ट है, सुसंगत है।

किन्हीं अधिनियमों या अधिसूचनाओं में अन्तर्विण्ट लोक प्रकृति के तथ्य के बारे में कथन की सुसंगति।

विधि की पुस्तकों में अन्तर्विण्ट किसी विधि के कथनों की सुसंगति।

किसी कथन में से कितना साबित किया जाए

39. जब कि कोई कथन, जिसका साक्ष्य दिया जाता है, किसी बुहत्तर कथन का या किसी वातचीत का भाग है या किसी एकल वस्तावेज़ का भाग है या किसी ऐसी दस्तावेज़ में अन्तर्विण्ट है, जो किसी पुस्तक का अथवा पत्रों या कागज-पत्रों की संस्कृत आवली का भाग है, तब उस कथन, वातचीत, दस्तावेज़, पुस्तक अथवा पत्रों या कागज-पत्रों की आवली के उतने का ही, न कि उतने से अधिक का, साक्ष्य दिया जाएगा जितना न्यायालय उस कथन की प्रकृति और प्रभाव को तथा उन परिस्थितियों को, जिनके अधीन वह किया गया था, पूर्णतः समझने के लिए उस विशिष्ट मामले में आवश्यक विचार करता है।

जब कि कथन किसी बातचीत, दस्तावेज़, पुस्तक अथवा पत्रों या कागज-पत्रों की आवली का भाग हो, तब वह साक्ष्य हिया जाए।

न्यायालयों के निर्णय कम सुसंगत हैं

40. किसी ऐसे निर्णय, आदेश या डिक्री का अस्तित्व, जो किसी न्यायालय को किसी वाद के मंज़ान से या कोई विचारण करने से विधि द्वारा निवारित करता है, सुसंगत तथ्य है जब कि प्रश्न यह हो कि क्या ऐसे न्यायालय को ऐसे वाद का मंज़ान या ऐसा विचारण करता चाहिए।

द्वितीय वाष या विचारण के आरणार्थ पूर्व निर्णय सुसंगत हैं।

41. किसी सक्षम न्यायालय के प्रोबेट-विषयक, विवाह-विषयक, नावधिकरण-विषयक या दिवाला-विषयक अधिकारिता के प्रयोग में दिया हुआ अन्तिम निर्णय, आदेश या डिक्री, जो किसी व्यक्ति को, या से, कोई विधिक हैसियत प्रदान करती या ले लेती है या जो सर्वतः न कि किसी विनिर्दिष्ट चीज का हक्कदार घोषित करती है, तब सुसंगत है जब कि किसी विनिर्दिष्ट चीज पर किसी ऐसी व्यक्ति के हक्क का अस्तित्व सुसंगत है।

प्रोबेट हत्यादि विषयक अधिकारिता के किन्हीं निर्णयों की सुसंगति।

ऐसा निर्णय, आदेश या डिक्टी इस बात का निश्चायक सबूत है—

कि कोई विधिक हैसियत, जो वह प्रदत्त करती है, उस समय प्रोद्भूत हुई जब ऐसा निर्णय, आदेश या डिक्टी प्रवर्तन में आई,

कि कोई विधिक हैसियत, जिसके लिए वह किसी व्यक्ति को हक्कदार घोषित करती है उस व्यक्ति को उस समय प्रोद्भूत हुई जो समय ऐसे निर्णय, आदेश या डिक्टी द्वारा घोषित है कि उस समय वह उस व्यक्ति को प्रोद्भूत हुई,

कि कोई विधिक हैसियत, जिसे वह किसी ऐसे व्यक्ति से ले लेती है उस समय खत्म हुई जो समय ऐसे निर्णय, आदेश या डिक्टी द्वारा घोषित है कि उस समय से वह हैसियत खत्म हो गई थी या खत्म हो जानी चाहिए,

और कि कोई चीज जिसके लिए वह किसी व्यक्ति को ऐसा हक्कदार घोषित करती है उस व्यक्ति की उस समय सम्पत्ति थी जो समय ऐसे निर्णय, आदेश या डिक्टी द्वारा घोषित है कि उस समय से वह चीज उसकी सम्पत्ति थी या होनी चाहिए।

धारा 41 में वर्णित से भिन्न निर्णयों, आदेशों या डिक्टीयों की सुसंगत और प्रभाव ।

4.2. वे निर्णय, आदेश या डिक्टीयाँ, जो धारा 41 में वर्णित से भिन्न हैं, यदि वे जोच में सुसंगत लोक प्रकृति की बातों से सम्बन्धित हैं, तो वे सुसंगत हैं, किन्तु ऐसे निर्णय, आदेश या डिक्टीयाँ उन बातों का निश्चायक सबूत नहीं हैं जिनका वे कथन करती हैं।

दृष्टांत

क अपनी भूमि पर अतिचार के लिए ख पर बाद लाता है। ख उस भूमि पर मार्ग के लोक अधिकार का अस्तित्व अभिकथित करता है जिसका क प्रत्याख्यान करता है।

क द्वारा ग के विश्वद्व उसी भूमि पर अतिचार के लिए बाद में, जिसमें ग ने उसी मार्गाधिकार का अस्तित्व अभिकथित किया था, प्रतिवादी के पश्च में डिक्टी का अस्तित्व सुसंगत है किन्तु वह इस बात का निश्चायक सबूत नहीं है कि वह मार्गाधिकार अस्तित्व में है।

धाराओं 40, 41 और 42 में वर्णित से भिन्न निर्णय आदि कब सुसंगत हैं।

4.3. धाराओं 40, 41 और 42 में वर्णित से भिन्न निर्णय, आदेश या डिक्टीयाँ विसंगत हैं जब तक कि ऐसे निर्णय, आदेश या डिक्टी का अस्तित्व विवाद्यक तथ्य न हो या वह इस अधिनियम के किसी अन्य उपबन्ध के अन्तर्गत सुसंगत न हो।

दृष्टांत

(क) क और ख किसी अपमान-लेख के लिए, जो उनमें से हर एक पर लांछना लगता है, ग पर पृथक्-पृथक् बाद लाते हैं। हर एक मामले में ग कहता है कि वह बात, जिसका अपमान-लेखीय होना अभिकथित है, सत्य है और परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि वह अधिसम्भाव्यतः या तो हर एक मामले में सत्य है या किसी में नहीं।

ग के विश्वद्व क इस आधार पर कि ग अपना न्यायोचित साक्षित करने में असफल रहा नुकसानी की डिक्टी अभिप्राप्त करता है। यह तथ्य ख और ग के बीच विसंगत है।

(ख) का अपनी पत्नी ग के साथ जारकर्म करने के लिए ख का अभियोजन करता है।

ख इस बात का प्रत्याच्छान करता है कि ग की पत्नी है किन्तु न्यायालय ख को जारकर्म के लिए दोषसिद्ध करता है।

तत्पश्चात् क के जीवन काल में ख के साथ विवाह करने पर द्विविवाह के लिए ग अभियोजित की जाती है। ग कहती है कि वह क की पत्नी कभी नहीं थी।

ख के विशद्ध दिया गया निर्णय ग के विशद्ध विसंगत है।

(ग) ख का अभियोजन क इसलिए करता है कि उसने क की गाय चुराई है। ख दोषसिद्ध किया जाता है।

तत्पश्चात् क उस गाय के लिए, जिसे ख ने दोषसिद्ध होने से पूर्व ग को बेच दिया था, ग पर वाद लाता है। ख के विशद्ध वह निर्णय क और ग के बीच विसंगत है।

(घ) क ने ख के विशद्ध भूमि के कङ्कणे की डिक्टी अभिप्राप्त की है। ख का पुत्र ग परिणामस्वरूप क की हत्या करता है।

उम निर्णय का अस्तित्व अपराध का हेतु दर्शित करने के नाते सुसंगत है।

(ङ) क पर चोरी का और चोरी के लिए पूर्व दोषभिड़ि का आरोप है। पूर्व दोषभिड़ि विवाद्यक तथ्य होने के नाते सुसंगत है।

(च) ख की हत्या के लिए क विवारित किया जाता है। यह तथ्य कि ख ने क पर अपमान-सेवा के लिए अभियोजन चलाया था और क दोषसिद्ध और दण्डित किया गया था, धारा 8 के अधीन विवाद्यक तथ्य का हेतु दर्शित करने के नाते सुसंगत है।

44. बाद या अन्य कार्यवाही का कोई भी पक्षकार यह दर्शित कर सकता कि कोई निर्णय, आदेश या डिक्टी, जो धारा 40, 41 या 42 के अधीन सुसंगत है और जो प्रनिपक्षी द्वारा भावित की जा चुकी है, ऐसे न्यायालय द्वारा दी गई थी जो उसे देने के लिए अक्षम या या कपट या बुस्सन्धि द्वारा अभिप्राप्त की गई थी।

अन्य व्यक्तियों की रायें कम सुसंगत हैं

45. जब कि न्यायालय को विदेशी विधि की या विज्ञान की या कला की किसी बात पर या हस्तलेख या अंगुलिचिह्नों की अनन्यता के बारे में राय अनानी हो, तब उम बात पर ऐसी विदेशी विधि, विज्ञान या कला में या हस्तलेख या अंगुलिचिह्नों की अनन्यता विषयक प्रश्नों में, विशेष कुशल व्यक्तियों की रायें सुसंगत तथ्य हैं।

ऐसे अक्षित विशेषज्ञ कहलाते हैं।

बृष्टांत

(क) प्रश्न यह है कि क्या क की मृत्यु विष द्वारा कारित हुई।

जिस विषके बारे में अनुमान है कि उससे क की मृत्यु हुई है, उग विष से पैदा हुए लक्षणों के बारे में विशेषज्ञों की रायें सुसंगत हैं।

निर्णय अभिप्राप्त करने में कपट या दुसंधि अथवा न्यायालय की अक्षमता साबित की जा सकेगी।

विशेषज्ञों की रायें।

(ख) प्रश्न यह है कि क्या क अमुक कार्य करने के समय चित्तविकृति के कारण उस कार्य की प्रकृति, या यह कि जो कुछ वह कर रहा है वह दोष-पूर्ण या विधि के प्रतिकूल है, जानने में असमर्थ था।

इस प्रश्न पर विशेषज्ञों की रायें सुसंगत हैं कि क्या क द्वारा प्रदर्शित लक्षणों से चित्तविकृति सामान्यतः दर्शित होती है तथा क्या ऐसी चित्त-विकृति लोगों को उन कार्यों की प्रकृति, जिन्हें वे करते हैं, या यह कि जो कुछ वे कर रहे हैं वह या तो दोषपूर्ण या विधि के प्रतिकूल है, जानने में प्रायः असमर्थ बना देती है।

(ग) प्रश्न यह है कि क्या अमुक दस्तावेज क द्वारा लिखी गई थी। एक अन्य दस्तावेज पेश की जाती है जिसका क द्वारा लिखा जाना सामित या स्वीकृत है।

इस प्रश्न पर विशेषज्ञों की रायें सुसंगत हैं कि क्या दोनों दस्तावेजों एक ही व्यक्ति द्वारा या विभिन्न व्यक्तियों द्वारा लिखी गई थीं।

विशेषज्ञों की रायों से सम्बन्धित तथ्य।

46. वे तथ्य, जो अन्यथा सुसंगत नहीं हैं, सुसंगत होते हैं यदि वे विशेषज्ञों की रायों का समर्थन करते हों या उनसे असंगत हों जब कि ऐसी रायें सुमंगत हों।

बृष्टांस

(क) प्रश्न यह है कि क्या क को अमुक विष दिया गया था।

यह तथ्य सुसंगत है कि अन्य व्यक्तियों में भी, जिन्हें वह विष दिया गया था, अमुक लक्षण प्रकट हुए थे जिनका उस विष के लक्षण होना विशेषज्ञ प्रतिज्ञात या प्रत्याख्यात करते हैं।

(ख) प्रश्न यह है कि क्या किसी अन्दरगाह में कोई बाधा अमुक समुद्र-भित्ति स कारित हुई है।

यह तथ्य सुसंगत है कि अन्य अन्दरगाह, जो अन्य दूषियों से वैसे ही स्थित थे, किन्तु जहाँ ऐसी समुद्रभित्तियाँ नहीं थीं, लगभग उसी समय बाधित होने लगे थे।

हृस्ताक्षरण के बारे में राय कब सुसंगत है।

47. जब कि न्यायालय को राय बनानी हो कि कोई दस्तावेज किस व्यक्ति ने लिखी या हृस्ताक्षरित की थी, तब उस व्यक्ति के हृस्ताक्षरण से, जिसके द्वारा वह लिखी या हृस्ताक्षरित की गई अनुमानित की जाती है, परिचित किसी व्यक्ति की यह राय कि वह उस व्यक्ति द्वारा लिखी या हृस्ताक्षरित की गई थी अथवा लिखी या हृस्ताक्षरित नहीं की गई थी सुसंगत तथ्य है।

स्पष्टीकरण—कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के हृस्ताक्षरण से परिचित तब कहा जाता है, जब कि उसने उस व्यक्ति को लिखते देखा है या जब कि स्वयं अपने द्वारा या अपने प्राधिकार के अधीन सिखित और उस व्यक्ति को सम्बोधित दस्तावेज के उत्तर में उस व्यक्ति द्वारा लिखी हुई तात्पर्यत होने वाली दस्तावेजों प्राप्त की हैं, या जब कि कारबार के मामूली अनुक्रम में उस व्यक्ति द्वारा लिखी हुई तात्पर्यत होने वाली दस्तावेजों उसके समक्ष बराबर रखी जाती रही हैं।

दृष्टीत

प्रश्न यह है कि क्या अमुक पत्र लन्दन के एक व्यापारी के हस्तलेख में है।

वह कलकत्ते में एक व्यापारी है जिसने क को पत्र सम्बोधित किए हैं तथा उसके द्वारा लिखे हुए तात्पर्यित होने वाले पत्र प्राप्त किए हैं। ग, वह का लिपिक है, जिसका कर्तव्य वह के पत्र-व्यवहार को देखना और फाइल करना था। वह का दलाल घ है जिसके समक्ष क द्वारा लिखे गए तात्पर्यित होने वाले पत्रों को उनके बारे में उससे सलाह करने के लिए वह बराबर रखा करता था।

वह, वह और घ की इस प्रश्न पर रायें कि क्या वह पत्र क के हस्तलेख में है सुसंगत हैं, यथापि न तो वह ने, न ग ने, न घ ने, क को लिखते हुए कभी देखा था।

48. जब कि न्यायालय को किसी साधारण रुढ़ि या अधिकार के अस्तित्व के बारे में राय बनानी हो, तब ऐसी रुढ़ि या अधिकार के अस्तित्व के बारे में उन व्यक्तियों की रायें सुसंगत हैं, जो यदि उसका अस्तित्व होता हो सम्भाव्यतः उसे जानते होते।

स्पष्टीकरण—“साधारण रुढ़ि या अधिकार” के अन्तर्गत ऐसी रुढ़ियाँ या अधिकार आसे हैं जो व्यक्तियों के किसी काफी बड़े वर्ग के लिए ज्ञानान्वय हैं।

दृष्टीत

किसी विशिष्ट ग्राम के निवासियों का अमुक कुप के पानी का उपयोग करने का अधिकार इस धारा के अर्थ के अन्तर्गत साधारण अधिकार है।

49. जब कि न्यायालय को—

मनुष्यों के किसी निकाय या कुटुम्ब की प्रथाओं या सिद्धान्तों के, किसी धार्मिक या खैराती प्रतिष्ठान के संविधान और शासन के, अथवा विशिष्ट जिले में या विशिष्ट वर्गों के लोगों द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले शब्दों या पदों के अर्थों के,

बारे में राय बनानी हो, तब उनके सम्बन्ध में ज्ञान के विशेष साधन रखने वाले व्यक्तियों की रायें सुसंगत तथ्य हैं।

50. जब कि न्यायालय को एक व्यक्ति की किसी अन्य के साथ नातेशारी के बारे में राय बनानी हो, तब ऐसी नातेशारी के अस्तित्व के बारे में ऐसे किसी व्यक्ति की आचरण द्वारा अभिव्यक्त राय, जिसके पास कुटुम्ब के सदस्य के रूप में या अन्यथा उस विषय के संबंध में ज्ञान के विशेष साधन हैं, सुन्तंगत तथ्य है;

1869 का 4 भारतीय विचारेद अधिनियम, 1869 के अधीन कार्यवाहियों में या भारतीय दण्ड संहिता, 1860 की धारा 494, 495, 497 या 498 के

1860 का 45 अधीन अभियोजनों में ऐसी राय विवाह सामित करने के लिए पर्याप्त नहीं होगी।

अधिकार या रुढ़ि के अस्तित्व के बारे में रायें कब सुसंगत हैं।

प्रथाओं, सिद्धान्तों आदि के बारे में रायें कब सुसंगत हैं।

नातेशारी के बारे में राय कब सुसंगत है।

बृष्टीत

(क) प्रश्न यह है कि क्या क और ख विवाहित थे।

यह तथ्य कि वे अपने मित्रों द्वारा पति और पत्नी के रूप में प्रायः स्वीकृत किए जाते थे और उनसे बंसा बरताव किया जाता था सुसंगत है।

(ख) प्रश्न यह है कि क्या क, ख का धर्मज पुत्र है। यह तथ्य कि कुटुम्ब के सदस्यों द्वारा क से सदा उस रूप में बर्ताव किया जाता था सुसंगत है।

51. जब कभी किसी जीवित व्यक्ति की राय सुसंगत है, तब वे आधार भी, जिन पर वह आधारित है, सुसंगत हैं।

बृष्टीस

कोई विशेषज्ञ अपनी राय बनाने के प्रयोजनार्थ किए हुए प्रयोगों का विवरण दे सकता है।

शील कब सुसंगत है

सिविल मामलों में अव्यारोपित आचरण सामिल करने के लिए शील विसंगत है।

दाण्डिक मामलों में पूर्वतन अच्छा शील सुसंगत है।

उत्तर में होने के सिवाय पूर्वतन बुरा शील संसंगत नहीं है।

52. सिविल मामलों में यह तथ्य कि किसी सम्पूर्ण व्यक्ति का शील ऐसा है कि जो उस पर अव्यारोपित किसी आचरण को अधिसम्भाव्य या अनधिसम्भाव्य बना देता है, विसंगत है वहाँ तक के सिवाय जहाँ तक कि ऐसा शील अन्यथा सुसंगत तथ्यों से प्रकट होता है।

53. दाण्डिक कार्यवाहियों में यह तथ्य सुसंगत है कि अभियुक्त व्यक्ति अच्छे शील का है।

54. दाण्डिक कार्यवाहियों में यह तथ्य कि अभियुक्त व्यक्ति बुरे शील का है, विसंगत है, जब तक कि इस बात का साक्ष्य न दिया गया हो कि वह अच्छे शील का है, जिसके दिए जाने की दशा में वह सुसंगत हो जाता है।

स्पष्टीकरण 1—यह धारा उन मामलों को लागू नहीं है जिनमें किसी व्यक्ति का बुरा शील स्वयं विवादित तथ्य है।

स्पष्टीकरण 2—पूर्व दोषसिद्ध बुरे शील के माक्ष्य के रूप में सुसंगत है।

नुकसानी पर प्रभाव डालने वाला शील।

55. सिविल मामलों में, यह तथ्य कि किसी व्यक्ति का शील ऐसा है जिससे नुकसानी की रकम पर जो उसे मिलनी चाहिए प्रभाव पड़ता है, सुसंगत है।

स्पष्टीकरण—धारा 52, 53, 54 और 55 में “शील” शब्द के अन्तर्गत ख्याति और स्वभाव दोनों आते हैं, किन्तु धारा 54 में यथा उपबन्धित के सिवाय केवल साधारण ख्याति व साधारण स्वभाव का ही, न कि ऐसे विशिष्ट कार्यों का, जिनके द्वारा ख्याति या स्वभाव दर्शित हुए थे, साक्ष्य दिया जा सकेगा।

भाग 2

सदूत के विषय में

अध्याय 3

तथ्य, जिनका साबित किया जाना आवश्यक नहीं है

56. जिस तथ्य की न्यायालय न्यायिक अवेक्षा करेगा, उसे साबित करना आवश्यक नहीं है।

57. न्यायालय निम्नलिखित तथ्यों की न्यायिक अवेक्षा करेगा—

- (1) भारत के राज्यक्षेत्र में प्रवृत्त समस्त विधियाँ;
- (2) यूनाइटेड किंगडम की पार्लमेन्ट द्वारा पारित या एतत्प्रचात् पारित किए जाने वाले समस्त पब्लिक ऐक्ट तथा वे समस्त स्थानीय और पर्सनल ऐक्ट, जिनके बारे में यूनाइटेड किंगडम की पार्लमेन्ट ने निर्दिष्ट किया है कि उनकी न्यायिक अवेक्षा की जाए;
- (3) भारतीय सेना, नौसेना या वायुसेना के लिए युद्ध की नियमावली;
- (4) यूनाइटेड किंगडम की पार्लमेन्ट की, भारत की संविधान सभा की, संसद् की तथा किसी प्रान्त या राज्यों में सत्समय प्रवृत्त विधियों के अधीन स्थापित विधानमण्डलों की कार्यवाही का अनुक्रम;
- (5) ग्रेट ब्रिटेन और आधरलैण्ड की यूनाइटेड किंगडम के तत्समय प्रभु का राज्यारोहण और राजहस्ताक्षर;
- (6) वे सब मुद्राएं, जिनकी अंग्रेजी न्यायालय न्यायिक अवेक्षा करते हैं, भारत में के सब न्यायालयों की और केन्द्रीय सरकार या क्राउन रिप्रेजेन्टेटिव के प्राधिकार द्वारा भारत के बाहर स्थापित सब न्यायालयों की मुद्राएं, नावधिकरण और समुद्रीय अधिकारिता वाले न्यायालयों की और नोटरेज पब्लिक की मुद्राएं और वे सब मुद्राएं, जिनका कोई व्यक्ति संविधान या यूनाइटेड किंगडम की पार्लमेन्ट के किसी ऐक्ट या भारत में विधि का बल रखने वाले अधिनियम या विनियम द्वारा उपयोग करने के लिए प्राधिकृत हैं;
- (7) किसी राज्य में किसी लोकपद पर तत्समय आस्तू व्यक्तियों के कोई पदारोहण, नाम, उपाधियाँ, कृत्य और हस्ताक्षर, यदि ऐसे पद पर उनकी नियुक्ति का तथ्य किसी शासकीय राजपत्र में अधिसूचित किया गया हो;
- (8) भारत सरकार द्वारा मान्यताप्राप्त हर राज्य या प्रभु का अस्तित्व, उपाधि और राष्ट्रीय छवज;
- (9) समय के प्रभाग, पृथ्वी के भौगोलिक प्रभाग तथा यासकीय राजपत्र में अधिसूचित लोक उत्सव, उपवास और अवकाश-दिन;

न्यायिक रूप से अवै-क्षणीय तथ्य साबित करना आवश्यक नहीं है।

वे तथ्य, जिनकी न्यायिक अवेक्षा न्यायालय को करनी होगी।

- (10) भारत सरकार के आधिपत्य के अधीन राज्यक्षेत्र;
- (11) भारत सरकार और अन्य किसी राज्य या व्यक्तियों के निकाय के बीच संघर्ष का प्रारम्भ, चालू रहना और पर्यवर्तन;
- (12) न्यायालय के सदस्यों और आकिसरों के हथा उनके उपर्युक्तों और अधीनस्थ आकिसरों और सहायकों के और उसकी आदेशिकाओं के मिष्ठान में कार्य करने वाले सब आकिसरों के भी, तथा सब अधिवक्ताओं, अटनियों, प्रोफेटरों, वकीलों, प्लीडरों और उसके समक्ष उपसज्जात होने या कार्य करने के लिए किसी विधि द्वारा प्राधिकृत अन्य व्यक्तियों के नाम,
- (13) भूमिया समुद्र पर मार्ग का नियम।

इन सभी मामलों में, तथा लोक इतिहास, साहित्य, विज्ञान या कला के सब विषयों में भी न्यायालय समुपर्युक्त निवेश पुस्तकों या दस्तावेजों की सहायता ले सकेगा।

यदि न्यायालय से किसी तथ्य की न्यायिक व्यवेक्षा करने की किसी व्यक्ति द्वारा प्रार्थना की जाती है, तो यदि और जब तक वह व्यक्ति कोई ऐसी पुस्तक या दस्तावेज पेश न कर दे, जिसे ऐसा न्यायालय अपने को ऐसा करने को समर्थ बनाने के लिए आवश्यक समझता है, न्यायालय ऐसा करने से इन्कार कर सकेगा।

स्वीकृत तथ्यों को साबित करना आवश्यक नहीं है।

58. किसी ऐसे तथ्य को किसी कार्यवाही में साधित करना आवश्यक नहीं है, जिसे उस कार्यवाही के पक्षकार या उनके अभिकर्ता सुनवाई पर स्वीकार करने के लिए सहमत हो जाते हैं या जिसे वे सुनवाई के पूर्व किसी स्वहस्ताक्षरित लेख द्वारा स्वीकार करने के लिए सहमत हो जाते हैं या जिसके बारे में अभिवचन नम्बन्धी किसी तस्वीरमय प्रवृत्त नियम के अधीन यह समझ लिया जाता है कि उन्होंने उसे अपने अभिवचनों द्वारा स्वीकार कर लिया है;

परन्तु न्यायालय स्वीकृत तथ्यों का ऐसी स्वीकृतियों द्वारा साबित किए जाने से अन्यथा साबित किया जाना अपने विवकानुसार अपेक्षित कर सकेगा।

अध्याय 4

मौखिक साक्ष्य के विषय में

59. दस्तावेजों की अन्तर्वस्तु के सिवाय सभी तथ्य मौखिक साक्ष्य द्वारा साबित किए जा सकेंगे।

मौखिक साक्ष्य प्रत्यक्ष होना चाहिए।

60. मौखिक साक्ष्य, समस्त अवस्थाओं में आहे वे कैसी ही हों, प्रत्यक्ष ही होगा, अर्थात्—

यदि वह किसी देखे जा सकने वाले तथ्य के बारे में है, तो वह देखे साक्षी का ही साक्ष्य होगा जो कहता है कि उसमें उसे देखा;

यदि वह किसी सुने जा सकने वाले तथ्य के बारे में है, तो वह ऐसे साक्षी का ही साक्ष्य होगा जो कहता है कि उसने उसे सुना;

यदि वह किसी ऐसे तथ्य के बारे में है जिसका किसी अन्य इंविय द्वारा या किसी अन्य रीति से बोध हो सकता था, तो वह ऐसे साक्षी का ही साक्ष्य होगा जो कहता है कि उसने उसका बोध उस इंविय द्वारा या उस रीति से किया;

यदि वह किसी राय के, या उन आधारों के, जिन पर वह राय धारित है, बारे में है, तो वह उस व्यक्ति का ही साक्ष्य होगा जो वह राय उन आधारों पर धारण करता है;

परन्तु विशेषज्ञों की रायें, जो सामान्यतः विश्व के लिए प्रस्थापित की जाने वाली किसी पुस्तक में अभिव्यक्त हैं, और वे आधार, जिन पर ऐसी रायें धारित हैं, यदि रचयिता भर गया है, या वह मिल नहीं सकता है या वह साक्ष्य देने के लिए असमर्थ हो गया है या उसे इतने विलम्ब या व्यय के बिना जितना न्यायालय अनुकूल्यकृत समझता है, साक्षी के रूप में बूलाया नहीं जा सकता हो, ऐसी पुस्तकों की पेश करके साक्षित किए जा सकेंगे;

परन्तु यह भी कि यदि मौखिक साक्ष्य दस्तावेज से भिन्न किसी भौतिक चीज के अस्तित्व या दशा के बारे में है, तो न्यायालय, यदि वह ठीक समझे, ऐसी भौतिक चीज का अपने निरीक्षणार्थ पेश किया जाना अपेक्षित कर सकेगा ।

अध्याय 5

दस्तावेजी साक्ष्य के विषय में

61. दस्तावेजों की अन्तर्वस्तु या तो प्राथमिक या द्वितीयिक साक्ष्य दस्तावेजों की अन्तर्वस्तु का सबूत ।

62. प्राथमिक साक्ष्य से न्यायालय के निरीक्षण के लिए पेश की गई दस्तावेजों स्वयं अभिप्रेत है ।

स्पष्टीकरण 1—जहां कि कोई दस्तावेज कई मूल-प्रतियों में निष्पादित है वहां हरएक मूल-प्रति उस दस्तावेज का प्राथमिक साक्ष्य है ।

जहां कि कोई दस्तावेज प्रतिलेख में निष्पादित है और हरएक प्रतिलेख पक्षकारों में से केवल एक पक्षकार या कछ पक्षकारों द्वारा निष्पादित किया गया है, वहां हरएक प्रतिलेख उन पक्षकारों के विरुद्ध, जिन्होंने उसका निष्पादन किया है, प्राथमिक साक्ष्य है ।

स्पष्टीकरण 2—जहां कि अनेक दस्तावेजें एकलगात्मक प्रक्रिया द्वारा बनाई गई हैं जैसा कि मुद्रण, शिला मुद्रण या फोटोचित्रण में होता है, वहां उनमें से हरएक शेष सब की अन्तर्वस्तु का प्राथमिक साक्ष्य है, किन्तु जहां कि वे सब किसी सामान्य मूल की प्रतियों हैं वहां वे मूल की अन्तर्वस्तु का प्राथमिक साक्ष्य नहीं है ।

वृष्टीत

यह दर्शित किया जाता है कि एक ही समय एक ही मूल से मुद्रित अनेक प्लेकार्ड किसी व्यक्ति के कब्जे में रख हैं। इन प्लेकार्डों में से कोई भी एक अन्य किसी की भी अन्तर्वस्तु का प्राथमिक साक्ष्य है किन्तु उनमें से कोई भी मूल की अन्तर्वस्तु का प्राथमिक साक्ष्य नहीं है।

द्वितीयिक साक्ष्य ।

63. द्वितीयिक साक्ष्य से अभिप्रेत है और उसके अन्तर्गत आते हैं—

- (1) एतस्मिन्पश्चात् अन्तर्विष्ट उपबन्धों के अधीन दी हुई प्रमाणित प्रतियां;
- (2) मूल से ऐसी यान्त्रिक प्रक्रियाओं द्वारा, जो प्रक्रियाएँ स्वयं ही प्रति की शुद्धता सुनिश्चित करती हैं, बनाई गई प्रतियां तथा ऐसी प्रतियां से तुलना की हुई प्रतिलिपियां;
- (3) मूल से बनाई गई या तुलना की गई प्रतियां;
- (4) उन पक्षकारों के विश्व, जिन्होंने उन्हें निष्पादित नहीं किया है, दस्तावेजों के प्रतिलेख;
- (5) किसी दस्तावेज की अन्तर्वस्तु का उस व्यक्ति द्वारा, जिसने स्वयं उसे देखा है, दिया हुआ मौखिक वृत्तान्त ।

वृष्टीत

(क) किसी मूल का फोटोचित्र, यद्यपि दोनों की तुलना न की गई हो तथापि यदि यह सावित किया जाता है कि फोटोचित्रित वस्तु मूल थी, उस मूल की अन्तर्वस्तु का द्वितीयिक साक्ष्य है।

(ख) किसी पत्र की वह प्रति, जिसकी तुलना उस पत्र की, उस प्रति से कर ली गई है जो प्रतिलिपि-पंत्र द्वारा तैयार की गई है, उस पत्र की अन्तर्वस्तु का द्वितीयिक साक्ष्य है, यदि यह दर्शित कर दिया जाता है कि प्रतिलिपि-यत्र द्वारा तैयार की गई प्रति मूल से बनाई गई थी।

(ग) प्रति की नकल कर के तैयार की गई किन्तु तत्पश्चात् मूल से तुलना की हुई प्रतिलिपि द्वितीयिक साक्ष्य है किन्तु इस प्रकार तुलना नहीं की हुई प्रति मूल का द्वितीयिक साक्ष्य नहीं है, यद्यपि उस प्रति की, जिससे वह नकल की गई है, मूल से तुलना की गई थी।

(घ) न तो मूल से तुलनाहृत प्रति का मौखिक वृत्तान्त और न मूल के किसी फोटो-चित्र या यत्रकृत प्रति का मौखिक वृत्तान्त मूल का द्वितीयिक साक्ष्य है।

दस्तावेजों का प्राथमिक साक्ष्य द्वारा सामिल किया जाना ।

64. दस्तावेजें एतस्मिन्पश्चात् वर्णित अवस्थाओं के स्थिताय, प्राथमिक साक्ष्य द्वारा सावित करनी होंगी ।

65. किसी दस्तावेज के अस्तित्व, दशा या अन्तर्वस्तु का द्वितीयिक साक्ष्य निम्नलिखित अवस्थाओं में दिया जा सकेगा—

(क) जब कि वह दर्शित कर दिया जाए या प्रतीत होता हो कि मूल ऐसे व्यक्ति के कङ्गे में या शक्त्यधीन है,

जिसके विरुद्ध उस दस्तावेज का साबित किया जाना ईसित है, अथवा जो न्यायालय की आदेशिका की पहुंच के बाहर है, या ऐसी आदेशिका के अध्यधीन नहीं है, अथवा

जो उसे पेश करने के लिए वैध रूप से आवद्ध है,

और जब कि ऐसा व्यक्ति धारा 66 में वर्णित सूचना के पश्चात् उसे पेश नहीं करता है,

(ख) जब कि मूल के अस्तित्व, दशा या अन्तर्वस्तु को उस व्यक्ति द्वारा, जिसके विरुद्ध उसे साबित किया जाना है या उसके द्वितीयिक प्रतिनिधि द्वारा लिखित रूप में स्वीकृत किया जाना साबित कर दिया गया है,

(ग) जब कि मूल नष्ट हो गया है, या खो गया है अथवा जब कि उसकी अन्तर्वस्तु का साक्ष्य देने की प्रस्तावना करने वाला पक्षकार अपने स्वयं के व्यतिक्रम या उपेक्षा से अनुद्भूत अभ्य किसी कारण से उसे युनित्यपूर्त समय में पेश नहीं कर सकता,

(घ) जब कि मूल इस प्रकृति का है कि उसे आसानी से स्थानान्तरित नहीं किया जा सकता,

(ङ) जब कि मूल धारा 74 के अर्थ के अन्तर्गत एक लोक दस्तावेज है,

(च) जब कि मूल ऐसी दस्तावेज है जिसकी प्रमाणित प्रति का साक्ष्य में दिया जाना इस अधिनियम द्वारा या भारत में प्रवृत्त किसी अन्य विधि द्वारा अनुज्ञात है,

(छ) जब कि मूल ऐसे अनेक लेखाओं या अन्य दस्तावेजों से गठित है जिनकी न्यायालय में मुविधापूर्वक परीक्षा नहीं की जा सकती और वह तथ्य जिसे साबित किया जाना है सम्पूर्ण संग्रह का साधारण परिणाम है,

अवस्थाओं (क), (ग) और (घ) में दस्तावेजों की अन्तर्वस्तु का कोई भी द्वितीयिक साक्ष्य ग्राह्य है,

अवस्था (ख) में वह लिखित स्वीकृति प्राप्त है,

अवस्था (ड) या (च) में दस्तावेज की प्रमाणित प्रति ग्राह्य है, किन्तु अन्य किसी भी प्रकार का द्वितीयिक साक्ष्य ग्राह्य नहीं है।

अवस्था (छ) में दस्तावेजों के साधारण परिणाम का साक्ष्य ऐसे किसी व्यक्ति द्वारा दिया जा सकेगा जिसने उन की परीक्षा की है और जो ऐसी दस्तावेजों की परीक्षा करने में कुशल है।

66. धारा 65 खण्ड (क) में निर्दिष्ट दस्तावेजों की अन्तर्वस्तु का द्वितीयिक साक्ष्य तब तक न दिया जा सकेगा जब तक ऐसे द्वितीयिक साक्ष्य देने की प्रस्थानी कारने वाले पक्षकार ने उस पक्षकार को, जिसके कङ्गे में या शक्त्यधीन वह

अवस्थाएं जिनमें
दस्तावेजों के
सम्बन्ध में द्वितीयिक साक्ष्य दिया
जा सकेगा।

पेश करने की
सूचना के बारे में
नियम।

दस्तावेज़ है या उसको अटर्नी या प्लीडर को, उसे पेश करने के लिए ऐसी सूचना, जैसी कि विधि द्वारा विहित है, और यदि विधि द्वारा कोई सूचना विहित नहीं हो तो ऐसी सूचना, जैसी न्यायालय भास्मले की परिस्थितियों के अधीन युक्तियुक्त समझता है, न दे रखा हो ;

परन्तु ऐसी सूचना निम्नलिखित अवस्थाओं में से किसी में अथवा किसी भी अन्य अवस्था में, जिसमें न्यायालय उसके दिए जान से अभिभवित प्रदान कर दे, द्वितीयक साध्य को ग्राह्य बनाने के लिए अपेक्षित नहीं की जाएगी,

- (1) जब कि साबित की जाने वाली दस्तावेज़ स्वयं एक सूचना है,
- (2) जब कि उन्नीसी की भास्मले की प्रकृति से यह जानना ही होगा कि उसे पेश करने की उससे अवेक्षा की जाएगी,
- (3) जब कि यह प्रतीत होता है या साबित किया जाता है कि प्रतिपक्षी ने भूल पर कब्ज़ा कपट या घन द्वारा अभिग्राह कर लिया है,
- (4) जब कि मूल प्रतिपक्षी या उसके अभिकर्ता के पास न्यायालय में हैं,
- (5) जब कि प्रतिपक्षी या उसके अभिकर्ता ने उसका खो जाना स्वीकार कर लिया है,
- (6) जब कि दस्तावेज़ पर कब्ज़ा रखने वाला व्यक्ति न्यायालय की आदेशिका की पहुंच के बाहर है या ऐसी आदेशिका के अध्यधीन नहीं है।

जिस व्यक्ति के बारे में अभिकर्तित है कि उसने पेश की गई दस्तावेज़ को हस्ताक्षरित किया था या लिखा था उस व्यक्ति के हस्ताक्षर या हस्तलेख का साबित किया जाना ।

ऐसी दस्तावेज़ के निष्पादन का साबित किया जाना जिसका अनुप्रमाणित होना विधि द्वारा अपेक्षित है ।

67. यदि कोई दस्तावेज़ किसी व्यक्ति द्वारा हस्ताक्षरित या पूर्णतः या भागतः लिखा गई अभिकर्तित है, तो यह साबित करना होगा कि वह हस्ताक्षर या उस दस्तावेज़ के उन्नेको हस्तलेख, जितने के बारे में यह अभिकर्तित है कि वह उस व्यक्ति के हस्तलेख में है, उसके हस्तलेख में है ।

68. यदि किसी दस्तावेज़ का अनुप्रमाणित होना विधि द्वारा अपेक्षित है, तो उसे साक्ष्य के रूप में उपयोग में न लाया जाएगा, जब तक कि कम से कम एक अनुप्रमाणक साक्षी, यदि कोई अनुप्रमाणक साक्षी जीवित और न्यायालय की आदेशिका के अधीन हों तथा साक्ष्य देने के योग्य हो, उसका निष्पादन साबित करने के प्रयोजन से न बुलाया गया हो ;

परन्तु ऐसी किसी दस्तावेज़ के निष्पादन को साबित करने के लिए, जो विल नहीं है, और जो भारतीय रजिस्ट्रीकरण अधिनियम के उपबन्धों के 1908 अनुसार रजिस्ट्रीकृत है, किसी अनुप्रमाणक साक्षी को बुलाना आवश्यक न होगा, का 16 जब तक कि उस के निष्पादन का प्रत्याख्यान उस व्यक्ति द्वारा जिसके द्वारा उस का निष्पादित होना तात्पर्यित है विनिर्दिष्टतः न किया गया हो ।

69. यदि ऐसे किसी अनुप्रमाणक साक्षी का पता न होता तो उसके अथवा यदि दस्तावेज का यूनिटेड क्रिगडम में निष्पादित होना तात्पर्यित हो तो यह साबित करना होता कि कम से कम एक अनुप्रमाणक साक्षी का अनुप्रमाण उसीं के हस्तांख में है, तथा यह कि दस्तावेज का निष्पादन करने वाले व्यक्ति का हस्तांख में है।

जब किसी भी अनुप्रमाणक साक्षी का पता न चले, तब सबत।

70. अनुप्रमाणित दस्तावेज के किसी पक्षकार की अपने द्वारा उसका निष्पादन करने की स्वीकृति उस दस्तावेज के निष्पादन का उसके विरुद्ध पर्याप्त सबूत होता, यद्यपि वह ऐसी दस्तावेज हो जिसका अनुप्रमाणित होना विधि द्वारा अपेक्षित है।

अनुप्रमाणित दस्तावेज के पक्षकार द्वारा निष्पादन की स्वीकृति।

71. यदि अनुप्रमाणक साक्षी दस्तावेज के निष्पादन का प्रत्याख्यान करे या उसे उसके निष्पादन का समर्त्तन हो, तो उसका निष्पादन अन्य साध्य द्वारा साबित किया जा सकेगा।

जब कि अनुप्रमाणक साक्षी निष्पादन का प्रत्याख्यान करता है, तब सबूत।

72. कोई अनुप्रमाणित दस्तावेज, जिसका अनुप्रमाणित होना विधि द्वारा अपेक्षित नहीं है, ऐसे साबित की जा सकेगी, माना वह अनुप्रमाणित नहीं हो।

उस दस्तावेज का नाबिल किया जाना जिस का अनुप्रमाणित होना विधि द्वारा अपेक्षित नहीं है।

73. यह अभिनियन्ति करने के लिए कि क्या कोई हस्तांख, लेख या मद्रा उस व्यक्ति की है, जिस के द्वारा उसका लिखा या किया जाना तात्पर्यित है किसी हस्तांख, लेख या मद्रा की, जिसके बारे में यह स्वीकृत है या न्यायालय को समाधानप्रद रूप में भवित कर दिया गया है कि वह उस व्यक्ति द्वारा लिखा या किया गया था, उससे, जिस साबित किया जाना है, तुलना की जा सकेगी, यद्यपि वह हस्तांख, लेख या मद्रा किसी अन्य प्रयोजन के लिए पेश या साबित न की गई हो।

हस्तांख, लेख या मद्रा की तुलना अन्यों से जो स्वीकृत या साबित है।

न्यायालय में उपस्थिति किसी व्यक्ति को किन्हीं शब्दों या अंकों के लिखने का निदेश न्यायालय इस प्रयोजन से दें सकेगा कि ऐसे लिखे गए शब्दों या अंकों की किन्हीं ऐसे शब्दों या अंकों से तुलना करने के लिए न्यायालय समर्थ हो सके जिनके बारे में अभिकथित है कि वे उस व्यक्ति द्वारा लिखे गए थे।

यह धारा किन्हीं आवश्यक उपान्तरों के साथ अंगुलि छापों को भी लागू है।

लोक दस्तावेज़

74. निम्नलिखित दस्तावेज़े लोक दस्तावेज़े हैं—

लोक दस्तावेज़े।

(1) वे दस्तावेज़े जो—

- (i) प्रभुतासम्पन्न प्राधिकारी के,
- (ii) शासकीय निकायों और अधिकरणों के, तथा

(iii) भारत के किसी भाग के या कामनवेल्थ के, या किसी विदेश के विधायी, न्यायिक तथा कार्यपालक लोक आफिसरों के,

कायों के रूप में या कायों के अभिलेख के रूप में हैं।

(2) किसी राज्य में रखे गए प्राइवेट दस्तावेजों के लोक अभिलेख।

75. अन्य सभी दस्तावेज़े प्राइवेट हैं।

प्राइवेट दस्तावेज़े।

लोक दस्तावेज़ों
की प्रमाणित
प्रतियां।

76. हर लोक आफिसर, जिसकी अभिरक्षा में कोई ऐसी लोक दस्तावेज़ है, जिसके निरीक्षण करने का किसी भी व्यक्ति को अधिकार है, भाग किए जाने पर उस व्यक्ति को उसकी प्रति उसके लिए विधिक फीस चुकाए जाने पर प्रति के नीचे इस लिखित प्रमाणपत्र के सहित देगा कि वह यथास्थिति ऐसी दस्तावेज़ की या उसके भाग की शुद्ध प्रति है तथा ऐसा प्रमाणपत्र ऐसे आफिसर द्वारा दिनांकित किया जाएगा और उसके नाम और पदाभिधान से हस्ताक्षरित किया जाएगा तथा जब कभी ऐसा आफिसर विधि द्वारा किसी मुद्रा का उपयोग करने के लिए प्राधिकृत है तब मुद्रायुक्त किया जाएगा, तथा इस प्रकार प्रमाणित ऐसी प्रतियां प्रमाणित प्रतियां कहलाएंगी।

स्पष्टीकरण—जो कोई आफिसर पदीय कर्तव्य के मामूली अनुक्रम में ऐसी प्रतियां परिदान करने के लिए प्राधिकृत हैं, वह इस धारा के अर्थ के अन्तर्गत ऐसी दस्तावेजों की अभिरक्षा रखता है, यह समझा जाएगा।

77. ऐसी प्रमाणित प्रतियां उन लोक दस्तावेजों की या उन लोक दस्तावेजों के भागों की अन्तर्वस्तु के सबूत में पेश की जा सकेंगी जिन की वे प्रतियां होना तात्पर्यित हैं।

प्रमाणित प्रतियों
के पेश करने
द्वारा दस्तावेजों
का सबूत।

78. निम्नलिखित लोक दस्तावेज़े निम्नलिखित रूप से साबित की जा सकेंगी,

अन्य शासकीय
दस्तावेज़ों का
सबूत।

(1) केन्द्रीय सरकार के किसी विभाग के, या क्राउन रिप्रेजेनेटिव के, या किसी राज्य सरकार के, या किसी राज्य सरकार के किसी विभाग के कार्य, आदेश या अधिसूचनाएं,

उन विभागों के अभिलेखों द्वारा, जो क्रमशः उन विभागों के मुख्य पदाधिकारियों द्वारा प्रमाणित हैं,

या किसी दस्तावेज़ द्वारा जो ऐसी किसी सरकार के या यथास्थिति क्राउन रिप्रेजेनेटिव के आदेश द्वारा मुद्रित हुई तात्पर्यित है;

(2) विधान मण्डलों की कार्यवाहियाँ,

क्रमशः उन निकायों के जर्नलों द्वारा या प्रकाशित अधिनियमों या संक्षिप्तियों द्वारा, या सम्पूर्ण सरकार के आदेश द्वारा मद्रित होना तात्पर्यित होने वाली प्रतियों द्वारा;

(3) हर मजेस्टी द्वारा या प्रिवी कॉन्सल द्वारा या हर मजेस्टी की सरकार के किसी विभाग द्वारा निकाली गई उद्घोषणाएं, आदेश या विनियम,

सन्दर्भ गजटमें अन्तविष्ट या कीन्स प्रिण्टर द्वारा मुद्रित होना तात्पर्यित होने वाली प्रतियों या उद्दरणों द्वारा ;

[(4)] किसी विदेश की कार्यवालिका के कार्य या विधान मण्डल की कार्यवाहियाँ,

उन के प्राधिकार से प्रकाशित, या उस देश में सामान्यतः इस रूप में गृहीत, जनसों द्वारा, या उस देश या प्रभु की मुद्रा के अधीन प्रमाणित प्रति द्वारा, या किसी केन्द्रीय अधिनियम में उनकी मान्यता द्वारा;

(5) किसी राज्य के नगरपालिक निकाय भी कार्यवाहियाँ,

ऐसी कार्यवाहियों की ऐसी प्रति द्वारा, जो उनके विधिक पालक द्वारा प्रमाणित है, या ऐसे निकाय के प्राधिकार से प्रकाशित हुई तात्पर्यित होने वाली किसी मुद्रित पुस्तक द्वारा ;

(6) किसी विदेश की किसी अन्य प्रकार की लोक दस्तावेज़ें,

मूल द्वारा या उसके विधिक पालक द्वारा प्रमाणित किसी प्रति द्वारा, जिस प्रति के साथ किसी नोटरी पब्लिक की, या भारतीय कौन्सल या राजनयिक अधिकर्ता की मुद्रा के अधीन यह प्रमाणपत्र है कि वह प्रति मूल की विधिक अभिरक्षा रखने वाले आफिसर द्वारा सम्पूर्ण रूप से प्रमाणित है, तथा उस दस्तावेज की प्रकृति उस विदेश की विधि के अनुसार साबित किए जाने पर।

दस्तावेजों के बारे में उपधारणाएँ

79. न्यायालय हर ऐसी दस्तावेज का असली होना उपधारित करेगा जो ऐसा प्रमाणपत्र, प्रमाणित प्रति या अन्य दस्तावेज होनी तात्पर्यित है जिसका किसी विशिष्ट तथ्य के साक्ष्य के रूप में ग्राह्य होना विधि द्वारा घोषित है और जिसका केन्द्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार के किसी आफिसर द्वारा या जम्मू-कश्मीर राज्य के किसी ऐसे आफिसर द्वारा, जो केन्द्रीय सरकार द्वारा उसके लिए सम्पूर्ण रूप से प्राधिकृत हो, सम्पूर्ण रूप से प्रमाणित होना तात्पर्यित है, परन्तु यह तब जब कि ऐसी दस्तावेज सारतः उस प्रलैप में हो तथा ऐसी रीति से निष्पादित हुई तात्पर्यित हो जो विधि द्वारा उन्निमित निर्दिष्ट है।

प्रमाणित प्रतियों के असली होने के बारे में उपधारणा ।

न्यायालय यह भी उपधारित करेगा कि कोई आफिसर, जिसके द्वारा ऐसी दस्तावेज का हस्ताक्षरित या प्रमाणित होना तात्पर्यित है, वह पदीय हैसियत, जिसका वह ऐसे कागज में दावा करता है, उस समय रखता था जब उसने उसे हस्ताक्षरित किया था ।

80. जब कभी किसी न्यायालय के समक्ष कोई ऐसी दस्तावेज पेश की जाती है, जिसका किसी न्यायिक कार्यवाही में, या विधि द्वारा ऐसा साक्ष्य लेने के लिए प्राधिकृत किसी आफिसर के समक्ष, किसी साक्षी द्वारा दिए गए साक्ष्य या साक्ष्य के किसी भाग का अभिलेख या जापन होना, अथवा किसी क़दी या अभियुक्त का विधि के अनुसार लिया गया कथन या संस्थीकृति होना तात्पर्यित

साक्ष्य के अभिलेख के तौर पर पेश की गई दस्तावेजों के बारे में उपधारणा ।

हो और जिसका किसी न्यायाधीश या मजिस्ट्रेट द्वारा या उपर्युक्त जैसे किसी आफिसर द्वारा हस्ताक्षरित होना तात्पर्यित हो, तब न्यायालय वह उपधारित करेगा—

कि वह दस्तावेज असली है, कि उन परिस्थितियों के बारे में, जिनके अधीन वह विषय गया था, कोई भी कायन, जिसका उसको हस्तार्हारत करने वाले व्यक्ति द्वारा किसी जाना तात्पर्यित है, सत्य है तथा किसी साक्ष, कायन या संस्कृति सम्बद्ध स्पृष्ट से ली गई थी।

राजपत्रों, शमाचार-पत्रों, पार्लमेंट के प्राइवेट एंक्टों और अन्य दस्तावेजों के बारे में उपधारणाएँ।

मुझ या हस्ताक्षर के सबूत के बिना इंग्लैण्ड में ग्राह्य दस्तावेज के बारे में उपधारणा।

सरकार के प्राधिकार द्वारा बनाए गए मानचिनीय या रेखांकों के बारे में उपधारणा।

विधियों के संग्रह और विद्यित्यों की रिपोर्टों के बारे में उपधारणा।

मुख्यालयों के बारे में उपधारणा।

81. न्यायालय हर ऐसी दस्तावेज का असली होना उपधारित करेगा जिसका लन्दन गजट, या कोई शासकीय राजपत्र या ब्रिटिश शासन के किसी उपनिवेश अधिकारी देश या क्रांतिकारी राजपत्र होना या कोई समाज़ एवं पञ्चयान जनल होना, या युनाइटेड विंडोम की पार्लमेंट के प्राइवेट एंक्ट की कर्त्तव्य प्रिण्टर द्वारा भूद्वित प्रति होना, तात्पर्यित है तथा हर ऐसी दस्तावेज का, जिसका किसी दस्तावेज होना तात्पर्यित है जिसका किसी व्यक्ति द्वारा रखा जाना किसी विधि द्वारा निश्चिप्त है, यदि ऐसी दस्तावेज सार्वतः इस प्रृष्ठ में रखी गई हो, जो विधि द्वारा अपेक्षित है, और उचित अभिरक्षा में से पेश की गई हो, असली होना उपधारित करेगा।

82. जब कि किसी न्यायालय के समक्ष कोई ऐसी दस्तावेज पेश की जाती है जिसका ऐसी दस्तावेज होना तात्पर्यित है जो इंग्लैण्ड या आयरलैंड के किसी न्यायालय में किसी विद्यित को मानित करने के लिए उस दस्तावेज को अधिप्रमाणीकृत करने वाली युद्ध या स्टाम्प या हस्ताक्षर को या उस व्यक्ति द्वारा, जिसके द्वारा इसका हस्ताक्षरित किया जाना तात्पर्यित है, दावावृत्त न्यायिक या पदीय हैसियत को मानित किए बिना इंग्लैण्ड या आयरलैंड में तत्समय-प्रवत्तविधि के अनुसार ग्राह्य होती, तब न्यायालय यह उपधारित करेगा कि ऐसी मुद्रा, स्टाम्प या हस्ताक्षर असली है और उसको हस्ताक्षरित करने वाला व्यक्ति वह न्यायिक या पदीय हैसियत, जिसका वह दावा करता है, उस समय रखता था जब उसने उसे हस्ताक्षरित किया था,

तथा दस्तावेज उसी प्रयोजन के लिए, जिसके लिए वह इंग्लैण्ड या आयरलैंड में ग्राह्य होती, ग्राह्य होगी।

83. न्यायालय यह उपधारित करेगा कि वे मानचित्र या रेखांक, जो केन्द्रीय सरकार या किसी संघीय सरकार के प्राधिकार द्वारा बनाए गए तात्पर्यित हैं, वैसे ही बनाए गए थे और वे शुद्ध हैं किन्तु किसी मामले के प्रयोजनों के लिए बनाए गए मानचित्रों या रेखांकों के बारे में यह सादित करना होगा कि वे सही हैं।

84. न्यायालय हर ऐसी पुस्तक का, जिसका विसी देश की सरकार के प्राधिकार के अधीन भूद्वित या प्रकाशित होना और जिसमें उस देश की कोई विधियों अन्तर्विष्ट होना तात्पर्यित है,

तथा हर ऐसी पुस्तक का, जिसमें उस देश के न्यायालय के विनिश्चयों की रिपोर्ट अन्तर्विष्ट होता तात्पर्यित है, असली होना उपधारित करेगा।

85. न्यायालय यह उपधारित करेगा कि हर ऐसी दस्तावेज जिसका मुख्यालयमा होना और योटरी पब्लिक या किसी न्यायालय, न्यायाधीश, मजिस्ट्रेट, भारतीय कौन्सल या उपकौन्सल या केन्द्रीय सरकार के प्रतिनिधि

के समक्ष निष्पादित और उस द्वारा अधिप्रमाणिकृत होना तात्पर्यित है, ऐसे निष्पादित और अधिप्रमाणिकृत की गई थी।

86. न्यायालय यह उपधारित कर सकेगा कि ऐसे किसी देश के, जो भारत का या हर मजेस्टी के अधिक्षेत्रों का भाग नहीं है, न्यायिक अभिलेख की प्रमाणित प्रति तात्पर्यित होने वाली कोई दस्तावेज असली और शुद्ध है, यदि वह दस्तावेज किसी ऐसी रीति से प्रमाणित हुई तात्पर्यित हो जिसका न्यायिक अभिलेखों की प्रतियों के प्रमाणन के लिए उस देश में माधारणतः काम में लाई जाने वाली रीति होना ऐसे देश में या के लिए केन्द्रीय सरकार के किसी प्रतिनिधि द्वारा प्रमाणित है।

जो आफिनर ऐसे किसी राज्यक्षेत्र या स्थान के लिए, जो भारत का या 1897 का हर मजेस्टी के अधिक्षेत्रों का भाग नहीं है, गाधारण खण्ड अधिनियम की 10 धारा 3, खण्ड (43) में यथा परिभापित राजनैतिक अधिकर्ता है, वह इस धारा के प्रयोगों के लिए केन्द्रीय सरकार का उस देश में, और के लिए, प्रतिनिधि समझा जाएगा जिसमें वह राज्यक्षेत्र या स्थान समाविष्ट है।

87. न्यायालय यह उपधारित कर सकेगा कि कोई पुस्तक, जिसे वह लोक या साधारण हिन्दू बातों की जानकारी के लिए देखे और कोई प्रकाशित मानविक या चार्ट, जिसके कायन सुनांगत तथ्य है और जो उसके निरीक्षणार्थे पेश किया गया है, उन व्यक्तिद्वारा तथा उस समय और उस स्थान पर लिखा गया और प्राप्तिकिया गया था जिसके द्वारा या जिस समय या स्थान पर उतका लिखा जाना या प्रकाशित होना तात्पर्यित है।

88. न्यायालय यह उपधारित कर सकेगा कि कोई सन्देश, जो किसी तारघर से उन व्यक्तियों को भेजा गया है, जिसे ऐसे सन्देश का सम्बोधित होना तात्पर्यित है, उस सन्देश को समझा है जो भेजे जाने के लिए उस कार्यालय को, जहाँ से वह सन्देश पारेषित किया गया तथा तात्पर्यित है, परिदृष्ट किया गया था, किन्तु न्यायालय उन व्यक्तियों के बारे में, जिसने सन्देश पारेषित किए जाने के लिए परिदृष्ट किया था, कोई उपधारणा नहीं करेगा।

89. न्यायालय उपधारित करेगा कि हर दस्तावेज, जिसे पेश करने की अपेक्षा की गई थी और जो पेश करने की मूल्यना के पश्चात् पेश नहीं की गई है, विधि द्वारा अपेक्षित प्रकार से अनुप्रमाणित, स्टापित और निष्पादित की गई थी।

90. जहाँ कि कोई दस्तावेज, जिसका तीस वर्ष पुरानी होना तात्पर्यित है या सावित किया गया है, ऐसी किसी अभिरक्षा में से, जिसे न्यायालय उस विशिष्ट भावले में उचित समझता है, पेश की गई है, वहाँ न्यायालय यह उपधारित कर सकेगा कि ऐसी दस्तावेज पर हस्ताक्षर और उसका हर अन्य भाग, जिसका किनी विशिष्ट व्यक्ति के हस्तलेख में होना तात्पर्यित है, उन व्यक्तियों के हस्तलेख में है, और निष्पादित या अनुप्रमाणित दस्तावेज होने की बात में यह उपधारित कर सकेगा कि वह उन व्यक्तियों द्वारा सम्यक् रूप से निष्पादित और अनुप्रमाणित होना तात्पर्यित है।

विदेशी न्यायिक अभिलेखों की प्रमाणित प्रतियों के बारे में उपधारणा।

पुस्तकों, मानविकों और चार्टों के बारे में उपधारणा।

तार सन्देशों के बारे में उपधारणा।

पेश न की गई दस्तावेजों के सम्बद्धक निष्पादन आदि के बारे में उपधारणा।

तीस वर्ष पुरानी दस्तावेज के बारे में उपधारणा।

स्पष्टीकरण—दस्तावेजों का उचित अभिरक्षा में होना कहा जाता है, यदि वे ऐसे स्थान में और उस व्यक्ति की देखभेख में हैं, जहाँ और जिसके पास वे प्रकृत्या होनी चाहिए; किन्तु कोई भी अभिरक्षा अनुचित नहीं है, यदि यह सावित कर दिया जाए कि उस अभिरक्षा का उद्गम विधिसम्मत था या यदि उस विशिष्ट मामले की परिस्थितियाँ ऐसी हों जिनसे ऐसा उद्गम अधिसम्भाव्य हो जाता है।

यह स्पष्टीकरण धारा 81 को भी सागू है।

पृष्ठांत

- (क) क भू-सम्पत्ति पर वीर्घकाल से कब्जा रखता आया है। वह उस भूमि सम्बन्धी विलेख, जिनसे उस भूमि पर उसका हक्क दर्शित होता है, अपनी अभिरक्षा में से पेश करता है। यह अभिरक्षा उचित है।
- (ख) क उस भू-सम्पत्ति से सम्बद्ध विलेख, जिनका वह बन्धकादार है, पेश करता है। बन्धककर्ता सम्पत्ति पर कब्जा रखता है। यह अभिरक्षा उचित है।
- (ग) ल का संसंगी क, ल के कब्जे वाली भूमि से सम्बन्धित विलेख पेश करता है, जिन्हें ल ने उसके पास सुरक्षित अभिरक्षा के लिए निक्षिप्त किया था। यह अभिरक्षा उचित है।

अध्याय 6

दस्तावेजी साक्ष्य द्वारा मौखिक साक्ष्य के अपवर्जन के विषय में

दस्तावेजों के रूप में नेशबद संविदाओं, अनुदानों तथा संपत्ति के अन्य व्यथनों के निवन्धनों का साक्ष्य।

91. जब कि किसी संविदा के या अनुदान के या सम्पत्ति के किसी अन्य व्ययन के निवन्धन दस्तावेज के रूप में लेखबद्ध कर लिए गए हों, तब, तथा उन सब दशाओं में, जिनमें विधि द्वारा अपेक्षित है कि कोई बात दस्तावेज के रूप में लेखबद्ध की जाए, ऐसी संविदा, अनुदान या सम्पत्ति के अन्य व्ययन के निवन्धनों के या ऐसी बात के साबित किए जाने के सिए स्वयं उस दस्तावेज के सिवाय, या उन दशाओं में जिनमें एतस्मिन्पूर्व अन्तविष्ट उपबन्धों के अधीन द्वितीयिक साक्ष्य ग्राह्य है, उसकी अन्तवस्तु के द्वितीयिक साक्ष्य के सिवाय, कोई भी साक्ष्य नहीं दिया जाएगा।

अपवाह 1—जब कि विधि द्वारा यह अपेक्षित है कि किसी लोक आफिलर की नियक्ति लियित रूप में हो और जब यह दर्शित किया गया है कि किसी विशिष्ट व्यक्ति ने ऐसे आफिलर के नाते कार्य किया है, तब उस लेख का, जिसके द्वारा वह नियुक्त किया गया था, साबित किया जाना आवश्यक नहीं है।

अपवाह 2—जिन विलों का भारत में प्रोबेट मिला है, वे प्रोबेट द्वारा साबित की जा सकेंगी।

स्पष्टीकरण 1—यह धारा उन दशाओं को, जिनमें निर्दिष्ट संविदाएं, अनुदान या सम्पत्ति के व्ययन एक ही दस्तावेज में अन्तविष्ट हैं तथा उन दशाओं को, जिनमें वे एक से अधिक दस्तावेजों में अन्तविष्ट हैं, समान रूप से लागू हैं।

स्पष्टीकरण 2—जहाँ कि एक से अधिक मूल हैं, वहाँ केवल एक मूल सावित करना आवश्यक है।

स्पष्टीकरण 3—इस धारा में निर्दिष्ट तथ्यों से भिन्न किसी तथ्य का किसी भी दस्तावेज़ में कथन, उसी तथ्य के बारे में मौखिक साक्ष्य की ग्राह्यता का प्रवारण नहीं करेगा।

बृष्टांत

(क) यदि कोई संविदा कई पत्रों में अन्तर्विष्ट है, तो वे सभी पत्र, जिनमें वह अन्तर्विष्ट है, सावित करने होंगे।

(ख) यदि कोई संविदा किसी विनिमयपत्र में अन्तर्विष्ट है, तो वह विनिमयपत्र सावित करना होगा।

(ग) यदि विनिमयपत्र तीन पत्रों में लिखित है, तो केवल एक को सावित करना आवश्यक है।

(घ) ज्ञ से कठिपय निबन्धनों पर क नील के परिदान के लिए लिखित संविदा करता है। संविदा इस तथ्य का वर्णन करती है कि ज्ञ ने क को किसी अन्य अवसर पर मौखिक रूप से संविदाकृत अन्य नील का मूल्य चुकाया था।

मौखिक साक्ष्य पेश किया जाता है कि अन्य नील के लिए कोई संदाय नहीं किया गया। यह साक्ष्य ग्राह्य है।

(ङ) ज्ञ द्वारा दिए गए धन की रसीद ज्ञ को क देता है।

संदाय करने का मौखिक साक्ष्य पेश किया जाता है।

यह साक्ष्य ग्राह्य है।

92. जब कि किसी ऐसी संविदा, अनुदान, या सम्पत्ति के अन्य व्ययन के निबन्धनों को, या किसी बात को, जिसके बारे में विधि^१द्वारा अपेक्षित है कि वह दस्तावेज़ के रूप में लेखबद्ध की जाए, अन्तिम पिछली धारा के अनसार सावित किया जा 'चुका हो, तब किसी ऐसी लिखित के पक्षकारों या उनके हित प्रतिनिधियों के बीच के किसी मौखिक करार या कथन का कोई भी साक्ष्य उसके निबन्धनों का खण्डन करने के या उनमें फेरफार करने के या जोड़ने के या उनमें से घटाने के प्रयोजन के लिए प्रहृण न किया जाएगा;

मौखिक करार के साक्ष्य का अपवर्जन।

परन्तुक (1)—ऐसा कोई तथ्य सावित किया जा सकेगा, जो किसी दस्तावेज़ को अविधिमान्य बना दे या जो किसी व्यक्ति को तत्सम्बन्धी किसी डिक्टी या आदेश का हक्कदार बना दे, यथा कपट, अभित्रास, अवैधता, सम्यक् निष्पादन का अभाव, किसी संविदाकारी पक्षकार में सामर्थ्य का अभाव, प्रतिफल का अभाव या निष्फलता या विधि की या तथ्य की भूल।

परन्तुक (2)—किसी विधय के बारे में, जिसके बारे में दस्तावेज़ मौन है और जो उसके निबन्धनों से असंगत नहीं है, किसी पृथक् मौखिक करार का अस्तित्व सावित किया जा सकेगा। इस पर विचार करते समय कि यह परन्तुक लागू होता है या नहीं न्यायलय दस्तावेज़ की प्रस्तुति की मात्रा को ध्यान में रखेगा।

परन्तुक (3) — ऐसी किसी संविदा, अनुदान या सम्पत्ति के व्ययन के अधीन कोई बाध्यता संलग्न होने की पुरोभाव्य शर्त गठित करने वाले किसी पृथक् मौखिक करार का अस्तित्व साबित किया जा सकेगा।

परन्तुक (4) — ऐसी किसी संविदा, अनुदान या सम्पत्ति के व्ययन को विखंडित या उपांतरित करने के लिए किसी सुभिष्ठ पादिचक मौखिक करार का अस्तित्व उन अवस्थाओं के सिवाय साबित किया जा सकेगा, जिनमें विधि द्वारा अपेक्षित है कि ऐसी संविदा, अनुदान या सम्पत्ति का व्ययन लिखित हो अयवा जिनमें दस्तावेज़ के रजिस्ट्रीकरण के बारे में तत्समय-प्रवृत्त-विधि के अनुसार उसका रजिस्ट्रीकरण किया जा चुका है।

परन्तुक (5) — कोई प्रथा या रुढ़ि, जिसके द्वारा किसी संविदा में अभियक्त रूप से वर्णित न होने वाली प्रसंगतियाँ उस प्रकार की संविदाओं से प्रायः उपाबद्ध रहती हैं, साबित की जा सकेगी;

परन्तु यह तब जब कि ऐसी प्रसंगतियों का उपाबन्धन संविदा के अभियक्त निबन्धनों के विरुद्ध या उनसे असंगत न हो।

परन्तुक (6) — कोई तथ्य, जो यह दर्शित करता है कि किसी दस्तावेज़ की भाषा वर्तमान तथ्यों से किस प्रकार सम्बन्धित है, साबित किया जा सकेगा।

दृष्टोत्त

(क) बीमा की एक पालिसी उस मान के लिए की गई है जो “कलकत्ते से लन्दन जाने वाले पोतों में” है। माल किसी विशिष्ट पोत से भेजा जाता है, जो पोत नहीं हो जाता है। यह तथ्य कि यह विशिष्ट पोत उस पालिसी से मौखिक रूप से अपदादित था साबित नहीं किया जा सकता।

(ख) ख को पहली मार्च, 1873 को 1,000 रुपया देने का पक्का लिखित करार करता है। यह तथ्य कि उसी समय एक मौखिक करार हुआ था कि यह धन इकतीस मार्च तक न दिया जाएगा, साबित नहीं किया जा सकता।

(ग) “रामपुर चाय समादा” नामक एक सम्पदा किसी विलेख द्वारा बेची जाती है, जिसमें विक्रीत सम्पत्ति का मानचित्र अन्तर्विष्ट है। यह तथ्य कि मानचित्र में न दिखाई गई भूमि सदैव सम्पदा का भागरूप भानी जाती रही थी और उस विलेख द्वारा उसका अन्तरित होना अभिप्रेत था, साबित नहीं किया जा सकता।

(घ) घ किन्हीं खानों को, जो ख की सम्पत्ति हैं, किन्हीं निबन्धनों पर काम में लाने का ख से लिखित करार करता है। उनके मूल्य के बारे में ख के दुर्घटनाक ऐसा करने के लिए उत्प्रेरित हुआ था। यह तथ्य साबित किया जा सकेगा।

(ड) ख पर घ किसी संविदा के विनिर्दिष्ट पालन के लिए वाद संस्थित करता है और यह प्रार्थना भी करता है कि संविदा का मुद्घार उसके एक उपबन्ध के बारे में किया जाए वर्तीकि वह उपबन्ध

उसमें भूल से अन्तःस्थापित किया गया था। क साबित कर सकेगा कि ऐसी भूल की गई थी जिससे संविदा के सुधार करने का हक्क उसे विधि द्वारा मिलता है।

(च) क पत्र द्वारा ख का माल आदिष्ट करता है जिसमें संदाय करने के समय के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया है और परिदान पर माल को प्रतिगृहीत करता है। ख मूल्य के लिए क पर बाद लाता है। क दर्शित कर सकेगा कि माल ऐसी अवधि के लिए उधार पर दिया गया था जो अभी अवधित नहीं हुई है।

(छ) ख को क एक घोड़ा बेचता है और मौखिक वारण्टी देता है कि वह अच्छा है। ख को क इन शब्दों को लिखकर एक कागज देना है “क से 500 रुपये में एक घोड़ा खरीदा”। ख मौखिक वारण्टी साबित कर सकेगा।

(ज) ख का बासा क भाड़े पर लेता है और एक काढ़ देता है जिसमें लिखा है, “कमरे, 200 रुपये प्रति भास”। क यह मौखिक करार माबित कर सकेगा कि इन निवन्धनों के अन्तर्गत भागतः भोजन भी था।

ख का बासा क एक वर्ष के लिए भाड़े पर लेता है और उनके दीन अर्णी द्वारा तैयार किया हुआ एक स्टोम्पित करार किया जाता है। वह करार भोजन देने के विषय में मौजूद है। क साबित नहीं कर सकेगा कि मौखिक तौर पर उस निवन्धन के अन्तर्गत भोजन देना भी था।

(झ) ख से पौधे छूटन के लिए धन की रसीद भेज कर छूटन घटने का क अवैदन करता है। ख रसीद रख लेता है और धन नहीं भेजता। उस रकम के लिए बाद में क इसे साबित कर सकेगा।

(ञ) क और ख निखित संविदा करते हैं जो अमुक अनिश्चित घटना के घटना होने पर प्रभावशील होनी है। वह लेख ख के पास छोड़ दिया जाता है जो उसके आधार पर क पर बाद लाता है। क उन परिस्थितियों को दर्शित कर सकेगा जिन के अधीन वह परिदृष्टि किया गया था।

93. यदि कि किसी दस्तावेज में प्रयत्न भाषा देखने ही संदिग्धार्थ या त्रुटिपूर्ण है, तब उन तथ्यों का साक्ष्य नहीं दिया जा सकेगा, जो उनका अर्थ दर्शित या उसकी त्रुटियों की पूति कर दे।

बृष्टीत

(क) ख को क 1,000 रुपयों या 1,500 रुपयों में एक घोड़ा बेचने का निखित करार काला है।

यह दर्शित करने के लिए कि नीति सा मूल्य दिया जाना था साक्ष्य नहीं दिया जा सकता जो यह दर्शित करते हों कि उसकी निति प्रकार पूति अभिप्रेत थी।

संदिग्धार्थ दस्ता-
वेज को स्पष्ट
करने या उसका
संशोधन करने के
साक्ष्य का अप-
दर्जन।

विद्यमान तथ्यों को दस्तावेज के लागू होने के विरुद्ध साक्ष्य का अपवर्जन ।

१४. जब कि दस्तावेज में प्रयुक्त भाषा स्वयं स्पष्ट हो और जब कि वह विद्यमान तथ्यों को ठीक ठीक लागू होती हो, तब यह दर्शित करने के लिए साक्ष्य नहीं दिया जा सकेगा कि वह ऐसे तथ्यों को लागू होने के लिए अभिप्रेत नहीं थी ।

बुधांत

वह को कि “रामपुर में 100 बीचे वाली मैरी सम्पदा” विलेख द्वारा बेचता है । क के पास रामपुर में 100 बीचे वाली एक सम्पदा है । इस तथ्य का साक्ष्य नहीं दिया जा सकेगा कि विक्रयार्थ अभिप्रेत सम्पदा किसी मिन्न स्थान पर स्थित और मिन्न माप की थी ।

विद्यमान तथ्यों के संदर्भ में अर्थहीन दस्तावेज के बारे में साक्ष्य ।

१५. जब कि दस्तावेज में प्रयुक्त भाषा स्वयं स्पष्ट हो किन्तु विद्यमान तथ्यों के संदर्भ में अर्थहीन हो, तो यह दर्शित करने के लिए साक्ष्य दिया जा सकेगा कि वह एक विशिष्ट भाव में प्रयुक्त की गई थी ।

बुधांत

वह को कि “मेरा कलकत्ते का गृह” विलेख द्वारा बेचता है ।

क का कलकत्ते में कोई गृह नहीं था किन्तु यह प्रतीत होता है कि उसका हावड़ा में एक गृह था जो विलेख के निष्पादन के समय से उसके कङ्गे में था ।

इन तथ्यों को यह दर्शित करने के लिए साबित किया जा सकेगा कि विलेख का सम्बन्ध हावड़ा के गृह से था ।

उस भाषा के लागू होने के बारे में साक्ष्य जो कई व्यक्तियों में से केवल एक को लागू हो सकती है ।

१६. जब कि तथ्य ऐसे हैं कि प्रयुक्त भाषा कई व्यक्तियों या चीजों में से किसी एक को लागू होने के लिए अभिप्रेत हो सकती थी तथा एक से अधिक को लागू होने के लिए अभिप्रेत नहीं हो सकती थी, तब उन तथ्यों का साक्ष्य दिया जा सकेगा जो यह दर्शित करते हैं कि उन व्यक्तियों या चीजों में से किस को लागू होने के लिए वह आशयित थी ।

बुधांत

(क) क 1,000 रुपये में “मेरा सफेद धोड़ा” वह को बेचने का करार करता है । क के पास दो सफेद धोड़े हैं । उन तथ्यों का साक्ष्य दिया जा सकेगा जो यह दर्शित करते हों कि उनमें से कौन सा धोड़ा अभिप्रेत था ।

(ख) वह के साथ क हैदराबाद जाने के लिए करार करता है । यह दर्शित करने वाले तथ्यों का साक्ष्य दिया जा सकेगा कि दक्षिण का हैदराबाद अभिप्रेत था या सिन्ध का हैदराबाद ।

97. जब, कि प्रयुक्त भाषा भागतः विद्यमान तथ्यों के एक संवर्ग को और भागतः विद्यमान तथ्यों के अन्य संवर्ग को लाग होती है, किन्तु वह में से किसी एक को भी ठीक-ठीक लाग नहीं होती, तब यह दर्शित करने के लिए साक्ष्य दिया जा सकेगा कि वह दोनों में से किस को लाग होने के लिए अभिप्रेत थी।

बृष्टांत

क को “मेरी भ में स्थित म के अधिभोग में भूमि” बेचने का करार करता है। क के पास भ में स्थित भूमि है, किन्तु वह म के कङ्कजे में नहीं है तथा उसके पास म के कङ्कजे वाली भूमि है, किन्तु वह भ में स्थित नहीं है। यह दर्शित करने वाले तथ्यों का साक्ष्य दिया जा सकेगा कि उसका अभिप्राय कौन सी भूमि बेचने का था।

98. ऐसी लिपि का, जो पढ़ी न जा सके या सामान्यतः समझी न जाती हो, विदेशी, अप्रचलित, पारिभाषिक, स्थानिक और प्रान्तीय शब्द प्रयोगों का, संक्षेपाक्षरों का और विशिष्ट भाव में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ दर्शित करने के लिए साक्ष्य दिया जा सकेगा।

तथ्यों के दो संवर्गों में से, जिनमें से किसी एक को भी वह भाषा पूरी की पूरी ठीक-ठीक लाग नहीं होती, उसमें से एक को भाषा के लाग होने के बारे में साक्ष्य।

न पढ़ी जा सकने वाली लिपि आदि के अर्थ के बारे में साक्ष्य।

बृष्टांत

एक मूर्तिकार, क, “मेरे सभी प्रतिम” क को बेचने का करार करता है। क के पास प्रतिमान और प्रतिमा बनाने के औजार भी हैं। यह दर्शित करने के लिए कि वह किसे बेचने का अभिप्राय रखता था साक्ष्य दिया जा सकेगा।

99. वे व्यक्ति, जो किसी दस्तावेज के पक्षकार या उनके हित प्रतिनिधि नहीं हैं, ऐसे किन्हीं भी तथ्यों का साक्ष्य दे सकेंगे, जो दस्तावेज के निबन्धनों में फेरफार करने वाले किसी समकालीन करार को दर्शित करने की प्रवृत्ति रखते हैं।

दस्तावेज के निबन्धनों में फेरफार करने वाले करार का साक्ष्य कौन दे सकेगा।

बृष्टांत

क और क लिखित संविदा करते हैं कि क को कुछ कपास का बेचेगा जिसके लिए संदाय कपास के परिदान किए जाने पर किया जाएगा। उसी समय वे एक मौखिक करार करते हैं कि क को तीन मास का प्रत्यय दिया जाएगा। क और क के बीच यह तथ्य दर्शित नहीं किया जा सकता था किन्तु यदि यह ग के हित पर प्रभाव डालता है, तो यह ग द्वारा दर्शित किया जा सकेगा।

100. इस अव्याय की कोई भी बात विल का अर्थ लगाने के बारे में भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम के किन्हीं भी उपबन्धों पर प्रभाव डालने वाली नहीं समझी जाएगी।

भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम के विल सम्बन्धी उपबन्धों की व्यावृत्ति।

भाग 3

साक्ष्य का पेश किया जाना और प्रभाव

अध्याय 7

सबूत के भार के विषय में

सबूत का भार।

101. जो कोई न्यायालय से यह चाहता है कि वह ऐसे किसी विधिक अधिकार या दायित्व के बारे में निर्णय दे, जो उन तथ्यों के अस्तित्व पर निर्भर है, जिन्हें वह प्राप्त्यात करता है, उसे सावित करना होगा कि उन तथ्यों का अस्तित्व है।

जब कोई व्यक्ति किसी तथ्य का अस्तित्व सावित करने के लिए आवद्ध है, तब वह कहा जाता है कि उस व्यक्ति पर सबूत का भार है।

वृष्टीत

(क) क न्यायालय से चाहता है कि वह ख को उस अपराध के लिए दण्डित करने का निर्णय दे जिसके बारे में क कहता है कि वह ख ने किया है।

क को यह सावित करना होगा कि ख ने वह अपराध किया है।

(ख) क न्यायालय से चाहता है कि न्यायालय उन तथ्यों के कारण, जिन के सत्य होने का वह प्राप्त्यात्मन और ख प्रत्यात्मन कहता है, यह निर्णय दे कि वह ख के कब्जे में की अमुक भूमि का हकदार है।

क को उन तथ्यों का अस्तित्व सावित करना होगा।

सबूत का भार किस पर होता है।

102. किसी वाद या कार्यवाही में सबूत का भार उस व्यक्ति पर होता है जो असफल हो जाएगा, यदि दोनों में से किसी भी ओर से कोई भी साक्ष्य न दिया जाए।

वृष्टीत

(क) ख पर उस भूमि के लिए क वाद लाता है जो ख के कब्जे में है और जिस के बारे में क प्राप्त्यात करता है कि वह ख के पिता ग की विल द्वारा क के लिए दी गई थी।

यदि किसी भी ओर से कोई साक्ष्य नहीं दिया जाए, तो ख इसका हकदार होगा कि वह अपना कब्जा रखे रहे।

अतः सबूत का भार क पर है।

(ख) ख पर एक बन्धपत्र मद्दे शोध्य धन के लिए क वाद लाता है।

उस बन्धपत्र का निष्पादन स्वीकृत है किन्तु ख कहता है कि वह कपट द्वारा अभिप्राप्त किया गया था, जिस बात का क प्रत्यात्मन करता है।

यदि दोनों में से किसी भी ओर से कोई साक्ष्य नहीं दिया जाए, तो क सफल होगा क्योंकि बन्धपत्र विवादग्रस्त नहीं है और कपट सावित नहीं किया गया।

अतः सबूत का भार ख पर है।

103. किसी विशिष्ट तथ्य के सबूत का भार उम व्यक्ति पर होता है जो न्यायालय से यह चाहता है कि वह उसके अस्तित्व में विश्वास करे, जब तक कि किसी विधि द्वारा वह उपबन्धित न हो। कि उस तथ्य के सबूत का भार किसी विशिष्ट व्यक्ति पर होगा।

विशिष्ट तथ्य के बारे में सबूत का भार।

दृष्टांत

(क) ख को क चौरी के लिए अभियोजित करता है और न्यायालय से यह चाहता है कि न्यायालय यह विश्वास करे कि ख ने चौरी की स्वीकृति ग से की। क को यह स्वीकृति साबित करनी होगी।

ख न्यायालय से चाहता है कि वह यह विश्वास करे कि प्रश्नगत समय पर वह अन्यत्र था। उसे यह बात साबित करनी होगी।

104. ऐसे तथ्य को साबित करने का भार जिसका साबित किया जाना किसी व्यक्ति को किसी अन्य तथ्य का साक्ष्य देने को समर्थ करने के लिए आवश्यक है, उस व्यक्ति पर है जो ऐसा साक्ष्य देना चाहता है।

दृष्टांत

(क) ख द्वारा किए गए मूल्य-कालिक-कथन को क साबित करना चाहता है। क को ख की मूल्य साबित करनी होगी।

माक्ष्य को ग्राह्य बनाने के लिए जो तथ्य साबित किया जाना हो, उसे साबित करने का भार।

(ख) क किसी खाई हुई दस्तावेज की अन्तर्वस्तु को द्वितीयिक साक्ष्य द्वारा साबित करना चाहता है।

क को यह साबित करना होगा कि दस्तावेज खो गई है।

105. जबकि कोई व्यक्ति किसी अपराध का अभियुक्त है, तब उन परिस्थितियों के अस्तित्व को साधित करने का भार जो उम मामले को भारतीय दण्ड संहिता के साधारण अपवादों में से किसी के अन्तर्गत या उसी संहिता के किसी अन्य भाग में, या उस अपराध की परिभाषा करने वाली किसी विधि में, अन्तर्विष्ट किसी विशेष अपवाद या परन्तुक के अन्तर्गत कर देती है, उस व्यक्ति पर है और न्यायालय ऐसी परिस्थितियों के अभाव की उपधारणा करेगा।

यह साबित करने का भार कि अभियुक्त का मामला अपवादों के अन्तर्गत आता है।

दृष्टांत

(क) हत्या का अभियुक्त, क अभिकथित करता है कि वह जितविकृति के कारण, उस कार्य की प्रकृति नहीं जानता था।

सबूत का भार क पर है।

(ख) हत्या का अभियुक्त, क, अभिकथित करता है कि वह गम्भीर और अचानक प्रकोपन के कारण आत्मनियन्त्रण की शवित से वंचित हो गया था।

सबूत का भार क पर है।

(ग) भारतीय दण्ड संहिता की धारा 325 उपबन्ध करती है कि जो कोई, उस दशा के सिवाय जिसके लिए धारा 335 में उपबन्ध है, स्वेच्छया और उपहति करेगा, वह अमुक दण्डों से दण्डनीय होगा।

क पर स्वेच्छया और उपहृति कारित करने का, धारा 325 के अधीन आरोप है।

इस मामले को धारा 335 के अधीन लाने वाली परिस्थितियों को साबित करने का भार क पर है।

विशेषतः ज्ञात तथ्य को साबित करने का भार।

106. जबकि कोई तथ्य विशेषतः किसी व्यक्ति के ज्ञान में है, तब उस तथ्य को साबित करने का भार उस पर है।

दृष्टांत

(क) जबकि कोई व्यक्ति किसी कार्य को उस आशय से भिन्न किसी आशय से करता है, जिसे उस कार्य का स्वरूप और परिस्थितियाँ इंगित करती हैं, तब उस आशय को साबित करने का भार उस पर है।

(ख) ख पर रेल से बिना टिकट यात्रा करने का आरोप है। यह साबित करने का भार कि उसके पास टिकट था उस पर है।

उम व्यक्ति की मृत्यु साबित करने का भार जिसका तीस वर्ष के भीतर जीवित होना ज्ञात है।

यह साबित करने का भार कि वह व्यक्ति, जिसके बारे में सात वर्ष से कुछ सुना नहीं गया है, जीवित है।

भागीदारों, भू-स्वामी और अभिधारी, मालिक और अभिकर्ता के मामलों में सबूत का भार।

स्वामित्व के बारे में सबूत का भार।

उन संव्यवहारों में सद्भाव का साबित किया जाना जिनमें एक पक्षकार का सम्बन्ध सक्रिय विश्वास का है।

107. जबकि प्रश्न यह है कि कोई मनुष्य जीवित है या मर गया है और यह दर्शित किया गया है कि वह तीस वर्ष के भीतर जीवित था, तब यह साबित करने का भार कि वह मर गया है उस व्यक्ति पर है, जो उसे प्रतिज्ञात करता है।

108. परन्तु जबकि प्रश्न यह है कि कोई मनुष्य जीवित है या मर गया है और यह साबित किया गया है कि उसके बारे में सात वर्ष से उन्होंने कुछ नहीं सुना है, जिन्होंने उसके बारे में यदि वह जीवित होता तो स्वाभाविकतया सुना होता, तब यह साबित करने का भार कि वह जीवित है उस व्यक्ति पर चला जाता है, जो उसे प्रतिज्ञात करता है।

109. जबकि प्रश्न यह है कि क्या कोई व्यक्ति भागीदार, भूस्वामी और अभिधारी, या मालिक और अभिकर्ता हैं, और यह दर्शित कर दिया गया है कि वे इस रूप में कार्य करते रहे हैं, तब यह साबित करने का भार कि ऋमणः इन सम्बन्धों में वे परस्पर अवस्थित नहीं हैं या अवस्थित होने से परिवरत हो चुके हैं, उस व्यक्ति पर है, जो उसे प्रतिज्ञात करता है।

110. जबकि प्रश्न यह है कि क्या कोई व्यक्ति ऐसी किसी चीज का स्वामी है जिस पर उसका कब्जा होना दर्शित किया गया है, तब यह साबित करने का भार कि वह स्वामी नहीं है, उस व्यक्ति पर है, जो प्रतिज्ञात करता है कि वह स्वामी नहीं है।

111. जहां कि उन पक्षकारों के बीच के संव्यवहार के सद्भाव के बारे में प्रश्न है, जिनमें से एक दूसरे के प्रति सक्रिय विश्वास की स्थिति में है, वहां उस संव्यवहार के सद्भाव को साबित करने का भार उस पक्षकार पर है जो सक्रिय विश्वास की स्थिति में है।

बृष्टांत

(क) कक्षीकार द्वारा अटर्नी के पश्च में किए गए विक्रय का सद्भाव कक्षीकार द्वारा लाए गए बाद में प्रस्तुत है। संघवहार का सद्भाव सांवित करने का भार अटर्नी पर है।

(ख) पुत्र द्वारा, जोकि हाल ही में प्राप्तवय हुआ है, पिता को किए गए किसी विक्रय का सद्भाव पुत्र द्वारा लाए गए बाद में प्रस्तुत है। संघवहार के सद्भाव को सांवित करने का भार पिता पर है।

112. यह तथ्य कि किसी व्यक्ति का जन्म उसकी माता और किसी पुरुष के बीच विधिमान्य विवाह के कायम रहते हुए या उसका विघटन होने के उपरान्त माता के अविवाहित रहते हुए दो सौ अस्मी दिन के भीतर हुआ था, इस बात का निश्चयक सबूत होगा कि वह उस पुरुष का धर्मज पुत्र है, जब तक कि यह दर्शित न किया जा सके कि विवाह के पक्षकारों की परस्पर पहुंच ऐसे किसी समय नहीं थी जब उसका गमधारण किया जा सकता था।

113. ग्रामकीय राजपत्र में यह अधिसूचना कि ब्रिटिश राज्यक्षेत्र का कोई भाग किसी भारतीय राज्य, राजा या शासक को गवर्नरमेंट आफ हण्डिया एक्ट के भाग 3 के प्रारम्भ से पूर्व अध्यर्पित किया गया है, इस बात का निश्चायक सबूत होगी कि ऐसे राज्यक्षेत्र का ऐसी अधिसूचना में वर्णित तारीख को विधिमान्य अध्यर्पण हुआ।

114. न्यायालय ऐसे किसी तथ्य का अस्तित्व उपधारित कर सकेगा जिसका घटित होना उस विशिष्ट मामले के तथ्यों के सम्बन्ध में प्राकृतिक घटनाओं, मानवीय आचरण तथा लोक और प्राइवेट कारबार के सामान्य अनुक्रम को ध्यान में रखते हुए वह सम्भाव्य समझता है।

विवाहित स्थिति
के दौरान में
जन्म होना धर्मजत्व
का निश्चायक सबूत
है।

राज्यक्षेत्र
अध्यर्पण
का
सबूत।

न्यायालय किन्हीं
तथ्यों का अस्तित्व
उपधारित कर
सकेगा।

बृष्टांत

न्यायालय उपधारित कर सकेगा—

(क) कि चुराए हुए माल पर जिस मनुष्य का चोरी के शीघ्र उपरान्त कब्जा है, जब तक कि वह अपने कब्जे का कारण न बता सके, या तो वह जोर है या उसने माल को चुराया हुआ जानते हुए प्राप्त किया है;

(ख) कि मह-अपराधी विश्वमनीयता के अयोग्य है, जब तक कि तात्त्विक विशिष्टियों में उसकी सम्पुष्टि नहीं होती;

(ग) कि कोई प्रतिगृहीत या पृष्ठांकित विनिमयपत्र समुचित प्रतिफल के लिए प्रतिगृहीत या पृष्ठांकित किया गया था;

(घ) कि ऐसी कोई चीज़ या चीजों की दशा अब भी अस्तित्व में है, जिसका उतनी कालावधि से, जितनी में ऐसी चीज़ें या चीजों की दशाएं प्रायः अस्तित्व-शून्य हो जाती हैं, लघुतर कालावधि में अस्तित्व में होना दर्शित किया गया है;

(ङ) कि न्यायिक और परीय कार्य नियमित स्पष्ट से संपादित किए गए हैं;

(न) कि विशिष्ट मामलों में कारबार के मामान्य अनुश्रम का अनुसरण किया गया है;

(छ) कि यदि वह माथ्य जो पेश किया जा सकता था और पेश नहीं किया गया है, पेश किया जाता, तो उस व्यक्ति के अननुकूल होता, जो उसका विधारण किए हुए है;

(ज) कि यदि कोई भनुप्य प्रेस किसी प्रश्न का उत्तर देने से इन्कार करता है, जिसका उत्तर देने के लिए वह विधि द्वारा विवश नहीं है, तो उत्तर, यदि वह दिया जाता, उसके अननुकूल होता;

(झ) कि जब किसी बाध्यता का सूजन करने वाली दस्तावेज बाध्यताधारी के हाथ में है, तब उस बाध्यता का उन्मोचन हो चुका है।

किन्तु न्यायालय यह विचार करने में कि ऐसे भूत उसके समक्ष के विशिष्ट मामले को लागू होते हैं या नहीं, निम्नलिखित प्रकार के तथ्यों का भी ध्यान रखेगा—

दृष्टांत (क) के बारे में—किसी दुकानदार के पास उसके गले में कोई चिह्नित स्थाया उसके चुराए जाने के शीघ्र पश्चात है, और वह उसके कब्जे का कारण विनिर्दिष्ट: नहीं बता सकता किन्तु अपने कारबार के अनुश्रम में वह स्पष्ट लगातार प्राप्त कर रहा है;

दृष्टांत (ख) के बारे में—एक अत्यन्त ऊँचे शील का व्यक्ति क, किसी मशीनरी को ठीक-ठीक लगाने में किसी उपेक्षापूर्वक कार्य द्वारा किसी व्यक्ति की मृत्यु कारित करने के लिए विचारित है। वैसा ही अच्छे शील का व्यक्ति, ख, जिसने मशीनरी लगाने के उस काम में भाग लिया था, व्योरेवार वर्णन करता है कि क्या क्या किया गया था, और क की और स्वयं अपनी सामान्य असावधानी स्वीकृत और स्पष्ट करता है;

दृष्टांत (ख) के बारे में—कोई अपराध कई व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। अपराधियों में से तीन क, ख और ग घटनास्थल घर पकड़े जाते हैं और एक दूसरे से अलग रखे जाते हैं। अपराध का विवरण उनमें से हरएक ऐसा देता है जो घ को आलिप्त करता है और ये विवरण एक दूसरे को किसी प्रेसी रीति में सम्पूर्ण करते हैं जिससे उनमें यह अति अनधिमम्भाव्य हो जाता है कि उन्होंने इसके पूर्व मिलकर कोई योजना बनाई थी;

दृष्टांत (ग) के बारे में—किसी विनिमयपत्र का लेखीबाल, क व्यापारी था। प्रतिगृहीता ख पूर्णतः क के अमर के अधीन एक युवक और नासमझ व्यक्ति था;

दृष्टांत (घ) के बारे में—यह सामित किया गया है कि कोई नदी अमक मार्ग में पांच वर्ष पूर्व बहती थी, किन्तु यह ज्ञात है कि उस समय से ऐसी बाढ़ें आई हैं जो उसके मार्ग को परिवर्तित कर सकती थीं;

दृष्टांत (ङ) के बारे में—कोई न्यायिक कार्य, जिसकी नियमितता प्रश्नगत है, असाधारण परिस्थितियों में किया गया था;

दृष्टांत (च) के बारे में—प्रश्न यह है कि क्या कोई पत्र प्राप्त हुआ था। उसका डाक में डाला जाना दर्शित किया गया है, किन्तु डाक के सामान्य अनुक्रम में उपद्रवों के कारण विघ्न पड़ा था;

दृष्टांत (छ) के बारे में—कोई मनष्य किसी ऐसी दस्तावेज़ को पेश करने से इन्कार करता है जिसका असर किसी अल्प महत्व की ऐसी संविदा पर पड़ता है, जिसके आधार पर उसके विरुद्ध वाद लाया गया है, किन्तु जो उसके कुटुम्ब की भावनाओं और ज्याति को भी क्षति पहुंचा सकती है;

दृष्टांत (ज) के बारे में—कोई मनष्य किसी प्रश्न का उत्तर देने से इन्कार करता है जिसका उत्तर देने के लिए वह विधि द्वारा विवश नहीं है, किन्तु उसका उत्तर उसे उस विषय से असंसक्त विषयों में हानि पहुंचा सकता है, जिसके सम्बन्ध में वह पूछा गया है;

दृष्टांत (झ) के बारे में—कोई बन्धपत्र वाध्यताधारी के कब्जे में है किन्तु भागलं की परिस्थितियों ऐसी हैं कि हो सकता है, उसने उसे चुराया हो।

अध्याय 8

विवरण

115. जबकि एक व्यक्ति ने अपनी धोषणा, कार्य या लोप द्वारा अन्य व्यक्ति को विश्वास साशय कराया है या कर लेने दिया है कि कोई बात सत्य है और ऐसे विश्वास पर कार्य कराया या करने दिया है, तब न तो उसे और न उसके प्रतिनिधि को अपने और ऐसे व्यक्ति के, या उसके प्रतिनिधि के, बीच किसी वाद या कार्यवाही में उस बात की सत्यता का प्रत्याख्यान करने दिया जाएगा।

दृष्टांत

क साशय और मिथ्या रूप से ख को यह विश्वास करने के लिए प्रेरित करता है कि अमुक भूमि क की है, और तद्वारा ख को उसे क्य करने और उसका मूल्य चुकाने के लिए उत्प्रेरित करता है।

तत्पश्चात् भूमि क की सम्पत्ति हो जाती है और क इस आधार पर कि विक्रय के समय उसका उसमें हक्क नहीं या विक्रय अपास्त करने की ईन्सा करता है। उसे अपने हक्क का अभाव सावित नहीं करने दिया जाएगा।

116. स्थावर सम्पत्ति के किसी भी अभिधारी को या ऐसे अभिधारी से व्युत्पन्न अधिकार से दावा करने वाले व्यक्ति को, ऐसी अभिधृति के चालू रहने हुए, इस का प्रत्याख्यान न करने दिया जाएगा कि ऐसे अभिधारी के भूस्वामी का ऐसी स्थावर सम्पत्ति पर, उस अभिधृति के आरम्भ पर हक्क था तथा किसी भी व्यक्ति को, जो किसी स्थावर

विवरण

अभिधारी का और फ़ज्जाधारी व्यक्ति के अनुशङ्खितधारी का विवरण।

सम्पत्ति पर उस पर कङ्गाधारी व्यक्ति की अनुज्ञप्ति द्वारा आया है, इसका प्रत्याख्यान न करने दिया जाएगा कि ऐसे व्यक्ति को उस समय, जब ऐसी अनुज्ञप्ति दी गई थी, ऐसे कङ्गे का हक्क था।

विनिमयपत्र के प्रतिगृहीता का, उपनिहिती का या अनुज्ञप्तिधारी का विवर्ण ।

117. किसी विनिमयपत्र के प्रतिगृहीता को इसका प्रत्याख्यान करने की अनुशा न दी जाएगी कि लेखीवाल को ऐसा विनिमयपत्र लिखने या उस पृष्ठांकित करने का प्राधिकार था, और न किसी उपनिहिती या अनुज्ञप्तिधारी को इसका प्रत्याख्यान करने दिया जाएगा कि उपनिहिता या अनुज्ञापक को उस समय, जब ऐसा उपनिधान या अनुज्ञप्ति आरम्भ हुई, ऐसे उपनिधान करने या अनुज्ञप्ति अनुदान करने का प्राधिकार था।

स्पष्टीकरण (1)—किसी विनिमयपत्र का प्रतिगृहीता इसका प्रत्याख्यान कर सकता है कि विनिमयपत्र वास्तव में उस व्यक्ति द्वारा लिखा गया था जिसके द्वारा लिखा गया वह तात्पर्यित है।

स्पष्टीकरण (2)—यदि कोई उपनिहिती, उपनिहित माल उपनिधाता से अन्य किसी व्यक्ति को परिदृत करता है, तो वह साबित कर सकेगा कि ऐसे व्यक्ति का उसपर उपनिधाता के विरुद्ध वधिकार था।

अध्याय ९

साक्षियों के विषय में

कौन साक्ष्य दे सकेगा ।

118. सभी व्यक्ति साक्ष्य देने के लिए सक्षम होंगे, जब तक कि न्यायालय का यह विचार न हो कि कोमल वयस, अतिवार्धक्य, शरीर के या मन के रोग या इसी प्रकार के किसी अन्य कारण से वे उनसे किए गए प्रश्नों को समझने से या उन प्रश्नों के युक्तिसंगत उत्तर देने से निवारित हैं।

स्पष्टीकरण-कोई पागल व्यक्ति साक्ष्य देने के लिए अक्षम नहीं है, जब तक कि वह अपने पागलपन के कारण उससे किए गए प्रश्नों को समझने से या उनके युक्तिसंगत उत्तर देने से निवारित न हो।

मूक साक्षी ।

119. वह साक्षी, जो बोलने में असमर्थ है, अपना साक्ष्य किसी अन्य प्रकार से, जिसमें वह उसे बोधगम्य बना सकता हो, यथा लिखकर या संकेतों द्वारा दे सकेगा, किन्तु ऐसा लेख और वे संकेत खुले न्यायालय में ही लिखने होंगे या करने होंगे। इस प्रकार दिया तुआ साक्ष्य मौखिक साक्ष्य ही समझा जाएगा।

सिविल वाद के पक्षकार और उनकी पत्तियाँ या पति ।
शास्त्रिक विचारण के अधीन व्यक्ति का पति या पत्नी ।

120. सभी सिविल कार्यवाहियों में वाद के पक्षकार और वाद के किसी पक्षकार का पति या पत्नी सक्षम साक्षी होंगे। किसी व्यक्ति के विरुद्ध दाविड़क कार्यवाही में उस व्यक्ति का पति या पत्नी सक्षम साक्षी होगा या होगी।

121. कोई भी न्यायाधीश या मजिस्ट्रेट न्यायालय में ऐसे न्यायाधीश न्यायाधीश और मजिस्ट्रेट ।

या मजिस्ट्रेट के नाते अपने स्वयं के आचरण के बारे में, या ऐसी किसी बात के बारे में, जिसका ज्ञान उसे ऐसे न्यायाधीश या मजिस्ट्रेट के 'नाते न्यायालय में हुआ, किन्तु प्रश्नों का उत्तर देने के लिए ऐसे किसी भी न्यायालय के विशेष आदेश के सिवाय, जिसके बहु अधीनस्थ है, विवश नहीं किया जाएगा किन्तु अन्य बातों के बारे में, जो उसकी उपस्थिति में उस समय घटित हुई थी, जब वह ऐसे कार्य का रहा था उसकी परीक्षा की जा सकेगी ।

वृष्टात्

(क) सेशंस न्यायालय के समक्ष अपने विचारण में क कहता है कि अभिसाक्ष्य मजिस्ट्रेट खड़ारा अनुचित रूप से लिया गया था । तटिष्ठक प्रश्नों का उत्तर देने के लिए क को किसी वरिष्ठ न्यायालय के विशेष आदेश के सिवाय विवश नहीं किया जा सकता ।

(ख) मजिस्ट्रेट ख के समक्ष मिथ्या साक्ष्य देने का क सेशंस न्यायालय के समक्ष अभियुक्त है । वरिष्ठ न्यायालय के विशेष आदेश के सिवाय ख से यह नहीं पूछा जा सकता कि क ने क्या कहा था ।

(ग) क सेशंस न्यायालय के समक्ष इसलिए अभियुक्त है कि उसने सेशंस न्यायाधीश ख के समक्ष विचारित होते समय किसी पुलिस आफिसर की हत्या करने का प्रयत्न किया । ख की यह परीक्षा की जा सकेगी कि क्या वह उसने किया जाएगा ।

122. कोई भी व्यक्ति, जो विवाहित है या जो विवाहित रह चुका है, किसी संसूचना को, जो किसी व्यक्ति द्वारा, जिससे वह विवाहित है या रह चुका है, विवाहित स्थिति के दौरान में उसे दी गई थी, प्रकट करने के लिए विवश न किया जाएगा, और न वह किसी ऐसी संसूचना को प्रकट करने के लिए अनुशास नहीं किया जाएगा, जब तक वह व्यक्ति, जिसने वह संसूचना दी है या उसका हित-प्रतिनिधि सम्मत न हो, सिवाय उन बादों में, जो विवाहित व्यक्तियों के बीच हों, या उन कार्यवाहियों में, जिनमें एक विवाहित व्यक्ति दूसरे के विरुद्ध किए गए किसी अपराध के लिए अभियोजित है ।

विवाहित स्थिति के दौरान में की गई संसूचनाएं ।

123. कोई भी व्यक्ति राज्य के किसी भी कार्यकालापों से सम्बन्धित अप्रकाशित शासकीय अभिनेत्रों से अनुप्रप्त कोई भी साक्ष्य देने के लिए अनुशास न किया जाएगा, सिवाय मध्यवर्त विभाग के प्रमुख आफिसर की अनुज्ञा के जो ऐसी अनुज्ञा देगा या उसे विधायित करेगा, जैसा करना वह ठीक समझे ।

राज्य के कार्यकालापों के बारे में साक्ष्य ।

शासकीय संसूचनाएं ।

124. कोई भी लोक आफिसर उसे शासकीय विश्वास में दी हुई संसूचनाओं को प्रकट करने के लिए विवश नहीं किया जाएगा, जब कि वह समझता है कि उस प्रकटन से लोक हित की हानि होगी ।

125. कोई भी मजिस्ट्रेट या पुलिस आफिसर यह कहने के लिए विवश नहीं किया जाएगा कि किसी अपराध के किए जाने के बारे में उसे कोई जानकारी कहाँ से मिली और किसी भी राजस्व आफिसर को यह कहने के लिए विवश नहीं किया जाएगा कि उसे लोक राजस्व के विरुद्ध किसी अपराध के किए जाने के बारे में कोई जानकारी कहाँ से मिली ।

अपराधों के करने के बारे में जानकारी ।

स्पष्टीकरण—इस धारा में “राजस्व आफिसर” से लोक राजस्व की किसी शास्त्र के कारबाह में या के बारे में नियोजित आफिसर अभिप्रेत है।

वृत्तिक संसूचनाएँ।

126. कोई भी बेरिस्टर, अटर्नी, प्लीडर या वकील अपने कक्षीकार की अभिव्यक्ति सम्मति के सिवाय ऐसी किसी संसूचना को प्रकट करने के लिए, जो उसके ऐसे बेरिस्टर, अटर्नी, प्लीडर या वकील की हैसियत में नियोजन के अनुक्रम में, या के प्रयोजनार्थ उसके कक्षीकार द्वारा, या की ओर से उसे वी गई हौ अथवा किसी दस्तावेज की, जिससे वह अपने वृत्तिक नियोजन के अनुक्रम में या के प्रयोजनार्थ परिचित हो गया है, अन्तर्वर्स्तु या दशा कथित करने को अथवा किसी सलाह को, जो ऐसे नियोजन के अनुक्रम में या के प्रयोजनार्थ उसने अपने कक्षीकार को दी है, प्रकट करने के लिए किसी भी समय अनुशास नहीं किया जाएगा;

परन्तु इस धारा की कोई भी बात निम्नलिखित बात को प्रकटीकरण से संरक्षण न देगी—

- (1) किसी भी अवैध प्रयोजन को अग्रसर करने में दी गई कोई भी ऐसी संसूचना,
- (2) ऐसा कोई भी तथ्य जो किसी बेरिस्टर, प्लीडर, अटर्नी या वकील ने अपनी ऐसी हैसियत में नियोजन के अनुक्रम में सम्प्रेक्षित किया हूँ, और जिससे दर्शित हो कि उसके नियोजन के प्रारम्भ के पश्चात् कोई अपराध या कपट किया गया है।

यह तत्वहीन है कि ऐसे बेरिस्टर, प्लीडर, अटर्नी या वकील का घ्यान ऐसे तथ्य के प्रति उसके कक्षीकार के द्वारा या की ओर से आकर्षित किया गया था या नहीं।

स्पष्टीकरण—इस धारा में कथित बाध्यता नियोजन के अवसित हो जाने के उपरान्त भी बनी रहती है।

दृष्टांत

(क) कक्षीकार क, अटर्नी ख से कहता है, “मैंने कूटरचना की है और मैं चाहता हूँ कि आप मेरी प्रतिरक्षा करें।

यह संसूचना प्रकटन से संरक्षित है, क्योंकि ऐसे व्यक्ति की प्रतिरक्षा आपराधिक प्रयोजन नहीं है, जिसका दोषी होना शात हो।

(ख) कक्षीकार क, अटर्नी ख से कहता है, “मैं सम्पत्ति पर कूब्जा कूट-रचित विलेख के उपयोग द्वारा अभिप्रात करना चाहता हूँ और इस आधार पर वाद लाने की मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ।

यह संसूचना आपराधिक प्रयोजन के अग्रसर करने में की गई होने से प्रकटन से संरक्षित नहीं है।

(ग) क पर गवन का आरोप लगाए जाने पर यह अपनी प्रतिरक्षा करने के लिए अटर्नी ख को प्रतिधारित करता है। कार्यवाही के अनुक्रम में ख देखता है कि क की लेखाबही में यह प्रविष्टि की गई है कि क द्वारा उतनी रकम देनी है जितनी के बारे में अभिकथित है कि उसका गवन किया गया है, जो प्रविष्टि उसके नियोजन के आरम्भ के समय उस बही में नहीं थी।

यह स्थारा अपने नियोजन के अनुक्रम में सम्प्रेक्षित ऐसा तथ्य होने से, जिससे दर्शित होता है कि कपट उस कार्यवाही के प्रारम्भ होने के पश्चात् किया गया है, प्रकटन से संरक्षित नहीं है।

127. धारा 126 के उपबन्ध दुभाषियों और बेरिस्टरों, प्लीडरों, अटनीयों और वकीलों के लिपियों या सेवकों को लागू होंगे।

धारा 126 दुभाषियों आदि को लागू होगी।

128. यदि किसी वाद का कोई पक्षकार स्वप्रेरणा से ही या अन्यथा उसमें साक्ष्य देता है तो यह न समझा जाएगा कि तद्द्वारा उसने ऐसे प्रकटन के लिए, जैसा धारा 126 में वर्णित है, सम्मति दे दी है, तथा यदि किसी वाद या कार्यवाही का कोई पक्षकार, ऐसे किसी बेरिस्टर, प्लीडर, अटनीया वकील को साक्षी के रूप में बुलाता है, तो यह कि उसने ऐसे प्रकटन के लिए अपनी सम्मति दे दी है केवल तभी समझा जाएगा, जब कि वह ऐसे बेरिस्टर, अटनीया वकील से उन बातों के बारे में प्रश्न करे जिनके प्रकटन के लिए वह ऐसे प्रश्नों के अभाव में स्वाधीन न होता।

साक्ष्य देने के लिए स्वयमेव उच्यत होने से विशेषाधिकार अधित्यक्त नहीं हो जाता।

129. कोई भी व्यक्ति किसी गोपनीय संसूचना को, जो उसके और उसके विधि-वृत्तिक सलाहकार के बीच हुई है, न्यायालय को प्रकट करने के लिए विवश नहीं किया जाएगा, जब तक कि वह अपने को साक्षी के तौर पर पेश न कर दे; ऐसे पेश करने की दशा में किन्हीं भी ऐसी संसूचनाओं को, जिन्हें उस किसी साक्ष्य को स्पष्ट करने के लिए जानना, जो उसने दिया है, न्यायालय को आवश्यक प्रतीत हो, प्रकट करने के लिए विवश किया जा सकेगा किन्तु किन्हीं भी अन्य संसूचनाओं को नहीं।

विधि सलाहकारों से गोपनीय संसूचनाएं।

130. कोई भी साक्षी, जो वाद का पक्षकार नहीं है, किसी सम्पत्ति सम्बन्धी अपने हक्क-विलेखों को, या किसी ऐसी दस्तावेज़ को, जिसके बल पर वह गिरवीदार या बन्धकदार के रूप में कोई सम्पत्ति धारण करता है, या किसी दस्तावेज़ को, जिसका पेशकरण उसे अपराध में फँसाने की प्रवृत्ति रखता है, पेश करने के लिए विवश नहीं किया जाएगा, जब तक कि उसने ऐसे विलेखों के पेशकरण की ईमार रखने वाले व्यक्ति के साथ, या ऐसे किसी व्यक्ति के साथ जिससे व्युत्पन्न अधिकार से वह व्यक्ति दावा करता है, उन्हें पेश करने का लिखित कागज न कर लिया हो।

जो साक्षी पक्षकार नहीं है उस के हक्क-विलेखों का पेश किया जाना।

131. कोई भी व्यक्ति अपने कङ्गे में की ऐसी दस्तावेजों को पेश करने के लिए, जिनको पेश करने से कोई अन्य व्यक्ति, यदि वे उसके कङ्गे में होती, इन्कार करने का हक्कदार होता, विवश नहीं किया जाएगा, जब तक कि ऐसा अन्तिम वर्णित व्यक्ति उनके पेशकरण के लिए सम्मति नहीं देता।

उन दस्तावेजों का पेश किया जाना जिन्हें कोई दूसरा व्यक्ति, जिसका उन पर कङ्गा है, पेश करने से इन्कार कर सकता था।

इस आधार पर कि
उत्तर उसे अपराध
में फंसाएगा,
साक्षी उत्तर देने
से क्षम्य न होगा।

परन्तुका ।

सहअपराधी ।

साक्षियों की
संख्या ।

साक्षियों के पेशकरण
और उनकी परीक्षा
का क्रम ।

न्यायाधीश साक्ष्य
की ग्राह्यता के
बारे में निश्चय
करेगा ।

132. कोई साक्षी किसी बाद या किसी सिविल या दाइण्डक कार्यवाही
में विवादिक विषय से सुसंगत किसी विषय के बारे में किए गए किसी प्रश्न
का उत्तर देने से इस आधार पर क्षम्य नहीं होगा कि ऐसे प्रश्न का उत्तर
ऐसे साक्षी को अपराध में फंसाएगा या उसकी प्रवृत्ति प्रत्यक्षतः या पराक्रतः
अपराध में फंसाने की हाँगी अथवा वह ऐसे साक्षी को किसी किसी विषय की
शास्ति या सम्पदहरण के लिए उच्छब्द करेगा या उसकी प्रवृत्ति प्रत्यक्षतः
या पराक्रतः उच्छब्द करने की होगी ;

परन्तु ऐसा कोई भी उत्तर, जिसे देने के लिए कोई साक्षी विवाद किया
जाएगा उसे गिरफ्तारी या अभियोजन के अध्यधीन नहीं करेगा और न
ऐसे उत्तर द्वारा मिथ्या साक्ष्य देने के लिए अभियोजन में के सिवाय वह
उसके विशद्द किसी दाइण्डक कार्यवाही में साबित किया जाएगा ।

133. सहअपराधी, अभियुक्त व्यक्ति के विशद्द सक्षम साक्षी होंगा,
और कोई दोपसिद्धि केवल इसलिए अवैध नहीं है कि वह किसी सहअपराधी
के असमुज्ज्ञ परिसाक्ष्य के आधार पर की गई है ।

134. किसी मामले में किसी तथ्य को साबित करने के लिए साक्षियों
की कोई विशिष्ट संख्या अपेक्षित नहीं होंगी ।

अध्याय 10

साक्षियों की परीक्षा के विषय में

135. साक्षियों के पेशकरण और उनकी परीक्षा का क्रम, क्रमशः सिविल
और दण्ड प्रक्रिया से तत्समय सम्बन्धित विधि और पद्धति द्वारा, तथा ऐसी
किसी विधि के अभाव में न्यायालय के विवेक द्वारा, विनियमित होगा ।

136. जब कि दोनों में से कोई पक्षकार किसी तथ्य का साक्ष्य देने की
प्रस्थापना करता है, तब न्यायाधीश साक्ष्य देने की प्रस्थापना करने वाले
पक्षकार से पूछ सकेगा कि अभिकथित तथ्य, यदि वह साबित हो जाए, किस
प्रकार सुसंगत होगा, और यदि न्यायाधीश यह समझता है कि वह तथ्य यदि
साबित हो गया तो सुसंगत होगा, तो वह उस साक्ष्य को ग्रहण करेगा, अन्यथा
नहीं ।

यदि वह तथ्य, जिसका साबित करना प्रस्थापित है, ऐसा है जिसका साक्ष्य
किसी अन्य तथ्य के साबित होने पर ही ग्राह्य होता है, तो ऐसा अन्तिम वर्णित
तथ्य प्रथम वर्णित तथ्य का साक्ष्य दिए जाने के पूर्व साबित करना होगा, जब
तक कि पक्षकार ऐसे तथ्य को साबित करने का वचन न दे दे और न्यायालय
ऐसे वचन से संतुष्ट न हो जाए ।

यदि एक अभिकथित तथ्य की सुसंगति अन्य अभिकथित तथ्य के प्रथम साबित
होने पर निर्भर हो, तो न्यायाधीश अपने विवेकानुसार या तो दूसरे तथ्य के
साबित होने के पूर्व प्रथम तथ्य का साक्ष्य दिया जाना अनुचात कर सकेगा,
या प्रथम तथ्य का साक्ष्य दिए जाने के पूर्व द्वितीय तथ्य का साक्ष्य दिए जाने की
अपेक्षा कर सकेगा ।

वृष्टिंत

(क) यह प्रस्थापना की गई है कि एक व्यक्ति के, जिसका मृत होना अधिकथित है, सुसंगत तथ्य के बारे में एक कथन को, जो कि धारा 32 के अधीन सुसंगत है, साबित किया जाए।

इससे पूर्व कि उस कथन का साक्ष्य दिया जाए उस कथन को साबित करने की प्रस्थापना करने वाले व्यक्ति को यह तथ्य साबित करना होगा कि वह व्यक्ति मर गया है।

(ख) यह प्रस्थापना की गई है कि एसी दस्तावेज़ की अन्तर्वर्स्तु को, जिसका खोई हुई होना कथित है, प्रतिलिपि द्वारा साबित किया जाए।

यह तथ्य कि मूल खो गया है प्रतिलिपि पेश करने की प्रस्थापना करने वाले व्यक्ति को वह प्रतिलिपि पेश करने से पूर्व साबित करना होगा।

(ग) क चुराई हुई सम्पत्ति को यह जानते हुए कि वह चुराई हुई है प्राप्त करने का अभियुक्त है।

यह साबित करने की प्रस्थापना की गई है कि उसने उस सम्पत्ति के कब्जे का प्रत्याख्यान किया।

इस प्रत्याख्यान की सुसंगति सम्पत्ति की अनन्यता पर निर्भर है। न्यायालय अपने विवेकानुसार या तो कब्जे के प्रत्याख्यान के साबित होने से पूर्व सम्पत्ति की पर्हिचान की जाने के पूर्व कब्जे का प्रत्याख्यान साबित किए जाने की अनुशा दे सकेगा।

(घ) किसी तथ्य (क) के, जिसका किसी विवाद्यक तथ्य का हेतुक या परिणाम होना कथित है, साबित करने की प्रस्थापना की गई है। कई माध्यान्तरिक तथ्य (ख), (ग) और (घ) हैं, जिनका, इसके पूर्व कि तथ्य (क) उस विवाद्यक तथ्य का हेतुक या परिणाम माना जा सके, अस्तित्व में होना दर्शित किया जाना आवश्यक है। न्यायालय या तो ख, ग या घ के साबित किए जाने के पूर्व के साबित किए जाने की अनुशा दे सकेगा, या क का साबित किया जाना अनुशास्त करने के पूर्व ख, ग और घ का साबित किया जाना अपेक्षित कर सकेगा।

137. किसी साक्षी की उस पक्षकार द्वारा, जो उसे बुलाता है, परीक्षा मुद्यपरीक्षा। उसकी मुद्यपरीक्षा कहलाएगी।

किसी साक्षी की प्रतिपक्षी द्वारा की गई परीक्षा उसकी प्रतिपरीक्षा प्रतिपरीक्षा। कहलाएगी।

किसी साक्षी की प्रतिपरीक्षा के पश्चात् उसकी उस पक्षकार द्वारा, जिसने उसे बुलाया था, परीक्षा उसकी पुनःपरीक्षा कहलाएगी।

138. साक्षियों से प्रथमतः मुद्यपरीक्षा होगी, तत्पश्चात् (यदि प्रति-पक्षी ऐसा चाहे तो) प्रतिपरीक्षा होगी, तत्पश्चात् (यदि उसे बुलाने वाला पक्षकार ऐसा चाहे तो) पुनःपरीक्षा होगी। परीक्षाओं का क्रम।

परीक्षा और प्रतिपरीक्षा को सुसंगत तथ्यों से सम्बन्धित होना होगा, किन्तु प्रतिपरीक्षा का उन तथ्यों तक सामित रहना आवश्यक नहीं है, जिनका साक्षी ने अपनी मुख्य परीक्षा में परिसाक्षय दिया है।

पुनःपरीक्षा
दिशा ।

की

पुनःपरीक्षा उन बातों के स्पष्टीकरण के प्रति उद्दिष्ट होगी जो प्रति-परीक्षा में निर्दिष्ट हुए हों; तथा यदि पुनःपरीक्षा में न्यायालय की अनुज्ञा से कोई नई बात प्रविष्ट की गई हो, तो प्रतिपक्षी उस बात के बारे में अतिरिक्त प्रतिपरीक्षा कर सकेगा।

किसी दस्तावेज़ को पेश करने के लिए समनित व्यक्ति की प्रतिपरीक्षा ।

शील का साक्ष्य देने वाले साक्षी ।

सूचक प्रश्न ।

उन्हें कब नहीं पूछना चाहिए !

139. किसी दस्तावेज़ को पेश करने के लिए समनित व्यक्ति के बल इस तथ्य के कारण कि वह उसे पेश करता है साक्षी नहीं हो जाता तथा यदि और जब तक वह साक्षी के तौर पर बुलाया नहीं जाता, उसकी प्रतिपरीक्षा नहीं की जा सकती।

140. शील का साक्ष्य देने वाले साक्षियों की प्रतिपरीक्षा और पुनःपरीक्षा की जा सकेगी।

141. कोई प्रश्न, जो उस उत्तर को सुनाता है, जिसे पूछने वाला व्यक्ति पाना चाहता है या पाने की आशा करता है, सूचक प्रश्न कहा जाता है।

142. सूचक प्रश्न मुख्य परीक्षा में या पुनःपरीक्षा में, यदि विरोधी पक्षकार द्वारा आक्षेप किया जाता है, न्यायालय की अनुज्ञा के बिना नहीं पूछे जाने चाहिए।

न्यायालय उन बातों के बारे में, जो पुरास्थापना के रूप में या निर्विवाद हैं या जो उसकी राय में पहले से ही पर्याप्त रूप से साबित हो चुके हैं, सूचक प्रश्नों के लिए अनुज्ञा देगा।

उन्हें कब पूछा जा सकेगा ।

143. सूचक प्रश्न प्रतिपरीक्षा में पूछे जा सकेंगे।

लेखबद्ध विषयों के बारे में साक्ष्य ।

144. किसी साक्षी से, जब कि वह परीक्षाधीन है, यह पूछा जा सकेगा कि क्या कोई संविवाद, अनुदान या सम्पत्ति का अन्य व्ययन, जिसके बारे में वह साक्ष्य दे रहा है, किसी दस्तावेज़ में अन्तर्विष्ट नहीं था, और यदि वह कहता है कि वह था, या यदि वह किसी ऐसी दस्तावेज़ की अन्तर्वस्तु के बारे में कोई कथन करने ही वाला है, जिसे न्यायालय की राय में, पेश किया जाना चाहिए, तो प्रतिपक्षी आक्षेप कर सकेगा कि ऐसा साक्ष्य तब तक नहीं दिया जाए जब तक ऐसी दस्तावेज़ पेश नहीं कर दी जाती, या जब तक वे तथ्य साबित नहीं कर दिए जाते, जो उस पक्षकार को, जिसने साक्षी को बुलाया है, उसका द्वितीयिक साक्ष्य देने का हक देते हैं।

स्पष्टीकरण—कोई साक्षी उन कथनों का, जो दस्तावेजों की अन्तर्वस्तु के बारे में अन्य व्यक्तियों द्वारा किए गए थे, मौखिक साक्ष्य दे सकेगा, यदि ऐसे कथन स्वयमेव सुसंगत तथ्य हैं।

बृहदीत

प्रश्न यह है कि क्या क ने ख पर हमला किया ।

ग अभिभास्य देता है कि उसने क को घ से यह कहते सुना है कि “ख ने मुझे एक पत्र लिखा था जिसमें मुझपर चोरी का अभियोग लगाया था और मैं उससे बदला लूँगा।” यह कथन हमले के लिए क का आशय दर्शित करने वाला होने के नाते सुसंगत है और उसका साक्ष्य दिया जा सकेगा, आहे पत्र के बारे में कोई अन्य साक्ष्य न भी दिया गया हो ।

145. किसी साक्षी की उन पूर्वतन कथनों के बारे में, जो उसने निखित स्पष्ट में किए हैं, या जो लेखबद्ध किए गए हैं और जो प्रश्नगत बातों से सुसंगत हैं, ऐसा लेख उसे दिखाए बिना, या ऐसे लेख के साथित द्वाए बिना, प्रतिपरीक्षा की जा सकेगी; किन्तु यदि उस लेख द्वारा उसका खण्डन करने का आशय है तो उस लेख को साथित किए जा सकने के पूर्व उसका ध्यान उस लेख के उन भागों की ओर आकर्षित करना होगा जिनका उपयोग उसका खण्डन करने के प्रयोजन से किया जाना है ।

146. जब कि किसी साक्षी से प्रतिपरीक्षा की जाती है, तब उससे एतस्मिन्-पूर्व निर्दिष्ट प्रश्नों के अतिरिक्त ऐसे कोई भी प्रश्न पूछें जा सकेंगे, जिनकी प्रवृत्ति—

- (1) उसकी सत्यवादिता परखने की है,
- (2) यह पता चलाने की है कि वह कौन है और जीवन में उसकी स्थिति क्या है, अथवा
- (3) उसके शील को दोष लगाकर उसकी विश्वभनीयता को धक्का पहुँचाने की है, जाहे ऐसे प्रश्नों का उत्तर उसे प्रत्यक्षतः या परोक्षतः अपराध में फ़माने की प्रवृत्ति रखता हो, या उसे किसी शास्ति या सम्पहरण के लिए उच्छल्षण करता हो या प्रत्यक्षतः या परोक्षतः उच्छल्षण करने की प्रवृत्ति रखता हो ।

147. यदि ऐसा कोई प्रश्न उम बाद या कार्यवाही से सुसंगत किसी बात से सम्बन्धित है, तो धारा 132 के उपबन्ध उसको लागू होंगे ।

148. यदि ऐसा कोई प्रश्न ऐसी बात से सम्बन्धित है, जो उम बाद या कार्यवाही से वहाँ तक के खिलाय, जहाँ तक कि वह साक्षी के शील को दोष लगाकर उसकी विश्वभनीयता पर प्रभाव डालती है, सुसंगत नहीं है, तो न्यायालय विनिश्चित करेगा कि साक्षी को उत्तर देने के लिए विवश किया जाए या नहीं और यदि वह ठीक समझे, तो साक्षी को सचेत कर सकेगा कि वह उसका उत्तर देने के लिए आवश्यक नहीं है। अपने शिवेक का प्रयोग करने में न्यायालय निम्नलिखित विचारों को ध्यान में रखेगा ;—

- (1) ऐसे प्रश्न उचित हैं, यदि वे ऐसी प्रकृति के हैं कि उनके द्वारा प्रवहण किए गए लौछन की सत्यता उस विषय में, जिसका वह साक्षी परिसाक्ष्य देता है, साक्षी की विश्वभनीयता के बारे में न्यायालय की राय पर गम्भीर प्रभाव डालेगी ;

पूर्वतन लेखबद्ध कथनों के बारे में प्रतिपरीक्षा ।

प्रतिपरीक्षा में विधिपूर्ण प्रश्न ।

साक्षी को उत्तर देने के लिए कब विवश किया जाए ।

न्यायालय विनिश्चित करेगा कि कब प्रश्न पूछा जाएगा और साक्षी को उत्तर देने के लिए कब विवश किया जाएगा ।

(2) ऐसे प्रश्न अनुचित हैं, यदि उनके द्वारा प्रवर्हण किया गया लांछन ऐसी बातों के सम्बन्ध में है जो समय में इतनी अतीत हैं या जो इस प्रकार की है कि लांछन की सत्यता उस विषय में, जिसका वह साक्षी परिसाक्ष्य देता है, साक्षी की विश्वसनीयता के बारे में न्यायालय की राय पर प्रभाव नहीं डालेगी या बहुत थोड़ी मात्रा में प्रभाव डालेगी;

(3) ऐसे प्रश्न अनुचित हैं, यदि साक्षी के बील के विरुद्ध किए गए लांछन के महत्व और उसके साक्ष्य के महत्व के बीच भारी अननुपात है;

(4) न्यायालय, यदि वह ठीक भमझे, साक्षी के उत्तर देने से इन्कार करने पर यह अनुमान लगा सकेगा कि उत्तर यदि दिया जाता तो, प्रतिकूल होता।

युक्तियुक्त आधारों
के बिना प्रश्न न
पूछा जाएगा।

149. कोई भी ऐसा प्रश्न, जैसा धारा 148 में निर्दिष्ट है, नहीं पूछा जाना चाहिए, जब तक कि पूछने वाले व्यक्ति के पास यह सोचने के लिए युक्तियुक्त आधार न हो कि वह लांछन, जिसका उससे प्रवर्हण होता है, सुआधारित है।

दृष्टांत

(क) किसी बेरिस्टर को किसी अटर्नी या वकील द्वारा अनदेश दिया गया है कि एक महत्वपूर्ण साक्षी डकैत है। उस साक्षी से यह पूछने के लिए क्या वह डकैत है, यह युक्तियुक्त आधार है।

(ख) किसी वकील को न्यायालय में किसी व्यक्ति द्वारा जानकारी दी जाती है कि एक महत्वपूर्ण साक्षी डकैत है। जानकारी देने वाला, वकील द्वारा प्रश्न किए जाने पर अपने कथन के लिए समाधानप्रद कारण बताता है। उस साक्षी से यह पूछने के लिए कि क्या वह डकैत है यह युक्तियुक्त आधार है।

(ग) किसी साक्षी से, जिसके बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है, अटकलपच्च पूछा जाता है कि क्या वह डकैत है। यहां इस प्रश्न के लिए कोई युक्तियुक्त आधार नहीं है।

(घ) कोई साक्षी, जिसके बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है, अपने जीवन के ढंग और जीविका के साधनों के बारे में पूछे जाने पर असमाधानप्रद उत्तर देता है। उससे यह पूछने का कि क्या वह डकैत है यह युक्तियुक्त आधार हो सकता है।

150. यदि न्यायालय की यह राय हो कि ऐसा कोई प्रश्न युक्तियुक्त आधारों के बिना पूछा गया था, तो यदि वह किसी बेरिस्टर, प्लीडर, वकील या अटर्नी द्वारा पूछा गया था, तो वह मामले की परिस्थितियों की उच्च न्यायालय को या अन्य प्राधिकारी को, जिसके ऐसा बेरिस्टर, प्लीडर, वकील या अटर्नी अपनी वृत्ति के प्रयोग में अधीन है, रिपोर्ट कर सकेगा।

अशिष्ट और
कलंकात्मक प्रश्न।

151. न्यायालय किन्हीं प्रश्नों का या पूछताछ का, जिन्हें वह अशिष्ट या कलंकात्मक समझता है, चाहे ऐसे प्रश्न या जांच न्यायालय के समक्ष प्रश्नों को कुछ प्रभावित करने की प्रवृत्ति रखते हों, निषेध कर सकेगा, जब

तक कि वे विवाद्यक तथ्यों के या उन विषयों के सम्बन्ध में न हों, जिनका ज्ञात होना यह अवधारित करने के लिए आवश्यक है कि विवाद्यक तथ्य विद्यमान थे या नहीं।

152. न्यायालय ऐसे प्रश्न का निषेध करेगा, जो उसे ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपमानित या क्षुद्ध करने के लिए आश्रित है, या जो यद्यपि स्वयं में उचित है, तथापि रूप में न्यायालय को ऐसा प्रतीत होता है कि वह अनावश्यक तौर पर संतापकारी है।

153. जबकि किसी साक्षी से ऐसा कोई प्रश्न पूछा गया हो, जो जांच से केवल वहीं तक सुसंगत है जहाँ तक कि वह उसके शील को क्षति पहुँचा कर उसकी विषयमनायता को धक्का पहुँचाने की प्रवृत्ति रखता है, और उसने उसका उत्तर दें दिया हो, तब उसका खण्डन करने के लिए कोई साक्ष्य नहीं दिया जाएगा ; किन्तु यदि वह मिथ्या उत्तर देता है, तो तत्पश्चात् उस पर मिथ्या साक्ष्य देने का आरोप लगाया जा सकेगा ।

अपवाद 1—यदि किसी साक्षी से पूछा जाए कि क्या वह तत्पूर्व किसी अपराध के लिए दोषसिद्ध हुआ था और वह उसका प्रत्याख्यान करे, तो उसकी पूर्व दोषसिद्ध का साक्ष्य दिया जा सकेगा ।

अपवाद 2—यदि किसी साक्षी से उसकी निष्पक्षता पर अधिक्षेप करने की प्रवृत्ति रखने वाला कोई प्रश्न पूछा जाए और वह सुन्नाए द्वाए तथ्यों के प्रत्याख्यान द्वारा उसका उत्तर देता है, तो उसका खण्डन किया जा सकेगा ।

बृष्टांत

(क) किसी निम्नाकंक के विरुद्ध एक दावे का प्रतिरोध कपट के आधार पर किया जाता है ।

दावेदार से पूछा जाता है कि क्या उसने एक पिछले संव्यवहार में कपटपूर्ण दावा नहीं किया था । वह इसका प्रत्याख्यान करता है ।

यह दर्शित करने के लिए साक्ष्य प्रस्थापित किया जाता है कि उसने ऐसा दावा सचमुच किया था ।

यह साक्ष्य असाध्य है ।

(ख) किसी साक्षी से पूछा जाता है कि क्या वह किसी ओहदे से बेर्इमानी के लिए पदच्युत नहीं किया गया था ।

वह इसका प्रत्याख्यान करता है ।

यह दर्शित करने के लिए कि वह बेर्इमानी के लिए पदच्युत किया गया था साक्ष्य प्रस्थापित किया जाता है ।

यह साक्ष्य ग्राह्य नहीं है ।

(ग) क प्रतिज्ञात करता है कि उसने अमुक दिन ख को लाहौर में देखा ।

क से पूछा जाता है कि क्या वह स्वयं उस दिन कलकत्ते में नहीं था । वह इसका प्रत्याख्यान करता है ।

यह दर्शित करने के लिए कि क उस दिन कलकत्ते में था, साक्ष्य प्रस्थापित किया जाता है ।

अपमानित या क्षुद्ध करने के लिए आश्रित प्रश्न ।

सत्यवादिता परखने के प्रश्नों के उत्तरों का खण्डन करने के लिए साक्ष्य का अपवर्जन ।

यह साक्ष्य ग्राह्य है, इस नाते नहीं कि वह क का एक तथ्य के बारे में खण्डन करता है जो उसकी विश्वसनीयता पर प्रभाव डालता है, वरन् इस नाते कि वह इस अभिकथित तथ्य का खण्डन करता है कि ख प्रश्नगत दिन लाहौर में देखा गया था।

इनमें से हरएक मामले में साक्षी पर, यदि उसका प्रत्याख्यान मिथ्या था, मिथ्या साक्ष्य देने का आरोप लगाया जा सकेगा।

(घ) क से पूछा जाता है कि क्या उसके कुटुम्ब और ख के, जिसके विशद वह साक्ष्य देता है, कुटुम्ब में कुल-बैर नहीं रहा था।

वह इसका प्रत्याख्यान करता है। उसका खण्डन इस आधार पर किया जा सकेगा कि यह प्रश्न उसकी निष्पक्षता पर अधिक्षेप करने की प्रवृत्ति रखता है।

पक्षकार अपने ही से प्रश्न।	द्वारा साक्षी
----------------------------------	------------------

154. न्यायालय उस व्यक्ति को, जो साक्षी को बुलाता है, उस साक्षी से कोई ऐसे प्रश्न करने की आपते विवेकानुसार अनुज्ञा वे सकेगा, जो प्रतिपक्षी द्वारा प्रतिपरीक्षा में किए जा सकते हैं।

साक्षी की विश्वस- नीयता पर अधिक्षेप।	पर
--	----

155. किसी साक्षी की विश्वसनीयता पर प्रतिपक्षी द्वारा या न्यायालय की सम्मिति से उस पक्षकार द्वारा, जिसने उसे बुलाया है, निम्नलिखित प्रकारों से अधिक्षेप किया जा सकेगा —

(1) उन व्यक्तियों के साक्ष्य द्वारा, जो यह परिसाक्ष्य देते हैं कि साक्षी के बारे में अपने ज्ञान के आधार पर, वे उसे विश्वसनीयता का अपात्र समझते हैं,

(2) यह भावित किए जाने द्वारा कि साक्षी को रिहबत दी गई है या उसने रिहबत की प्रस्थापना प्रतिग्रहीत कर ली है या उसे अपना साक्ष्य देने के लिए कोई अन्य व्यष्टि उत्प्रेरणा मिली है,

(3) उसके साक्ष्य के किसी प्रेसे भाग से, जिसका खण्डन किया जा सकता है, असंगत पिछले कथनों को साक्षित करने द्वारा,

(4) जबकि कोई मनुष्य बलात्संग या बलात्संग के प्रयत्न के लिए अभियोजित है, तब यह दर्शित किया जा सकता है कि अभियोजनी साधारणतः व्यभिचारिणी है।

स्पष्टीकरण—कोई साक्षी जो किसी अन्य साक्षी को विश्वसनीयता के लिए अपात्र घोषित करता है, अपने से की गई मुख्यपरीक्षा में अपने विश्वास के कारणों को चाहे न बताए, किन्तु प्रतिपरीक्षा में उससे उनके कारणों को पूछा जा सकेगा, और उन उत्तरों का, जिन्हें वह देता है, खण्डन नहीं किया जा सकता, तथापि यदि वे मिथ्या हों, तो तत्पश्चात् उस पर मिथ्या साक्ष्य देने का आरोप लगाया जा सकेगा।

तृष्णात

(क) ख को बेचे गए और परिदान किए गए माल के मूल्य के लिए ख पर क वाद लाता है। ग कहता है कि उसने ख को माल का परिदान किया।

यह दर्शित करने के लिए साक्ष्य प्रस्थापित किया जाता है कि किसी पूर्व अवसर पर उसने कहा था कि उसने उस माल का परिदान ख को नहीं किया था ।

यह साक्ष्य ग्राह्य है ।

(ख) ख की हत्या के लिए क पर अभ्यारोप लगाया गया है ।

ग कहता है कि ख ने मरते समय घोषित किया था कि क ने ख को वह धाव किया था, जिससे वह मर गया ।

यह दर्शित करने के लिए साक्ष्य प्रस्थापित किया जाता है कि किसी पूर्व अवसर पर ग ने कहा था कि धाव क ढारा या उसकी उपस्थिति में नहीं किया गया था ।

यह साक्ष्य ग्राह्य है ।

156. जबकि कोई साक्षी, जिसकी सम्पुष्टि करना आशयित हो, किसी सुसंगत तथ्य का साक्ष्य देता है, तब उससे ऐसी अन्य किन्हीं भी परिस्थितियों के बारे में प्रश्न किया जा सकता, जिन्हें उसने उस समय या स्थान पर, या के निकट सम्प्रेक्षित किया, जिस पर ऐसा सुसंगत तथ्य घटित हुआ, यदि न्यायालय की यह राय हो कि ऐसी परिस्थितियाँ, यदि वे साबित हो जाएँ, साक्षी के उम सुसंगत तथ्य के बारे में, जिसका वह साक्ष्य देता है, परिसाक्ष्य को सम्पुष्ट करेंगी ।

लूटात

क एक सहायपराधी किसी लूट का, जिसमें उग्नि भाग लिया था, व सान्त देता है । वह लूट से असंसक्त विभिन्न घटनाओं का वर्णन करता है जो उस स्थान को और जहाँ कि वह लूट की गई थी, जाते हुए और वहाँ से आते हुए मार्ग में घटित हुई थीं ।

इन तथ्यों का स्वतंत्र साक्ष्य स्वयं उस लूट के बारे में उसके साक्ष्य को सम्पुष्ट करने के लिए दिया जा सकेगा ।

157. किसी साक्षी के परिसाक्ष्य की सम्पुष्टि करने के लिए ऐसे साक्षी द्वारा उसी तथ्य से सम्बन्धित, उस समय पर या के लगभग जब वह तथ्य घटित हुआ था, किया हुआ, या उस तथ्य का अन्वेषण करने के लिए विधि द्वारा सक्षम किसी प्राधिकारी के समक्ष किया हुआ कोई पूर्वतन कथन साबित किया जा सकेगा ।

सुसंगत तथ्य के साक्ष्य की सम्पुष्टि करने की प्रवृत्ति रखने वाले प्रश्न ग्राह्य होंगे ।

उसी तथ्य के बारे में पश्चात्यर्ती अधिसाक्ष्य की सम्पुष्टि करने के लिए साक्षी के पूर्वतन कथन साबित किए जा सकेंगे ।

158. जब कभी कोई कथन, जो धारा 32 या 33 के अधीन सुसंगत है, साबित कर दिया जाए, तब चाहे उसके खण्डन के लिए या सम्पुष्टि के लिए या जिसके द्वारा वह दिया गया था उस व्यक्ति की विश्वासीयता को अधिक्षिप्त या पूष्ट करने के लिए वे सभी बातें साबित की जा सकेंगी, जो यदि वह व्यक्ति साक्षी के रूप में बुलाया गया होता और उसने प्रतिपरीक्षा में सुझाई हुई बात की सत्यता का प्रत्याख्यान किया होता, तो साबित की जा सकतीं ।

साबित कथन के बारे में, जो कथन धारा 32 या 33 के अधीन सुसंगत है, कोन सी बातें साबित की जा सकेंगी ।

स्मृति ताजी करना ।

159. कोई साक्षी जब कि वह परीक्षा के अधीन है, किसी ऐसे लेख को देख करके, जो कि स्वयं उसने उस संव्यवहार के समय जिसके सम्बन्ध में उससे प्रश्न किया जा रहा है, या इतने शीघ्र पश्चात् बनाया हो कि न्यायालय इसे सम्भाष्य समझता हो कि वह संव्यवहार उस समय उसकी स्मृति में ताजा था, अपनी स्मृति को ताजा कर सकेगा ।

साक्षी उपर्युक्त प्रकार के किसी ऐसे लेख को भी देख सकेगा जो किसी अन्य व्यक्ति द्वारा तैयार किया गया हो और उस साक्षी द्वारा उपर्युक्त समय के भीतर पढ़ा गया हो, यदि वह उस लेख का, उस समय जबकि उसने उसे पढ़ा था, सही होना जानता था ।

साक्षी अपनी स्मृति ताजी करने के लिए दस्तावेज की प्रतिलिपि का उपयोग कब कर सकेगा ।

धारा 159 में वर्णित दस्तावेज में कथित तथ्यों के लिए परिस्थिति अधिकारी का

जब कभी कोई साक्षी अपनी स्मृति किसी दस्तावेज को देखने से ताजी कर सकता है, तब वह न्यायालय की अनुशा से, ऐसी दस्तावेज की प्रतिलिपि को देख सकेगा ;

परन्तु यह तब जबकि न्यायालय का समाधान हो गया हो कि मूल को पेश न करने के लिए पर्याप्त कारण है ।

विशेषज्ञ अपनी स्मृति वृत्तिक पुस्तकों को देख कर ताजी कर सकेगा ।

160. कोई साक्षी किसी ऐसी दस्तावेज में, जैसी धारा 159 में वर्णित है, वर्णित तथ्यों का भी, चाहे उसे स्वयं उन तथ्यों का विनिर्दिष्ट स्मरण नहीं हो, परिस्थिति दे सकेगा, यदि उसे यकीन है कि वे तथ्य उस दस्तावेज में ठीक-ठीक अभिलिखित थे ।

बृष्टीत

कोई लेखाकार कारबाह के अनुक्रम में नियमित रूप से रखी जाने वाली बहिर्भौमि में उसके द्वारा अभिलिखित तथ्यों का परिस्थिति दे सकेगा, यदि वह जानता हो कि बहिर्भौमि ठीक-ठीक रखी गई थीं, यद्यपि वह प्रविष्ट किए गए विशिष्ट संव्यवहारों को भूल गया हो ।

स्मृति ताजी करने के लिए प्रयुक्त लेख के बारे में प्रतिपक्षी का अधिकार ।

दस्तावेजों का पेश किया जाना ।

161. पूर्ववर्ती अन्तिम दो धाराओं के उपबन्धों के अधीन देखा गया कोई लेख पेश करना और प्रतिपक्षी को दिखाना होगा, यदि वह उसकी अपेक्षा करे । ऐसा पक्षकार, यदि वह चाहे, उस साक्षी से उसके बारे में प्रतिपरीक्षा कर सकेगा ।

162. किसी दस्तावेज को पेश करने के लिए समनित साक्षी, यदि वह उसके क्रमज्ञ में और शाक्तव्याधीन हो, ऐसे किसी आक्षेप के होने पर भी, जो उसे पेश करने या उसकी ग्राह्यता के बारे में हो, उसे न्यायालय में लाएगा । ऐसे किसी आक्षेप की विधिमान्यता न्यायालय द्वारा विनियित की जाएगी ।

न्यायालय, यदि वह ठीक समझे, उस दस्तावेज का, यदि वह राज्य की बातों से सम्बन्धित न हो, निरीक्षण कर सकेगा, या अपने को उसकी ग्राह्यता अवधारित करने के योग्य बनाने के लिए अन्य साक्ष्य ले सकेगा ।

दस्तावेजों का अनुवाद ।

यदि ऐसे प्रयोजन के लिए किसी दस्तावेज का अनुवाद कराना आवश्यक हो तो न्यायालय, यदि वह ठीक समझे, अनुवादक को निदेश दे सकेगा कि वह उसकी अन्तर्वस्तु को गुप्त रखे, सिवाय जब कि दस्तावेज को साक्ष्य में

1860 का 45 दिया जाना हो; तथा यदि अनुवादक ऐसे निदेश की अवज्ञा करे, तो यह धारित किया जाएगा कि उसने भारतीय दण्ड संहिता की धारा 166 के अधीन अपराध किया है।

163. जब कि कोई पक्षकार किसी दस्तावेज को, जिसे पेश करने की उसने दूसरे पक्षकार को सूचना दी है, मांगता है और ऐसी दस्तावेज पेश की जाती है और उम पक्षकार द्वारा, जिग्ने उमके पेश करने की मांग की थी, निरीक्षित हो जाती है, तब यदि उसे पेश करने वाला पक्षकार उससे ऐसा करने की अपेक्षा करता है, तो वह उसे साक्ष्य के रूप में देने के लिए आवश्य होगा।

164. जबकि कोई पक्षकार ऐसी किसी दस्तावेज को पेश करने से इन्कार कर देता है, जिसे पेश करने को उसे सूचना मिल चुकी है, तब वह तत्पञ्चात् उम दस्तावेज को दूसरे पक्षकार की सम्मति के या न्यायालय के आदेश के बिना साक्ष्य के रूप में उपयोग में नहीं ला सकेगा।

बृष्टांत

ख पर किसी करार के आधार पर ख वाद लाता है और वह ख को उसे पेश करने की सूचना देता है। विचारण में वह उम दस्तावेज की मांग करता है और ख उसे पेश करने से इन्कार करता है। वह उमकी अन्तर्वंस्तु का द्वितीयिक साक्ष्य देता है। वह द्वारा दिए हुए द्वितीयिक साक्ष्य का खण्डन करने के लिए या यह दर्शित करने के लिए कि वह करार स्थापित नहीं है, ख दस्तावेज ही को पेश करना चाहता है। वह ऐसा नहीं कर सकता।

165. न्यायाधीश सुसंगत तथ्यों का पता चलाने के लिए या उनका उचित सबूत अभिप्राप्त करने के लिए, किसी भी रूप में किसी भी समय किसी भी साक्षी या पक्षकारों से किसी भी सुसंगत या विसंगत तथ्य के बारे में कोई भी प्रश्न, जो वह चाहे, पूछ सकेगा; तथा किसी भी दस्तावेज या चीज को पेश करने का आदेश दे सकेगा; और न तो पक्षकार और न उनके अभिकर्ता हक्कदार होंगे कि वे किसी भी ऐसे प्रश्न या आदेश के प्रति कोई भी आक्षेप करें, न ऐसे किसी भी प्रश्न के प्रत्युत्तर में दिए गए किमी भी उत्तर पर किसी भी साक्षी की न्यायालय की इजाजत के बिना प्रतिपरीक्षा करने के हक्कदार होंगे;

परन्तु निर्णय को उन तथ्यों पर, जो इस अधिनियम द्वारा सुसंगत घोषित किए गए हैं और जो सम्यक रूप से साबित किए गए हैं, आधारित होना होगा;

परन्तु यह भी कि न तो यह धारा न्यायाधीश को किसी साक्षी को किसी ऐसे प्रश्न का उत्तर देने के लिए या किसी ऐसी दस्तावेज को पेश करने को विवश करने के लिए प्राधिकृत करेगी, जिग्ना उत्तर देने से या जिसे पेश करने से, यदि प्रतिपक्षी द्वारा वह प्रश्न पूछा गया होता या वह दस्तावेज मंगाई गई होती, तो ऐसा साक्षी दोनों धाराओं को सम्मिलित करने हुए धारा 121 से धारा 131 पर्यन्त धाराओं के अधीन इन्कार करने का हक्कदार होता; और न न्यायाधीश कोई ऐसा प्रश्न पूछेगा जिसका पूछना किसी अन्य व्यक्ति के लिए धारा 148 या धारा 149 के अधीन अनुचित होता; और न वह एतस्मिन्पूर्व अपवादित दशाओं के सिवाय किसी भी दस्तावेज के प्राथमिक साक्ष्य का दिया जाना अभिमुक्त करेगा।

मंगाई गई और सूचना पर पेश की गई दस्तावेज का साक्ष्य के रूप में दिया जाना।

मूचना पाने पर जिस दस्तावेज के पेश करने से इन्कार कर दिया गया है उसको साक्ष्य के रूप में उपयोग में लाना।

प्रश्न करने या पेशकरण का आदेश देने की न्यायालय की शक्ति।

जूरी या असेसरों
की प्रश्न करने
की शक्ति ।

१६६. जूरी द्वारा या असेनरों की सहायता से विचारित मामलों में जूरी
या असेनर मालियों से कोई भी ऐसे प्रश्न न्यायाधीश के माध्यम से या इजाजत
से कर सकेंगे, जिन्हें न्यायाधीश स्वयं कर सकता हो और जिन्हें वह उचित
समझे ।

अध्याय ११

साक्ष्य के अनुचित ग्रहण और अग्रहण के विषय में

साक्ष्य के अनुचित
ग्रहण या अग्रहण
के लिए नवीन
विचारण नहीं
होगा ।

१६७. साक्ष्य का अनुचित ग्रहण या अग्रहण स्वयं विचारण के लिए या किसी विनिश्चय के उलटे जाने के लिए आधार नहीं होगा,
यदि उस न्यायालय को जिसके समक्ष ऐसा आक्षेप उठाया गया है, यह प्रतीत
हो कि आक्षिप्त और ग्रहीत उस साक्ष्य के बिना भी विनिश्चय के न्यायोचित
ठहराने के लिए यथेष्ट साक्ष्य था अथवा यह कि यदि अग्रहीत साक्ष्य लिया भी
गया होता, तो उससे विनिश्चय में फेरफार न होना चाहिए था ।

अनुसूची-निरसित ।

आर. सी. एस. सरकार
सचिव, विधि मंत्रालय, भारत सरकार